महाकवि अकबर
और
उनका उर्दू काव्य

प्रकाशक—
ज्ञानप्रकाश मन्दिर, माछरा

महाकवि अकबर

और

उनका उर्दू काव्य।

लेखक—

उमराव सिंह कारुणिक बी० ए०

रचयिता 'कार्नेगी' इत्यादि।
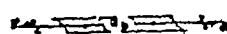
भूमिका लेखक—

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह

प्रकाशक—

चौधरी शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य

(ज्ञानप्रकाश मन्दिर)

पोस्ट माछरा, जिला मेरठ
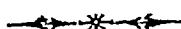
द्वितीय संस्करण] सन् १९२४ ईस्वी. [मूल्य १)

विश्वम्भरसहाय प्रेमी के प्रबन्ध से साहित्य मुद्रणालय, मेरठ में मुद्रित।

विषय-सूची ।

ज्ञान प्रकाश ग्रन्थमाला

द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

कार्नेगी और उसके विचार ।।=)
टाल्सटाय की आत्म कहानी ।।=)
मुगलों के अन्तिम दिन ।।=)
उपयोगिता वाद १)
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य १)
अनारकली =)।।
आधुनिक साम्राज्य (छप रही है)

व्यवस्थापक—

ज्ञान प्रकाश मन्दिर,
पो० माछरा, जि० मेरठ ।

द्वितीय संस्करण की भूमिका ।

बड़े हर्ष का विषय है कि हिन्दी प्रेमियों ने महाकवि अकबर के प्रथम संस्करण को अपनाकर लेखक को संशोधित तथा परिवर्द्धित रूप में दूसरा संस्करण हिन्दी पाठकों की सेवा में उपस्थित करने का अवसर दिया । पहिला संस्करण एक वर्ष के अन्दर ही अन्दर हाथों हाथ निकल गया । इस से पता चलता है कि अकबर की कविता को हिन्दी पाठक भी पसन्द करते हैं ।

इस पुस्तक के प्रकाशक तथा हिन्दी के प्रसिद्ध प्रेमी श्रीयुत चौधरी शिवनाथ सिंह जी शाण्डिल्य के आग्रह से सुविख्यात देश-भक्त श्रीयुत राजा महेन्द्र प्रताप सिंह जी ने भी अकबर की कविता पर अपने विचार प्रगट करने की कृपा की है । इसके लिये राजा साहब को जितना धन्यवाद दिया जाय कम है ।

इस बार पृष्ठ संख्या पहिले से दूनी के लगभग करदी गई है । पहिले संस्करण में सोलह पृष्ठ का जीवन-चरित्र था । इस संस्करण में ४२ पृष्ठ का जीवन-चरित्र है । अकबर के एक से एक बढ़ कर अनेक नये पद्यों का भी समावेश कर दिया गया है । पुस्तक के आरम्भ में हिन्दी पाठकों की सुविधा के विचार से 'उर्दू कविता', पर एक लेख और बढ़ा दिया गया है ।

> मर्हा मिस्वे जुलेखा मुश्तरी था जिन मजामीं का ।
> तमाशा है वो यूसुफ बनके खुद बाजार में आये ॥

मेरठ
१-६-२५

उमराव सिंह कारुणिक बी० ए०,
सम्पादक—'ललिता' ।

प्रथम संस्करण की भूमिका

प्रयाग निवासी अकबर, जिनका स्वर्गवास हुवे अभी तीन मास हुवे हैं, उर्दू कविता की जान थे। आप गम्भीर से गम्भीर बात को भी बहुत ही थोड़े शब्दों में बड़ी खूबसूरती के साथ कह देते थे। आप के शेरों के विषय में भी हिन्दी के महाकवि बिहारी के दोहों के समान यह कहा जा सकता है:—

'देखत में छोटे लगें घाव करें गम्भीर।'

उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् हाली कह गये थे—"शायरी मर गई जिन्दा न अब होगी यारो," किन्तु अकबर ने हाली साहब के इस कथन को असत्य प्रमाणित कर दिया था। उर्दू शायरी में एक नया ही जीवन फूंक दिया था। गुलो बुलबुल तथा ज़ुल्फ़ो इश्क़ को बीसवीं सदी की 'अप टु डेट' (Up-to-date) पौशाक पहिना दी थी।

उर्दू साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले इस महाकवि से हिन्दी पाठकों का परिचय कराने के लिये ही यह पुस्तक लिखी गई है। अकबर की कविताओं का संग्रह उर्दू में 'कुल्लियाते अकबर इलाहाबादी' के नाम से तीन भागों में प्रकाशित हुवा है। इस पुस्तक में तीनों भागों में से चुनकर भिन्न भिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाले शेर दिये हैं। इन शेरों को देखने से पाठकों को 'अकबर' के कल्पना-चातुर्य का बहुत कुछ ज्ञान हो जायगा। किन्तु अकबर का पूरा महत्त्व तो उसके सारे शेरों को देखने से ही मालूम हो सकता है, क्योंकि आपका प्रत्येक शेर एक नई अदा लिये हुवे है। लेखक को इस संग्रह के लिये शेर चुनने में बड़ी कठिनता हुई है क्योंकि प्रत्येक शेर को देखकर

दिले शैदा मचलता था कि हम तो ये ही लेंगे।

अकबर का कहने का ढंग बहुत साफ़ है। आपके कलाम में ऐसे शब्द बहुत कम आये हैं जिन को हिन्दी पाठक न समझ सकें। इस के अतिरिक्त इस संग्रह में ऐसे शेर जान बूझकर नहीं लिये हैं जिन में विशेष कठिन शब्दो का प्रयोग हुवा है। फिर भी पाठकों की सुगमता के लिये प्रत्येक शेर के नीचे कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया है।

यदि पाठकों ने इस पुस्तक को अपनाया तो शीघ्र ही हिन्दी प्रेमियो की सेवा में अकबर का सचित्र तथा विस्तृत जीवन-चरित्र उपस्थित करने का विचार है।

लेखक हिन्दी के उत्साही प्रेमी चौधरी शिवनाथ सिंह जी शाण्डिल्य का बहुत ही कृतज्ञ है जिनकी उदारता के कारण इस छोटी सी पुस्तक को हिन्दी पाठकों के सन्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है।

मेरठ, १-१-२२। — उमरावसिंह कारुणिक बी० ए०, सम्पादक—'ललिता'।

राजा महेन्द्रप्रताप जी

द्वारा लिखित

भूमिका

अकबर उर्दू के महाकवि थे। वह हिन्दुस्तान के रत्न थे। उनकी कविता मोहनी और निराली है। उनके शब्दों में विशेष आकर्षण शक्ति है। उनकी कविता की अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। जो उनकी कविता को पढ़ेंगे वह आप ही उनके कलाम के कमाल पर आशिक़ हो जायेंगे। मैं यहां अधिक लम्बी चौड़ी भूमिका न बांध कर प्रिय पाठकों से 'अकबर' की वाटिका में भ्रमण करने के लिये आग्रह करता हूं। आइये हम और आप बुलबुल बनें और कविता के पुष्पों पर जान दें और जान दे दे कर आनन्दित हों।

पर हा! एक बात कहे बिना नहीं रह सकता। सर्व साधारण के विचारानुसार अकबर मुसलमान थे और इस लिये उनकी कविता को हिन्दी में छापकर विशेषतः हिन्दू भाइयों के कर कमलों में भेंट करना न केवल सुन्दर, मोहनी कविता की क़द्र करना है वरन् देश की जटिल राजनैतिक समस्या को सुलझाने में भी योग देना है। इस लिये हम सभी को, जो तैंतीस करोड़ हिन्दुस्तानियों का भला चाहते हैं, इस कार्य के लिये इस पुस्तक के प्रकाशक श्रीमान् चौधरी शिवनाथसिंह जी का अनुग्रहीत होना चाहिये कि उन्होंने इस पुस्तक को छपाने का यत्न किया।

लगे हाथों इस विषय पर मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि मेरे विचारानुसार एक पूर्ण कवि अथवा एक ज्ञानी पुरुष साधारण जाति या धर्म इत्यादि के बन्धनों से परे होता है। तब ही तो कवि लोग बहुत सी ऐसी बातें कह जाते हैं जो साधारण विचारों के विरुद्ध होती हैं। वे इस प्रकार—किसी हद तक डरते डरते—सर्व साधारण के विचारों को उदार कर देते हैं—उनकी आंखे खोल देते हैं। इसका उदाहरण 'ग़ालिब' का यह शेर है—

> हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन।
> दिल के खुश रखने को 'ग़ालिब' ये खयाल अच्छा है॥

हम अच्छे कवियों के दिलदादे हैं। परन्तु यह बता देना आवश्यक है कि प्रत्येक अच्छा कवि भी ज्ञानी नही होता। उसे कभी २ ज्ञान का प्रकाश दीखता है। साधारणत कवि गण अपनी इच्छाओं के प्रभाव मे बहने को आनन्द मान बैठते हैं। इस लिये कवि आदर्श पुरुष बहुत कम होते हैं। वह प्राकृतिक वाटिका का दृश्य दिखाते हैं। विद्वान् को चाहिये कि फूलों से लाभ उठाये और काटों से बचे। जो मनुष्य अथवा जन समूह इस बात का विचार नहीं रखता वह कविता से लाभ के बजाय हानि उठाता है। बस, इतना ध्यान रखिये और फिर कविता के कुञ्जों में रासलीला कीजिये।

बाग़ बाबर,
काबुल।
१८-६-१९२४।

—महेन्द्र प्रताप

उर्दू कविता।

प्रत्येक देश की कविता उस देश के भूगोल तथा इतिहास का चित्र तथा वहां के रीति रस्म तथा निवासियों के स्वभाव का प्रतिबिम्ब होती है। अतएव किसी भाषा की कविता को भली भांति समझने के लिये उस देश का इतिहास तथा वहां के रस्म रिवाज जानना अत्यन्त आवश्यक है। महाकवि ग़ालिब का एक शेर है:—

क्या रहूँ ग़ुरबत में ख़ुश जब हो हवादिस का ये हाल।
नामा लाता है वतन से नामावर अक्सर खुला॥

शेर साफ़ है किन्तु अर्थ समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि फ़ारिस में यह दस्तूर है कि बुरी ख़बर का ख़त खुला भेजा जाता है।

यद्यपि उर्दू ब्रज-भाषा से निकली है तथा भारतवर्ष ही की गोद में पली है, किन्तु फिर भी उर्दू के कवियों ने फ़ारस तथा तुरकिस्तान के कवियों का अनुसरण किया है। उपरोक्त देशों के विचारों तथा उपमाओं ने उर्दू कविता में इतना ज़ोर पकड़ा है कि उन से समता रखने वाली भारतीय उपमाओं को बिलकुल भुला दिया गया है। हां 'सौदा' तथा 'इन्शा' ने कहीं कहीं भारतीय उपमाओं का प्रयोग अवश्य किया है। यद्यपि भारतवर्ष में बुलबुल नहीं होता है किन्तु उर्दू कवि के कान में बुलबुल ही का राग गूंजता

है। कोयल की कू कू तथा पपीहे की पी पी उसे मस्त नहीं कर सकती। उर्दू कविता में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो ख़ास फ़ारिस तथा तुर्किस्तान से सम्बन्ध रखती हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से विचारों में इन देशों में प्रचलित कथाओं के सङ्केत भी आ गये हैं। उदाहरणतः शमशाद, नरगिस, सम्बुल, बनफ़शा तथा सरू की उपमायें; लैला, शीरीं तथा शमअ़ का सौन्दर्य, मजनूं, फ़रहाद, बुलबुल तथा परवाने का प्रेम; मानी तथा बहज़ाद की चित्रकारी तथा रुस्तम की बहादुरी। अस्तु। उर्दू कविता का पूर्ण रूप से रसास्वादन करने के लिये इस प्रकार की बातों का जानना अत्यावश्यक है। इन सब बातों की व्याख्या यहां नहीं की जा सकती। ऐसा करने से एक छोटी सी पुस्तक अलग ही तय्यार हो जाय। अतएव इस छोटे से लेख में हम हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिये उर्दू कविता में प्रयुक्त दो तीन विशेष शब्दों ही पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

शराब।

प्रायः प्रत्येक फ़ारसी के कवि ने शराब की प्रशंसा की है। उर्दू कविता भी शराब की प्रशंसा में फ़ारसी से पीछे नहीं है।* किन्तु इस से यह न समझना चाहिये कि ये सब कवि शराबी थे या शराब को बहुत अच्छा समझते थे। इनमें बहुत से कवि बड़े

---

* मस्ती वो बे खुदी में आसूदगी बहुत थी।
पाया न चैन हमने तरके शराब करके॥
—मीर।

लुत्फ़े मय क्या कहूँ तुझ से ज़ाहिद।
हाय कमबख़्त तूने पी ही नहीं॥

सदाचारी तथा ईश्वर-भक्त हुवे हैं। उदाहरणतः फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि 'हाफ़िज़', जिनकी कविता आदि से अन्त तक शराब की प्रशंसा में भरी पड़ी है बड़े महात्मा थे। सुलतान टीपू के पुस्तकालय के सूची-पत्र के सम्पादक चार्ल्स स्टुअर्ट ने लिखा है:— "हाफ़िज़ परहेज़गारी में मशहूर है। उसका सारा समय ईश्वर पूजन में जाता था। ईश्वर-भक्त इसके काव्य को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। इसके काव्य को क़ुरान के अतिरिक्त शेष सब पुस्तकों से ऊँचा स्थान दिया जाता है।"

बात यह है कि फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के कवियों ने शराब को प्रेम से उपमा दी है। शराब पीने पर आदमी के होश हवास ठीक नहीं रहते। प्रेम में ऐसा ही होता है। प्रत्येक समय प्रेम-पात्र का चित्र आँखों के सन्मुख रहता है। उसके अतिरिक्त और किसी बात का ध्यान ही नहीं आता। कोई उपदेशक या मित्र कितना ही क्यों न समझाय कुछ समझ ही में नहीं आता। उपदेशक के उत्तर में प्रेमोन्मत्त यह कहता ही है:—

मना भी करते हैं इश्क़ नासहे मुशफ़िक़।
देखा है कि उस माहलक़ा को नहीं देखा॥

प्रेम तथा शराब के प्रभाव में इतनी अधिक समता होने के कारण शराब प्रेम का ऐसा उपमान हो गया है कि जहाँ कहीं शराब की प्रशंसा है वहाँ शराब से प्रेम का मतलब है। केवल इतना ही नहीं वरन् शराब-सम्बन्धी अन्य पदार्थ भी प्रेम ही के द्योतक हैं। उदाहरणतः—साक़ी (शराब पिलाने वाला) से माशूक़ का मतलब होता है। महा कवि ग़ालिब ने एक स्थान पर साफ़ तौर से लिखा है:—

हरचन्द हो मुशाहदए हक़ की गुफ़्तगू।
बनती नहीं है बादए साग़र के बग़ैर॥

अर्थात् चाहे ईश्वर-दर्शन ही का विषय क्यों न हो, किन्तु

फिर भी कविता में इस विषय पर लिखने के लिये शराब और प्याले का वर्णन करना ही पड़ता है।

आकाश ।

उर्दू कवियों का विचार है कि आकाश सदैव घूमता रहता है। यह किसी मनुष्य को सुखी नहीं देख सकता। हमारे सारे दुःखों का कारण आकाश ही है। इस कारण प्रत्येक उर्दू कवि ने आकाश को दो चार जली कटी बातें अवश्य सुनाई हैं:—

ये दो दिल को मंकजा मिठाता नहीं।
किसी का वस्ल इसको भाता नहीं॥

महाकवि ज़ौक़ मार्ग न मिल सकने के कारण ही आकाश की सीमा से बाहर निकल जाने की इच्छा पूर्ण न कर सके थे।

अहाते से फ़लक के हम तो कब के।
निकल जाते मगर रस्ता न पाया।

महशर या अन्तिम न्याय का दिन ।

मुसलमानों का विश्वास है कि एक दिन ऐसा आने वाला है कि संसार का अन्त हो जायगा। उस दिन सूर्य पूर्व के स्थान में पश्चिम से निकलेगा। संसार के आरम्भ से जितने मनुष्य मरे हैं सब ईश्वर के सन्मुख उपस्थित होंगे। फ़रिश्ते (देवदूत) सब मनुष्यों के अच्छे बुरे कामों की सूची ईश्वर के सामने रक्खेंगे। ईश्वर सब मनुष्यों का न्याय करेगा। जिसके काम अच्छे होंगे उनको बहिश्त (स्वर्ग) भेजेगा जहां पर शराब की नदियें तथा अप्सरायें उनको मिलेंगी। जिन मनुष्यों के कर्म अच्छे न होंगे उनको दोज़ख़ (नर्क) में डाला जायगा जहां बड़ी

तेज़ आग जलती है। इस दिन को मुसलमान लोग रोज़े क़यामत या रोज़े महशर अर्थात् अन्तिम न्याय का दिन कहते हैं। मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर बड़ा दयालु है। वह बहुत से पापियों को क्षमा भी कर देगा। इसके अतिरिक्त उन लोगों के विचारानुसार जो मनुष्य तोबा (पश्चात्ताप) कर लेते हैं उनके अपराध भी क्षमा हो जाते हैं। उर्दू कविता में इन विचारों का बहुत उल्लेख है। प्राय. कवियों ने रोज़े क़यामत की दुहाई दी है:—

> क़रीब है यार रोज़े महशर छिपेगा कुश्तों का ख़ून क्यूकर।
> जो चुप रहेगी ज़बाने ख़ञ्जर लहू पुकारेगा आस्तीं का॥
>
> —दाग़।

> है ये ज़ुल्म चन्द रोज़ा है एक दिन इन्तक़ाम का भी।
> अमीर हम्माम गर्म करलें ग़रीब का झोंपड़ा जलाकर॥
>
> —अमीर।

उर्दू कवियों को यह आशा रहती है कि महशर के दिन तो अवश्य ही उनका और उनके माशूक़ का इन्साफ़ हो जायगा। यही सोच कर अपने मन को समझाते रहते हैं। महाकवि ग़ालिब को सन्देह हो गया था कि स्यात् ऐसा न हो। देखिये कैसा खेद प्रगट किया है :—

> वाये गर मेरा तेरा इन्साफ महशर में न हो।
> अब तलक तो ये तवक्के है कि वा हो जायगा॥

शम्स लखनवी का भी इस विषय का एक बहुत अच्छा शेर है जिसकी शोख़ी तथा सादगी की प्रशंसा नहीं हो सकती:—

> बरोज़े हश्र शहीदों को है बड़ा दावा।
> मज़ा तो है जो न साबित हो जुर्म क़ातिल पर॥

बहुत से कवियों ने ईश्वर की दयालुता तथा क्षमा पर भरोसा करके परलोक-चिन्ता को पास नहीं फटकने दिया है .—

वो करीम क्या नहीं है वो रहीम क्या नहीं है।
कभी 'दाग़' भूलकर भी न ग़मे निजात करना ॥

महाकवि आतश तो क्षमा की आशा न रखने वालों को काफ़िर ही बतला गये हैं .—

बख्शे जायेंगे गुनहगारे मौहब्बत यय जाहिद।
रहमते अल्लाह से काफ़िर है जो मायूस है ॥

'कारुणिक'
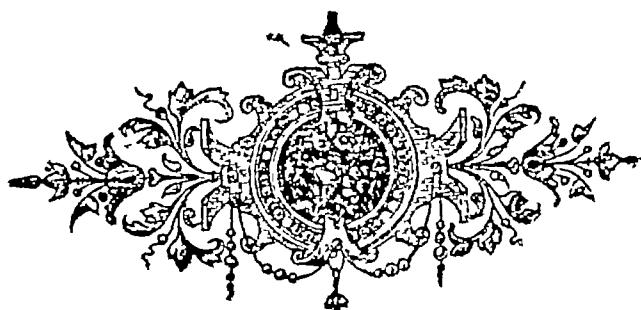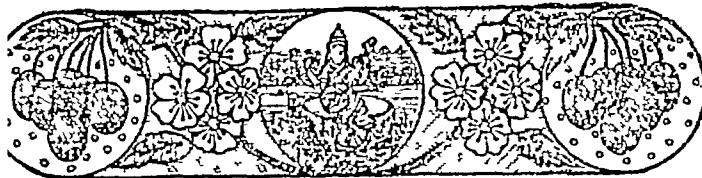
महा कवि अकबर ।

हैं और भी दुनिया में सखुनवर बहुत अच्छे ।
कहते हैं कि ग़ालिब का है अन्दाजे बया और ॥

—ग़ालिब ।

यों तो उर्दू में ग़ालिब आदि अनेक एक से एक बढ़कर कवि हुवे हैं, किन्तु प्रयाग निवासी स्वर्गीय अकबर भी अपने ढंग के अद्वितीय तथा अनुपम ही कवि थे। आपने उर्दू कविता को गुलो-बुलबुल तथा ज़ुल्फ़ो के फन्दे से निकाल कर समय के अनुसार उस में एक प्रकार का नया जीवन डाल दिया था। अकबर केवल कवि ही नहीं थे वरन् बड़े तत्त्ववेत्ता तथा धार्मिक पुरुष भी थे। आपके प्रत्येक शेर से सजीवता के साथ २ सुधार तथा धार्मिक विचार टपकता है। जिस रङ्ग मे आपने कविता की है, उस रंग में उर्दू तो क्या अन्य किसी भी देशीय भाषा के किसी कवि ने नही की। आपने एक नई ही शैली की कविता की और स्यात् उस शैली को अपने ही साथ ले भी गये हैं। जो काम अच्छे २ वक्ताओं की लम्बी चौड़ी वक्तृताएं नही कर सकती, वह काम आपका शेर कर सकता है। सच तो यह है कि आपने गागर मे सागर बन्द कर दिया है। आपको अपने समय का उर्दू का सब से बड़ा कवि कहना अत्युक्ति न होगी।

आपका जन्म सन् १८४६ ई० में प्रयाग से दस बारह कोस की दूरी पर बारा नामक क़स्बे में हुआ था। आप सय्यद रिज़वी

वंश में से थे। आपके पिता सय्यद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन बड़े ही धार्मिक पुरुष थे। आप पर भी अपने पिता के धार्मिक जीवन का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

आप की आरम्भिक शिक्षा बहुत ही साधारण हुई थी। आपके पिता का विचार था कि दो बातों की शिक्षा ही आवश्यक है। एक तो व्याकरण की तथा दूसरे गणित शास्त्र की। इस कारण आरम्भ में आपको साधारण गणित सिखाया गया था तथा कुछ अरबी, फ़ारसी की पुस्तकें तथा व्याकरण बताया गया था। उस समय किसी को ध्यान भी नहीं हो सकता था कि यह लड़का एक दिन उर्दू का महा कवि हो जायगा। किन्तु कविता पुस्तकों के अध्ययन से नहीं आती। अंग्रेज़ी की कहावत ठीक ही है:—

Poets are born not made.

अर्थात्—कवि उत्पन्न होते हैं, बनाये नहीं जाते।

चौदह वर्ष की अवस्था में आपको अंग्रेजी का भी शौक़ हुआ। घर पर ही आपने अंग्रेज़ी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। यह वह समय था जब अरबी, फ़ारसी जानने वाले राह चलते मिलते थे, किन्तु अंग्रेज़ी जानने वाला कठिनता से कहीं दिखाई पडता था। सन् १८६७ ई० में आपने वकालत की परीक्षा पास करली। उन दिनों वकालत की परीक्षा में बैठने के लिये एन्ट्रेंस आदि किसी अन्य परीक्षा पास करने की क़ैद नहीं थी। परीक्षा पास करने के दो वर्ष बाद आप नायब तहसीलदार होगये। इसके एक वर्ष पश्चात् ही आप हाईकोर्ट के मिस्ल पढ़नेवाले नियत कर दिये गये। सन् १८८१ ई० में आपको मुन्सफ़ी का पद मिल गया। आप अपने कार्य को बड़ी योग्यता तथा ईमान्दारी से करते थे। इस कारण आपकी ख्याति सरकार तक पहुंच गई थी। आप

सन् १८६२ ई० में आप अदालत ख़फ़ीफ़ा के जज नियत कर दिये गये। सन् १८६४ ई० में आपने डिस्ट्रिक्ट सैशन जज का भी काम किया। आप हाई कोर्ट के जज भी होने वाले थे। किन्तु १६०२ ई० में आप 'रिटायर' होगये और पेन्शन लेली। आपका कहना था:—

जज बना कर अच्छे अच्छों का लुभा लेते हैं दिल।
हैं निहायत खुशनुमा दो जीम उनके हाथ मे॥

किन्तु आप पहिले ही सचेत थे और इस जाल में नहीं फंसे। पेन्शन लेने के बाद आप प्रयाग में अपनी 'इशरत मञ्जिल' नामक कोठी में रहने लगे तथा मृत्यु-पर्यन्त ईश्वराराधना तथा कविता देवी की उपासना मे लगे रहे। ६ सितम्बर सन् १६२१ ई० को ७५ वर्ष की अवस्था में उर्दू साहित्य का यह सूर्य सदैव के लिये अस्त होगया।

कविता

आरम्भ में अकबर प्राचीन शैली के अनुसार 'ग़ज़ल' ही लिखा करते थे। किन्तु अकबर की प्रतिभा 'ग़ज़ल' की चारदीवारी ही में बन्द नहीं रह सकी और सन् १८७६ ई० में जब लखनऊ से अवध-पञ्च' नामक पत्र प्रकाशित होना आरम्भ हुआ तो आपने भी अपना रङ्ग बदल दिया। आप अवध-पंच के लिये प्रहसनात्मक गद्य तथा पद्य लेख लिखने लगे। अकबर ने अपनी एक नई शैली निकाली और उसमें प्रशंसनीय सफलता भी प्राप्त की। यद्यपि अकबर ने प्राचीन शैली के अनुसार ग़ज़लें भी लिखी हैं—और ख़ूब लिखी हैं—किन्तु फिर भी उनका पुरानी शैली का काव्य उन के नई शैली के काव्य के सामने बिल्कुल फीका है।

अकबर ने प्रेम, धर्म, समाज-सुधार, राजनीति आदि सब ही विषयों पर कविता की है। इस कारण प्रत्येक रुचि का मनुष्य आपके काव्य में अपने मनोरञ्जन की सामग्री पा सकता है।

१-हास्य तथा जिन्दा दिली।

अकबर बड़े ही जिन्दा दिल मनुष्य थे। रोतों को हंसा देना और मुर्झाये हुवे दिलों को खिला देना इनके बायें हाथ का काम था। आप इस बात के मानने वाले थेः—

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुरदा दिल खाक जिया करते हैं॥

एक बार आप अपने लड़के इशरत अली से, जो सीतापुर में डिप्टी कलक्टर थे, मिलने गये थे। अकबर सादा कपड़े पहना करते थे। इस कारण डिप्टी साहब के मित्र आपको कोई साधारण मनुष्य समझ कर आपकी ओर से उदासीन से रहे। उन मित्रों में एक अकबर का पहिचानने वाला भी था। उसने चुपके से अपने साथियों को संकेत किया कि आप डिप्टी साहब के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर तो डिप्टी साहब के मित्र आप के साथ बड़े आदर-सत्कार के साथ बातें करने लगे। अकबर सब बात ताड़ गये थे। किन्तु चुप रहे और कुछ न बोले। थोड़ी देर बाद बातो २ में आपने कहा—"मियां! और भी कुछ सुना? सुना है योरप में अल्लाह मियां आये थे"। सब लोग अकबर की ओर आवाक् दृष्टि से देखने लगे। आपने फिर कहा—"हां! मुझे बहुत ही विश्वसनीय सूत्र से पता चला है। और एक बात और मजे की हुई। योरप में किसी ने अल्लाह मियां की बात तक न पूछी। इतने मे किसी आदमी ने बतलाया कि अल्लाह मियां खुदावन्द यसू मसीह के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर अल्लाह मियां की बड़ी आवभगत हुई।"

अकबर ने उपरोक्त बातें बड़े गम्भीर भाव से इस प्रकार कहीं मानों किसी विश्वसनीय समाचार-पत्र का समाचार-कालम

पढ़ रहे हों। किन्तु डिप्टी साहब के मित्र समझ गये कि सकेत हमारी ही ओर है और लज्जा के कारण सब की नीची निगाहें हो गईं।

एक और घटना सुनिये। प्रयाग की प्रदर्शनी में भारतवर्ष मे पहले पहल वायुयान आये थे। जिस समय आकाश में वायुयान उड़ने का शब्द हुआ तो अपने मित्र श्रीयुत ख्वाजे हसन निजामी को साथ लेकर आप छतपर गये और वायुयान को उड़ता देख कर बोले—"तुम समझे भी अङ्गरेज लोग क्या कहते हैं?" ख्वाजा साहब ने जवाब दिया कि मैं कुछ नहीं समझा। आपने कहा—"अङ्गरेज लोग कहते हैं 'अब हम उड़ते हैं'। भई हम कब मना करते हैं। खुशी से उड़ो।"

इस प्रकार अकबर का सारा जीवन लतीफ़ों से भरा पड़ा है। यदि सब लतीफों का वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक अलग तैयार हो जाय। अकबर की कविता की सर्व-प्रियता का रहस्य ही यह है कि आपकी कविता के शब्द २ से हास्य रस टपकता है।

अलीगढ़ में मुसलमानो मे सब से पहिले अब्दुल गफूर खां नामक एक रईस ने करज़न फेशन रक्खा था। अब तो करज़न फ़ैशन रखना साधारण सी बात हो गई है किन्तु उस समय नई बात होने के कारण लोगों को उङ्गलियां उठती थीं। फिर अकबर तो धार्मिक मुसलमान थे। इन्हें डाढ़ी का मुंडवाना किस प्रकार पसन्द आता। कहने से चूकने वाले न थे। महाकवि ग़ालिब के अनुसार 'सर जाये या रहे न रहें पर कहे बगैर'। एक दिन जब अब्दुल ग़फूर ख़ां अपने मित्रों में बैठे थे तो आप बोले:—

देख अब्दुल ग़फूर खा की तरफ़।
गर्द खुश हाल इसको कहते हैं॥

चार अब्रू का या सफ़ाया है ।
फ़ारिग़-उल-बाल इसको कहते हैं ॥

'फ़ारिग़-उल-बाल' शब्द विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। उर्दू मुहावरे में फ़ारिग़-उल-बाल उस मनुष्य को कहते हैं जिसे किसी प्रकार का फ़िक्र न हो। किन्तु 'फ़ारिग़-उल-बाल' का लफ़्ज़ी तर्जुमा यह होता है कि जिसके बाल न हों।

बनारस कालिज से ओल्ड बाय मेगज़ीन निकलने पर आपने लिखा था :—

निकला ब आबोताब बनारस से ओल्ड बाय ।
अल्लाह उसको गोल्ड भी दे और पर्ल भी ॥
ख्वाहिश है अब ये बाज मुहिब्बाने क़ौम की ।
निकले किसी तरफ़ से यूँही ओल्ड गर्ल भी ॥

लार्ड मिन्टो के समय में अमीर काबुल के आने पर आपने लिखा था :—

जो सच्ची बात है कह दूँगा बे खौफ़ो खतर उसको ।
नहीं रुकने का मैं हरगिज परी टोके कि जिन टोके ॥
अनार आते जो क़ाबुल से तो पड़ते सब के हिस्से मे ।
अमीर आये तो हमको क्या मज़े हैं लार्ड मिन्टो के ॥

देखिये क़ाफ़िये ने उपरोक्त पद्य में कैसे जान डाल दी है।

एक बार संयोगवश 'अञ्जुमन तरक्क़िये उर्दू' का ज़िक्र आपके मित्रों ने छेड़ दिया। आप बोले—"ले देके एक ज़ुबान रह गई थी जिसे हम अपनी कह सकते थे। अब यह भी हमारे संभाले नहीं संभलती ! इसके लिये भी एक अञ्जमन (सभा) खड़ी

को हैं। यह सब बनावट और दिखावे की बातें हैं।" इसके बाद आपने यह शेर पढ़ा:—

हम से छिन कर हो गई बज़्मे तरक्क़ी के सपुर्द।

सच कहा मिरजा ने अब उर्दू भी 'कोरट' हो गई॥

'कोरट' का शब्द कैसा विनोद-पूर्ण है। जब कोई अपनी रियासत का प्रबन्ध करने में असमर्थ होता है या कम उम्र होता है तो उसकी रियासत का प्रबन्ध सरकार अपने हाथ में ले लेती है। इसी को रियासत का 'कोरट' हो जाना कहते हैं। इस अवसर पर 'कोरट' शब्द का प्रयोग कैसा उपयुक्त तथा शेर में जान डालने वाला है।

सन् १९२० ई० के प्रारम्भ में ख़िलाफ़त का एक डेपूटेशन विलायत गया था। इस डेपेटेशन में मौलाना मौहम्मद अली तथा इन्डिपेन्डेन्ट के भूतपूर्व सम्पादक सैयद हुसैन के साथ २ 'मारिफ़' नामक मासिक पत्र के सम्पादक मौलाना सैयद सुलैमान नद्वी भी थे। अकबर को मुसलमानी धर्म शास्त्र के एक विद्वान् का राज-नैतिक डपुटेशन में जाना कुछ पसन्द न आया। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने अपना भाव किस अनोखे ढंग से व्यक्त किया है:—

सुलैमान की बात कैसी बनी।

कि नदवी से अब हो गये लन्दनी॥

रहे बादे नोशों[1] से बेशक खिंचे।

मगर चाय वालों से गाढ़ी छनी॥

मुहम्मद अली की रिफ़ाक़त[2] में है।

ख़ुदा ग़ैर से उनको करदे ग़नी[3]॥

१. शराब पीने वालों, २. साथ, ३. कृतकार्य।

आज कल लड़कों की रुचि धार्मिक शिक्षा की ओर से हटती जाती है। यह बात सब लोग जानते हैं। किन्तु एक स्थान पर इस ख्याल में अकबर ने जो हास्य भर दिया है वह उन्हीं का हिस्सा था। आप कहते हैं:—

फरमा गये हैं ये खूब भाई घूरन।
दुनिया रोटी है और मजहब चूरन॥

जब खाना अधिक खा लिया जाता है और हज़म नहीं होता तो चूर्ण की सहायता ली जाती है। इस ही प्रकार स्वार्थपरायण लोग अपना अपना उल्लू सीधा करने के लिये धर्म की आड़ ले लेते हैं जिससे कोई उनके मार्ग में रुकावट न डाले।

यूरुप की व्यवसायिक उन्नति का चित्र भी देखिये अकबर ने कैसी विनोद-पूर्ण भाषा में खेंचा है:—

यूरुप में गो है जंग की कुव्वत[1] बढ़ी हुई।
लेकिन फ़िज़ूँ[2] है उससे तिजारत बढ़ी हुई॥
मुमकिन नहीं लगा वो सकें तोप हर जगह।
देखो मगर 'पियर्स' का है सोप हर जगह॥

सब पाठक जानते होंगे कि ख़िताब और सरकारी नौकरियों के उम्मेदवार अफसरों के पास जाकर कैसे २ घृणित कार्य करते हैं। अपने आत्म-सम्मान को बिल्कुल तिलांजलि दे देते हैं और अपने भाइयों की झूठी सच्ची बुराइयां करते हैं। ऐसे मनुष्यों को देश-घातक कहना बिल्कुल सत्य है किन्तु कटु सत्य है। नीति-कार कह गये हैं—

"सत्य वद प्रियं वद मा ब्रूयताम् सत्यमप्रियम्।"

---

१. शक्ति २. अधिक॥

इस ही कारण देखिये अकबर ने हसी में २ कैसी चोट की है:—

अक्ल ने अच्छी कही कल वाला मजलिस राय से।
झुक के मिलना चाहिये हम सबको वाइसराय से॥
शेर कैसी ही हो लेकिन क़ाफ़िये इसके हैं ख़ूब।
कौन ऐसा है जो हो मुख़्तलिफ इस राय से॥

आधुनिक सभ्यता से प्रभावान्वित होकर बहुत से युवक भोग-विलास में डूबे जा रहे हैं, और मद्यपान सीखते जा रहे हैं। ऐसे लोगों की ओर सकेत करके अकबर कहते हैं:—

फ़िक्र खाढ़ी की है न कल्गान की।
अब तो धुन है उन्हें फ़िरन्गन की॥

निम्न लिखित पद्य में अकबर ने आधुनिक जमींदारों के जीवन का सच्चा तथा सजीव चित्र जिस विनोदपूर्ण भाषा में खैंचा है वह अकबर ही का हिस्सा है—

मोहताजे दरे वक़ीलो मुख़्तार हैं आप।
सारे अमलों के नाज बरदार हैं आप॥
आवारवो मुन्तशिर[1] हैं मानिन्दे गुबार।
मालूम हुआ मुझे जमींदार हैं आप॥

जो पाठक जमींदार हैं या ज़मींदारों के जीवन से भली भांति परिचित हैं उपरोक्त उक्ति की यथार्थता तथा व्यङ्ग को भली भांति अनुभव कर सकेंगे। वास्तव में आजकल के ज़मींदारों की ऐसी ही शोचनीय दशा है। महीने में बीस दिन कचहरी की ख़ाक छाननी पड़ती है और चपरासियों तक को सलाम झुकानी पड़ती है।

१ विकल चित्त।

आज कल बेचारे लेखकों की दशा भी बड़ी हृदय-विदारक है। मौखिक प्रशंसा ही यथेष्ट पुरस्कार समझा जाता है। विशेषतया प्रकाशक तथा साधारणतया जन साधारण यह समझते हैं कि लेखक एक प्रकार के विशेष प्राणी हैं जो बिना खाये पिये ही जी सकते हैं तथा साहित्य-सेवा कर सकते हैं। देखिये अकबर इस दशा का चित्र किन शब्दों में खैंचते हैं:-

खुला दीवां मेरा तो शोरे तहसीं[1] बज़्म[2] में उठा।
मगर सब होगये ख़ामोश जब मतबे[3] का बिल आया॥

अकबर को भी समाचार-पत्रों के सम्पादक साधारण कवि समझ कर भिन्न २ विषयों पर फ़रमायशी ग़ज़लें लिखने की प्रार्थना करते रहते थे। अकबर ऐसी प्रार्थनाओं से तंग आकर कहते हैं:-

उश्शाक़ को भी माले तिजारत समझ लिया।
इस क़द्र को मुलाहज़ा लिल्लाह कीजिये॥
भरते हैं मेरी आह को फ़ोनोग्राफ में।
कहते हैं फ़ीस लीजिये और आह कीजिये॥

अधिकांश उर्दू मासिक पत्र आप से 'ताज़ा कलाम' भेजने का तक़ाज़ा करते रहते थे। वृद्धावस्था में बेचारे किस २ की आशा पूरी करते। साफ़ इन्कार करना भी शिष्टाचार के विरुद्ध समझते थे। इस कारण अन्त में विवश होकर यह शेर छपवा दिया.-

ये परचा जिसमें चन्द अशआर हैं इरसाले ख़िदमत है।
हमारे 'लख्ते दिल[4]' हैं आपका माले तिजारत है॥

१ प्रशंसा। २ सभा। ३ प्रेस। ४ हृदय के टुकड़े।

कहीं२ अकबर ने शब्दों का विशेष रूप से प्रयोग करके कविता में हास्य पैदा कर दिया है। इस विषय के भी आपके दो चार शेर सुन लीजिये.-

१. पाकर खिताब नाच का भी शौक़ होगया।
सर[1] होगये तो बाल[2] का भी शौक़ होगया॥
२. खाई मिजगां[3] वो नज़र की जो क़सम बोला वो शोख़।
आप अब क़समें भी खाते हैं छुरी काटे से॥
३. शेख़ जी घर से न निकले और मुझ से कह दिया।
आप बी०ए० पास हैं और बन्दा बी०बी० पास है॥
४. बोले चपरासी जो पहुँचा मैं ब उम्मीदे सलाम।
फांकिये ख़ाक आप भी साहब हवा खाने गये॥
५. शैतां ने किया हज़रते आदम को न सिजदा[4]।
और उज़्र किया पेश कि मैं आग वो मिट्टी॥
हज़रत को भी तक़लीदे[5] नमाज़ी में है ये उज़्र।
मसजिद का वो मुल्ला है मैं साहब का हूं मुन्शी॥

अधिक कहां तक उल्लेख किया जाय, अकबर की कविता आदि से अन्त तक हास्य रस से भरी हुई है। कठिनता से १० प्रति शत ऐसे शेर होंगे जिनसे हास्य रस न टपकता होगा। कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो अकबर ने हास्य को हाथ से नहीं जाने दिया है। यही कारण है कि जो अकबर की कविता एक बार पढ़ लेता है, अकबर पर लट्टू होजाता है। दो चार शुष्क हृदयों की और बात है।

है बदगुमा जो वो बुत परवा नहीं कुछ इसकी।
हर ब्रहमन है शैदा[6] अकबर की काफ़िरी का॥

१ एक अंग्रेजी खिताब। २ अंग्रेजी नाच। ३भृकुटी, । ४ सर झुकाना। ५ अनुगमन, पीछे चलना। ६ आसक्त।

२-प्रेम।

यद्यपि अकबर ने प्रेम-विषयक कविता अधिकतर प्राचीन शैली ही पर की है, किन्तु पूववर्ती कवियों के समान ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाकर अपनी आह से 'उन्क़ा' के बालों को नहीं जलाया है* । अकबर की प्रेम विषयक कविता एक प्रेमी के हार्दिक उद्गारों का सीधी सादी भाषा मे जीता जागता चित्र है। इस बात की पुष्टि के लिये हम यहां पर अकबर की एक ग़ज़ल के कुछ शेर उद्धृत करते हैं:—

अजज़्ये दिल ने मेरे तासीर दिखलाई तो है।
घुँघरुओं की जानिबे दर कुछ सदा आई तो है॥
इश्क़ के इज़हार मे हरचन्द रुसवाई तो है।
पर करूँ क्या अब तबीयत आप पर आई तो है॥
आप के सर की क़सम मेरे सिवा कोई नहीं।
बे तकल्लुफ आइये कमरे में तन्हाई तो है॥
जब कहा मैं ने तड़पता है बहुत अब दिल मेरा।
हँस के फ़रमाया तड़पता होगा सौदाई तो है॥
देखिये कब तक नहीं आती गुले आरिज[1] की याद।
सैरे गुलशन से तबीयत हम ने बहलाई तो है॥

---

१ कपोल।

* मै अदम से भी परे हूं वरना ज़ालिम बारहा।
चाहे आतशीं से मेरी बाले उन्क़ा जल गया॥
—ग़ालिब

मैं बला में क्यों फसूँ दीवाना बनकर उस के साथ।
दिल को वहशत हो तो हो कमबख़्त सौदाई तो है॥
जिस की उल्फ़त पर बड़ा दावा था अकबर कल तुम्हें।
आज हम जाकर उसे देख आये हरजाई तो है॥

(२)

उन्हें पसन्द नहीं और इस से मैं बेजार।
इलाही फिर ये दिले बेक़रार क्या होगा॥
अज़ीज़ो सादा ही रहने दो 'लौहे[1] तुरबत' को।
हमी मिटे तो ये नक़्शो निगार क्या होगा॥

(३)

अगरचे आशिक़ बुतों का हूँ मैं नज़र ख़ुदा से फिरी नहीं है।
जो आंख रखते हैं जानते हैं कि आशिकी काफ़िरी नहीं है॥
जमाले दिलकश का मह्व होना नहीं है हरगिज़ ख़िलाफे ताअत।
ख़ुदा की कुदरत की क़द्र करना सवाब है काफ़िरी नहीं है॥

(४)

क्या मौत है तबियत आगई उस आफ़ते जां पर।
जिसे इतना नहीं मालूम उल्फत क्या वफ़ा क्या है॥
उन्हें भी जोशे उल्फ़त हो तो लुत्फ़ उट्ठे मौहब्बत का।
हमी दिन रात अगर तड़पे तो फिर इस मे मज़ा क्या है॥
मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिक़े सादिक़।
कोई परवाने से पूछे कि जलने में मज़ा क्या है॥

१. क़ब्र का पत्थर।

तबीबों से मैं क्या पूछूँ इलाजे दर्दे दिल अपना।
मर्ज़ जब ज़िन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है ॥

(५)

इन बुतों के बाब में इतनी ही मेरी अर्ज़ है।
कुफ्र है इनकी परस्तिश प्यार करना फ़र्ज़ है ॥

३. धर्म।

अकबर की सब से बड़ी विशेषता यह है कि चाहे कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो, उसे भी मनोरञ्जक तथा चित्ताकर्षक बना दिया है। दार्शनिक तथा धार्मिक तत्वों का समावेश अकबर ने अपनी कविता में कुछ इस प्रकार किया है कि देखते ही बनता है। देखिये ईश्वर का अस्तित्व आप किस प्रकार प्रमाणित करते हैं:—

ग़ौर से देखो ज़मीं वो आसमां को मुन्किरों[1]।
चल भी सकता बेखुदा के इन्तजाम इतना ॥

संसार से मनुष्य को कितना सम्बन्ध रखना चाहिये, इस बात को देखिये अकबर ने निम्नलिखित पद्य में किस ढङ्ग से बताया है:—

अकबर से मैंने पूछा अय वाइज़े तरीक़त,
दुनियाये दूं से रक्खूं मैं किस क़दर ताल्लुक़।
उसने दिया बलाग़त से ये जवाब मुझको,
अंग्रेज़ को है नेटिव से जिस क़दर ताल्लुक़ ॥

मज़हब तथा साइन्स की तुलना भी देखने लायक़ है—

सदाक़त[2] के निशां इस मिसरये अकबर में मिलते हैं।
कलें साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं ॥

१. नास्तिकों। २. सचाई।

ईश्वर की प्रार्थना से संबन्ध रखने वाली एक ग़ज़ल के भी शेर सुनने लायक़ हैं।

खुदा का नाम रोशन है खुदा का नाम प्यारा है।
दिलों को इससे कुव्वत है जुबानों को सहारा है॥
उसी के हुक्म से है रात दिन कि ये कमी बेशी।
उसी के हुक्म का तावे फ़लक पर हर सितारा है॥
उसी के इन्तज़ामो हुक्म से मौसम बदलते हैं।
वही है वक्त पर जिसने हवाओं को उभारा है॥
उसी के हुक्म से फल और ग़ल्ले की है पैदायश।
ज़मीं पर बदलियों से उसने पानी को उतारा है॥
ये जब तक सांस चलती है समझते हो हमीं हम हैं।
अजल[1] जब सर पै आ पहुँची तो फिर क्या बस हमारा है॥
अगर आमाल[2] अच्छे हैं तो पावोगे बड़े दर्जे।
समझलो इस्तहां इस 'दारे फ़ानी'[3] में तुम्हारा है॥
बज़ुर्गों का अदब अल्लाह का डर शर्म आंखों में।
इन्हीं औसाफ़[4] की निस्बत मज़हब में इशारा है॥

उपनिषदों में ईश्वर को 'अज्ञेय' कहा गया है। हर्बर्ट स्पेन्सर और उसके अनुयायी 'अज्ञेयवादियों' के अनुसार भी ईश्वर अज्ञेय है अर्थात् नहीं जाना जा सकता है। आपका भी यही विचार था। आपके विचार में सर्वव्यापक ईश्वर का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की परिमित बुद्धि से बाहर था:—

१ मृत्यु। २. कर्म। ३. नश्वर ससार। ४. गुणों।

किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिये ।
खिर्द[१] खामोश है और दिल ये कहता है खुदा कहिये ॥

ईश्वर के विषय में तर्क से भी काम नही लिया जा सकता क्योंकि—

क्योंकर दलील देख सके उस जमाल[२] को ।
जिसका ख्याल बर्क़[३] गिराता है होश पर ॥

इस कारण आप धार्मिक शास्त्रार्थों को व्यर्थ समझते थे । देखिये निम्नलिखित पद्य में आपने यह भाव किस सुन्दरता से प्रगट किया है:—

फ़िलसफ़ी तजुरबा करता था हुवा मैं रुखसत ।
मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं ॥
कह दिया मैं ने हुवा तजुरबा मुझ को तो यही ।
तजुरबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं ॥

इस के अतिरिक्तः—

मजहब के ये मुबाहस निकले हैं हिस्ट्री से ।
उन को है क्या ताल्लुक़ वहदत की मिस्ट्री[४] से ॥

अकबर अद्वैतवादी थे । किसी मजहब से तास्सुब नहीं रखते थे । आप कहते थे —

आता है वज्द[५] मुझको हर दीन की अदा पर ।
मसजिद में नाचता हूं नाकूस[६] की सदा पर ॥

किन्तु आप उन लोगों के विरुद्ध थे जो धर्म की आड में शिकार खेलते हैं । सुनिये क्या कहते हैं:—

---

१. बुद्धि २. ज्योति ३. बिजली ४. रहस्य ५. ईश्वर प्रेम में निमग्न हो जाना ६. शख ॥

किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस नाव में झगड़ा ।
करो तुम ध्यान परमेश्वर का दिल को उसका दर्शन हो ॥
मगर मुश्किल तो ये है नाम सब लेते हैं मज़हब का ।
ग़रज लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो ॥

इस प्रकार का दिखावे का ढोंग आपको पसन्द नहीं था। ऐसे मनुष्यों को आप दूर ही से प्रणाम करते थे'—

पंडित को भी सलाम है और मौलवी को भी ।
मजहब न चाहिये मुझे ईमान चाहिये ॥

मज़हब और ईश्वर की ओर से लापरवा रहने के कारण देखिये आपने कालिज के लड़कों के कैसी मोठी चुटकी ली है:-

मज़हब का हो क्यों कर इल्मो अमल,
दिल ही नहीं भाई एक तरफ़ ।
फिरकिट की खिलाई एक तरफ़,
कालिज की पढ़ाई एक तरफ़ ॥
क्या ज़ौक़े इबादत हो इनको,
जो मिस के लबों के शैदा हों ।
हलवे बहिश्ती एक तरफ़,
होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥

ईश्वर को भूले हुवे आज कल के नौकरी के उम्मीदवारों के विषय में भी एक शेर सुन लीजियेः—

मुसीबत में भी अब यादे खुदा आती नहीं उनको ।
दुआ मुंह से न निकली पाकटों से अर्जियां निकलीं ॥

यूरुप में वैज्ञानिक उन्नति के साथ २ नास्तिकता के भाव भी बढ़ते जाते हैं। अपने देश वासियों को नास्तिकता के फन्दे से बचने की चेतावनी आपने बड़े ही अनुपम ढङ्ग से दी है:—

भूलता जाता है यूरुप आसमानी बाप को।
बस खुदा समझा है उसने बर्क़[1] को और भाप को॥
बर्क़ गिर जायगी एक दिन और उड़ जायगी भाप।
देखना अकबर बचाये रखना अपने आप को॥

आप खुदा को खुश करना ही अपना सर्वोपरि कर्तव्य समझते थे। आपका कहना था कि यदि हम ईश्वर को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करेंगे तो आस्तिक अफ़सर स्वयं ही प्रसन्न हो जायेंगे।

तुम खुदा को खुश करो अकबर खुशामद छोड़ कर।
बाखुदा हाकिम जो होगा खुद ही खुश हो जायगा॥

आपके काव्य में नीति-विषयक शेर भी बहुत से हैं। यहां भी आपने 'हास्य' को हाथ से नहीं जाने दिया है। शराब की निन्दा में आप लिखते हैं:—

नफ्स[2] के ताबे हुवे ईमान रुखसत हो गया।
वो ज़नाने में घुसे महमान रुखसत हो गया॥
मय[3] उन्होंने पी अब उनके पास क्योंकर दिल लगे।
जानवर इक रह गया इन्सान रुखसत हो गया॥

ठीक। है मनुष्य और जानवर में यही भेद होता है कि मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान [illegible] को नहीं। [illegible] रहता [illegible] हालत में मनुष्य को [illegible] जानवर के [illegible]

१. गर्क

देखिये आपने स्वार्थी वाक्-चतुर उपदेशकों के फन्दे से बचने की चेतावनी किन शब्दों में दी है:—

वो रोये बहुत स्पीचों में हिकमत इसको कहते हैं।
मैं समझा ख़ैरख़्वाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं॥

कभी २ शान्त मनुष्यों को भी क्रोध आ जाता है। क्रोध आना तो प्राकृतिक है। दिल में मैल नहीं रखना चाहिये:—

गुस्सा आना तो है नेचुरल[1] अकबर।
लेकिन है शदीद[2] ऐब कीना रखना॥

आजकल मैत्री दिखावे की रह गई है। अवसर आने पर मैत्री का लम्बा चौड़ा दम भरने वाले आंखें फेर लेते हैं। इस साधारण बात को अकबर ने निम्न लिखित शेर में प्रगट किया है, किन्तु फ़ोनोग्राफ़ की उपमा देकर शेर में एक अजीब लुत्फ़ पैदा कर दिया है:—

क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज़[3] जुदा।
दौरे फ़ोनो में गले से हुई आवाज़ जुदा॥

देखिये अकबर का निम्नलिखित शेर कैसा सारगर्भित है:—

सवाब[4] कहता है मिल जाऊँगा कर उनकी मदद।
छिपा हुवा मैं ग़रीबों की भूख प्यास में हूँ॥

उपरोक्त शेर में अकबर ने धर्म का सार रख दिया है। साधारण शब्दों में ऐसी गूढ़ बात कह जाना अकबर ही का हिस्सा था:—

तेरे बाद अकबर कहां ऐसी नज़्में।
वो दिल ही न होंगे कि ये आह निकले॥

---

१. प्राकृतिक २. सख़्त ३. मित्र ४. पुण्य॥

४. समाज--सुधार ।

यद्यपि अकबर पश्चिमी शिक्षा के विरोधी नहीं थे और अपने लड़के को भी विलायत पढ़ने के लिये भेजा था, किन्तु योरप की नास्तिकता तथा 'मैटीरियलिज़्म' (Materialism) के बिलकुल विरुद्ध थे। आप इस बात के भी पक्ष में नहीं थे कि भारतीय अपनी चाल ढाल तथा रीति रस्म भूल जायें और सोलहों आने अंग्रेज़ी चाल ढाल पर चलने लगें। आपने अपनी कविता में योरोपीय सभ्यता की उन बातों की, जिन्हें वे दूषित समझते थे, ख़ूब ख़ुश्की उड़ाई है। योरोपीय सभ्यता पर लट्टू नये ढङ्ग के बाबू लोगों की भी आपने ख़ूब ख़बर ली है। कहीं २ तो अकबर ने एक २ शेर में पूरे लेक्चर का मज़मून बन्द कर दिया है।

परदा

अकबर परदे के रिवाज के पक्ष में थे। देखिये आपने नीचे के दो शेरों में अपने पक्ष का किस निराले ढंग से समर्थन किया है तथा विपक्षियों के कैसी चुटकी ली हैः—

बेपरदा नज़र आईं जो कल चन्द बीबियां,
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गढ़ गया ॥
पूँछा जब उनसे आपका परदा कहां गया,
कहने लगीं कि अक्ल पै मर्दों की पड़ गया ॥

स्त्री-शिक्षा

अकबर स्त्री-शिक्षा के विरोधी नहीं थे, किन्तु आप अङ्गरेजी ढंग की शिक्षा लड़कियों के लिये उचित नहीं समझते थे। आप का विचार था कि अङ्गरेज़ी ढंग की शिक्षा लड़कियों के आचार पर बुरा प्रभाव डालती है और उनको घरेलू काम काज तथा पति

की ओर से उदासीन बना देती है। निम्न लिखित पद्य में आपने आधुनिक शिक्षा-प्रणाली से शिक्षित लड़कियों का चित्र खैंचा है;-

घर से जब पढ लिख के निकलेंगी कुँवारी लडकियां।
दिलकशो[1] आजादो खुशरू[2] साख्ता[3] परदाख्ता[4] ॥
ये तो क्या मालूम क्या मौके अमल के होंगे पेश।
हा निगाहें होंगी मायल[5] उस तरफ बेसाख्ता[6] ॥
मग़रबी तहजीब आगे चलके जो हालत दिखाये।
एक मुद्दत[7] तक रहेंगे नौजवा दिल-बाख्ता[7] ॥
औजे[8] क़ौमी से शराफ़त का हुमा[9] गिर जायगा।
माकिया[10] से पस्ततर[11] दिखलाई देगी फ़ाख्ता ॥
डाल देगा सीनये ग़ैरत[12] सिपर[13] मैदान में।
तेग़[14] अबरू[15] ही नजर आयगी हरसू आख्ता[16] ॥

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

१. तहजीबे मग़रिबी मे है बोसा तलक मुआफ।
इससे अगर बढो तो शरारत की बात है॥

२ रुक्यिे अगर तो हँस के कहे एक मिसे हसीं।
वैल मौलवी ये बात नहीं है गुनाह की॥

---

१. चित्ताकर्षक २. सुन्दर ३ दुरुस्त ४ सुमज्जित ५. आकर्षित ६. आप ही आप ७. जिनका दिल मर से क़ाबू जा चुका है ८. आकाश ९. एक जानवर का नाम है जो केवल हड्डी खाता है। कहा जाता है कि जिस आदमी पर इनका साया पड जाता है वह बादशाह हो जाता है। १०. घर की पली हुई मुर्गी ११. ज्यादा नीची १२, लज्जा १३, ढाल १४, तलवारें १५, भृकुटी १६, लटकी हुई॥

अब ज़रा घरेलू काम काज से उदासीनता के विषय में भी एक शेर सुन लीजिये:—

१. उनसे बीवी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की।
ये न बतलाया कहां रक्खी है रोटी रात की॥

२. बीवी में जो तरजे मग़रिबी हो तो कहो।
अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो॥

अकबर के उपरोक्त पद्य पढ़कर स्वर्गीय सर सैयद अहमद का कथन याद आजाता है। एक बार आपने बातों २ में कहा था कि यदि अपनी पत्नी को प्रसन्न रखना चाहो तो दो बातोंका ध्यान रक्खो। यदि पत्नी नई रोशनी की है तो उसके आचार पर आक्षेप न करो। वह जो करे करने दो। सदैव सन्तुष्ट रहेगी। और यदि पत्नी पुरानी रोशनी की है तो अपना आचार ठीक रक्खो।

अकबर का विचार था कि स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये कि जिससे वे अपनी गृहस्थी के काम काज अच्छी तरह कर सकें। उन्होंने लिखा है:—

तालीम लड़कियों की जरूरी तो है मगर।
'खातूनेखाना'[1] हों वो सभा की परी न हों॥
'जीइलमो'[2] मुत्तक़ी[3] हों वले उनके मुन्तजिम।
उस्ताद अच्छे हों मगर उस्ताद जी न हों॥

देखिये आपने अपनी सम्मति किस अनुपम सुन्दरता के साथ प्रगट की है। "उस्ताद जी" का शब्द कैसा "विनोदपूर्ण" है।

---

१. घर की देवियां। २ विद्वान्। ३ परहेज़गार।

आधुनिक शिक्षा।

आजकल सरकारी स्कूलों में जिस प्रकार की शिक्षा लड़कों को दी जाती है उससे भी अकबर सन्तुष्ट नहीं थे। असन्तुष्ट होने का सब से बड़ा कारण यह था कि धार्मिक शिक्षा के सर्वथा अभाव के कारण आधुनिक स्कूलों तथा कालिजों में शिक्षित विद्यार्थी अपने धर्म तथा ईश्वर से विमुख हो जाते हैं। विद्यार्थियों को सम्बोधन करके अकबर लिखते हैं:—

नये गमलों में पड़ कर फूल जाना।
खुदा वो आख़िरत[1] को भूल जाना॥
बहुत बेजा है ये वल्लाह अकबर।
ज़रा सुन लो तो फिर स्कूल जाना॥

आधुनिक शिक्षा से प्रभावान्वित होकर बहुत से लड़के बड़ों का अदब लिहाज़ बिल्कुल छोड़ देते हैं। इस विषय में भी एक शेर सुनिये —

हम ऐसी सब किताबें काबिले ज़ब्ती समझते हैं।
जिन्हें पढ़ २ के लडके बाप को खब्ती समझते हैं॥

आधुनिक कालिजों में शिक्षा प्राप्त युवक पर सोलहों आने विदेशी सभ्यता का रङ्ग चढ़ जाता है। और क्यों न चढ़े:—

तिफ़्ल में बू आये क्या मा बाप के अतवार की।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की॥

कुछ स्कूलों तथा कालिजों में धार्मिक शिक्षा देने का भी प्रबन्ध होता है। किन्तु अकबर इस प्रबन्ध को यथेष्ट नहीं समझते थे। आपका कहना था:—

१. परलोक।

नई तहज़ीब में भी मज़हबी तालीम शामिल है।
मगर यूंही कि जैसे आबे[1] ज़मज़म[2] मय में दाखिल है॥

भारतीय युवकों के जीवन का बड़ा भाग इस ही प्रकार की दूषित शिक्षा प्राप्त करने में नष्ट हो जाता है:—

बहारे उम्र गुज़री सालहाय इम्तहानी में।
हमें तो पास ही की फ़िक्र ने पीसा जवानी में॥

इतना बहुमूल्य समय तथा धन व्यय किस लिये किया जाता है? यथार्थ ज्ञान या कोई बड़ा ओहदा पाने के लिये नहीं। बड़े ओहदे तो अधिक संख्या में विदेशियों ही के लिये सुरक्षित हैं। हम तो क्लर्की पाना ही अहोभाग्य समझते हैं। साधारण क्लर्की के लिये इतनी मुसीबत!

मज़हब छोड़ो मिल्लत छोड़ो सूरत बदलो उम्र गंवावो।
सिर्फ क्लर्की की उम्मीद और इतनी मुसीबत तोबा तोबा॥

खेद की बात तो यह है कि इतनी आराधना करने पर भी क्लर्की रूंसी ही रहती है:—

हैं अमल अच्छे मगर दरवाज़ये जन्नत[3] है बन्द।
कर चुके हैं पास लेकिन नौकरी मिलती नहीं॥

अतएव—

ख्वाहां नौकरी न रहें तालिबाने इल्म।
क़ायम हुई है राय ये अहले शऊर की॥
कालिज में धूम मच रही है पास पास की।
ओहदों से सदा आ रही है दूर दूर की॥

किन्तु नौकरी न करें तो क्या करें? आधुनिक शिक्षा तो क्लर्की के सिवाय और किसी काम का बनाती ही नहीं। एक

१. पानी २. गंगा के समान मुसलमानों की एक पवित्र नदी ३. स्वर्ग॥

मात्र साहित्यक शिक्षा से रोटी का प्रश्न हल नहीं हो सकता। संसार शिल्प-वाणिज्य के मैदान में कुलांचे मारता चला जाता है किन्तु हम अपनी पुरानी ही डगर पर हैं:—

डार्विन के वही मकतब का सबक़ है अब तक।
वही बन्दर वही लंगूर चला जाता है॥

अब तो हमको समझ आनी चाहिये तथा शिल्प-वाणिज्य की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। देखिये इस प्रकार की शिक्षा का समर्थन अकबर निम्न लिखित शेर में किस अनुपम सुन्दरता के साथ करते हैं:—

हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यूंकर।
ये बहस अच्छी है इससे हजरते आदम बने क्यूंकर॥

आपका विचार था कि आधुनिक योरोपीय सभ्यता में बाहरी टीप टाप ही अधिक है। देखिये आपने इस भाव को निम्न लिखित शेर में किस उत्तमता से प्रकट किया है:—

हम को नई रविश[1] के हलक़े[2] जकड़ रहे हैं।
बातें तो बन रही हैं और घर बिगड़ रहे हैं॥
तर्ज़े मग़रिब में नहीं है शर्ते दिल बहरे अमल।
चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो॥

स्टीमर का उदाहरण कितना उपयुक्त है। एक और स्थान पर आप लिखते हैं:—

कमेटियों से सदा उठी है ज़माना बदला है तुम भी बदलो।
मगर हमारा तो कौल ये है ख़ुदा वही है तो हम वही हैं॥

१ चाल। २ घेरे।

किन्तु उपरोक्त पद्य से अकबर का यह आशय नहीं समझना चाहिये कि समय के साथ २ हम कुछ भी परिवर्तन न करें :—

तुम शौक़ से कालिज में फलो पार्क में फूलो,
जायज है गुब्बारों पै चढ़ो चर्ख़[1] पै झूलो।
पर एक सख़ुन बन्दये आजिज का रहे याद,
अल्लाह को और अपनी हक़ीक़त को न भूलो॥

अकबर उन आदमियों में नहीं थे जो किसी बात का इस ही कारण विरोध करते हैं कि वह नई है। आपने एक स्थान पर लिखा है:—

शेख़ साहब का तास्सुब[2] है जो कहते हैं।
ऊँट मौजूद है फिर रेल पै क्यों चढ़ते हो॥

आपने अपने लड़के को विलायत पढ़ने के लिये भेजा था। किन्तु इस ही बात से डरा करते थे कि कहीं लड़के विलायत जाकर सरस्वती की आराधना करने के स्थान में कामदेव की आराधना न करने लगें।

कमरे में जो हँसती हुई आई मिसे रैना,
टीचर ने कहा इल्म की आफ़त है तो ये है।
पेचीदा मसायल के लिये जाते हैं इंग्लैण्ड,
ज़ुल्फ़ों में उलझ आते हैं शामत है तो ये है॥

---

१. आकाश। २. पक्षपात।

४ राजनीति।

अकबर सरकारी नौकर होने के कारण देश के राजनैतिक कार्यों में भाग नहीं लेते थे। स्पष्टरूप से विवादग्रस्त समस्याओं पर अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकते थे। किन्तु अकबर के पास 'जराफत' का नुस्खा ऐसा था कि हंसी दिल्लगी के बहाने बाण मारजाते थे। कड़वी से कड़वी दवा दे देते थे और उस पर हास्य-रस का इतना मीठा चढ़ा देते थे कि खाने वाला कड़वी गोलियों को निगल जाने पर भी होंठ चाटता रह जाता था। एक स्थान पर आपने स्पष्ट रूप से लिखा है:—

जराज़िशें मद्दे ज़राफ़त में जो कुछ आयें नज़र।
दोस्तों से इल्तजा ये है करें उसको मुआफ़॥
सर्द मौसम था हवाएँ चल रहीं थीं वर्फ़ बार।
शाहिदे मानी ने ओढ़ा है ज़राफ़त का लिहाफ़॥

उपरोक्त पद्य का भावार्थ यहहै कि 'ज़राफ़त' में जो कुछ कमी या अपूर्णतायें रहगई हों उनके लिये मित्रगण क्षमा करें। बात यह है कि मौसम जाड़े का था अर्थात् राजनैतिक समस्याओं ने विकट रूप धारण कर रक्खा था और ठण्डी हवाएं चल रही थीं अर्थात् सरकारी पकड़ धकड़ जोरों पर थी। इस कारण अर्थ रूपी 'माशूक़' या 'नायिका' को 'ज़राफत' या 'हास्य' का लिहाफ ओढ़ना पड़ा है। आशय यह है कि सारी बातें हास्य के परदे में कही गई हैं। यही कारण था कि अकबर सरकारी नौकर होते हुए भी सत्य के पक्ष में तथा सरकार के विपक्ष में ऐसी २ बातें कह गये हैं जिनका कहने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता है।

अकबर का अधिकांश जीवन सरकारी नौकरी में बीता। साधारणतया सरकारी नौकरों में—विशेषतया उच्च पदाधिकारियों में—मानसिक ग़ुलामी आ जाती है। किन्तु आप इस रोग से सर्वथा मुक्त थे—

शागिर्द डारविन तो ख़ुदा ही ने कर दिया।
अकबर मगर नहीं है मदारी के हाथ में॥

अकबर का विचार था कि भारतवर्ष के लिये अंग्रेज़ों का राज्य हितकर नहीं हो सकता। अंग्रेज़ी राज्य से देशवासियों का शासन-चाहे हिन्दुओं का हो या मुसलमानों का-कहीं अच्छा है। देखिये आपने इस विचार को किस मज़े के साथ व्यक्त किया है—

धुन देश की थी जिसमें गाता था एक देहाती।
बिसकुट से है मुलायम पूरी हो या चपाती॥

बिस्कुट, पूरी तथा चपाती से अंग्रेज़, हिन्दू तथा मुसलमानों के शासन का अभिप्राय है।

राजनैतिक अधिकार पाने के लिये आप माडरेटों के समान ख़ुशामद या शिकायत से काम लेना समय का वृथा नष्ट करना समझते थे। आप एक प्रसिद्ध अंग्रेज राज-नीतिज्ञ के निम्न लिखित कथन की यथार्थता को पूर्णरूप से अनुभव करते थे—

In politics from a promise it is meant that it will not be fulfilled, unless pressed.

अर्थात् राजनीति में वादे का यह मतलब है कि 'वादा' उस समय तक पूरा न किया जायगा जब तक पूरा करने के

लिये विवश ही न हो जाये । इस ही कारण आपने लिखा है—

निहायत क़ाबलियत से मुझे साबित किया मुरदा ।
मुनासिब दाद देना है मुझे याग़ब कि रोना है ॥
नदा आई मुनासिब है कि जीना अपना साबित कर ।
ख़ुशामद या शिकायत दोनों ही में वक्त खोना है ॥

राजनैतिक क्षेत्र में केवल जिव्हा बनना व्यर्थ है । यहां तो हाथ बनने से काम चलता है—

ज़ोरे बाज़ू नहीं तो क्या स्पीच ।
हाथ भी दे ख़ुदा ज़बान के साथ ॥

जब तक हाथ में शक्ति नहीं, व्यर्थ के आलाप से क्या लाभ? रकाबियों की झन्कार उम्र भर सुनते रहिये । किन्तु इससे कहीं भूख मिट सकती है ?

रिज़ोल्यूशन की कोशिश है मगर उसका असर ग़ायब ।
प्लेटों की सदा सुनता हूं और खाना नहीं आता ॥

आप नाम मात्र के सुधारों से—जैसे काउन्सिलों में भारतीय सभासदों की संख्या कुछ बढ़ादी या भारतियों को दो-चार ऊंचे पद और देदिये—सन्तुष्ट नहीं थे । आपके विचारानुसार—

हमदर्द हों सब ये लुत्फ़े आबादी है ।
हमसाया भी हो शरीक तब शादी है ॥
तसकीन है जब कि ख़ुदा पर हो तकिया ।
कानून बना सकें तब आज़ादी है ॥

अंग्रेजों के बङ्गलों की खाक छानना भी आप जातीय उन्नति

१ आवाज ।

की दृष्टि से व्यर्थ समझते थे—

क़ौम के हक़ में तो उलझन के सिवा कुछ भी नहीं।
सिर्फ़ आनर के मज़े उनकी मुलाक़ात में हैं॥
ठीक भी है। ख़िताब के सिवा और मिलता भी क्या है?

स्वराज्य।

स्वराज्य आन्दोलन की आरम्भिक अवस्था में आपने लिखा था—

जब ये समझे थे परहेज़ ज़रूरी है इन्हें,
वादा बच्चों से मिठाई का मुनासिब ही न था।
आपही ने तो किया 'केक' का ज़िक्रे शीरीं,
वरना इस चीज़ का इनमें कोई तालिब ही न था॥

उपरोक्त पद्यों का अर्थ साफ है। 'परहेज़' शब्द से कवि ने प्रकट किया है कि अधिकारीवर्ग नहीं चाहते कि भारतवासियों को 'होमरूल' अर्थात् 'स्वराज्य' मिले। 'बच्चों से मिठाई के वादे' की उक्ति बहुत ही व्यङ्गपूर्ण है। स्वराज्य-आन्दोलन की प्राम्भिक अवस्था में स्वराज्य के अर्थ मे होमरूल शब्द ही का प्रयोग किया जाता था। 'होमरूल' अंग्रेज़ी शब्द है। इस ही कारण कवि ने 'होमरूल' के लिये 'केक' शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु साथ ही साथ 'ज़िक्र' के साथ 'शीरीं' लगा कर इस बात को भी प्रकट कर दिया है कि 'होमरूल' देश के लिये आवश्यक है।

देखिये भारतवर्ष की दशा का आपने कैसा वास्तविक तथा मार्मिक चित्र खैंचा है—

ये बात ग़लत कि दारे इस्लाम है हिन्द,
ये झूठ कि मुल्के लछमनो राम है हिन्द।
हम सब हैं मुती वो ख़ैरख़्वाहे इङ्गलिश,
यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द॥

भावार्थ यह कि न तो अब भारतवर्ष इसलाम का घर है और न राम लक्ष्मण ही का देश है। अब तो यहां अंग्रेज़ जाति के आदमी और उनके शुभचिन्तक रहते हैं और भारतवर्ष यूरुप का गोदाम बना हुवा है।

अकबर ऐसे नेताओं को बिल्कुल पसन्द न करते थे जो ऊपर से तो क़ौमी खिदमत का ढोंग रचते रहते हैं, किन्तु वास्तविक उद्देश्य यह होता है कि काउन्सिलों के मेम्बर होजायें, खिताब हासिल करलें या अपने संबन्धियों को सरकारी नौकरियां दिला दें। ऐसे नेताओं को सबोधन करके आप कहते हैं:-

ग़म की थी मैं ने राह मुसीबत यही थी सख्त।
इस पर हुआ ये कहर तुम ऐसे खिज़र मिले॥
बातें भी मुझसे कीं मेरी खातिर भी की बहुत।
लेकिन मजाल क्या जो नज़र स नज़र मिले॥
किस से मैं पूँछता गुलो बुलबुल की सरगुजश्त।
दो चार बर्ग खुश्क तो दो चार पर मिले॥

देखिये निम्नलिखित शेर में आपने एक मात्र नाम के इच्छुक लीडरों के कैसी चुटकी ली है:-

कौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
लीडर को ग़म बहुत है मगर आराम के साथ॥

बहुत से वकील वकालत में अकृतकार्य होकर उदर-पूर्ति के लिये लीडरी के मैदान में आजाते हैं। ऐसे लीडरों के विषय में भी कुछ सुन लीजिये:-

मवक्किल छुटे उनके पञ्जे से जब।
तो बस क़ौमे मरहूम के सर हुए॥

पपीहे पुकारा किये 'पी' कहां।
मगर वो तो प्लीडर (Pleader) से लीडर (Leader) हुवे ॥

पपीहा, पी, प्लीडर तथा लीडर शब्दों ने उपरोक्त शेरमें अजब जान डाल दी है। अंग्रेजी शब्द Pleader (वकील) में से जब 'P' निकाल लेते है तो Leader (नेता) बाक़ी रह जाता है। उस समय की कांग्रेस को लक्ष्य में रख कर, जब वह माडरेटों के हाथ में थी, आप लिखते हैं:—

हो दिसम्बर में मुबारिक ये उछल कूद आप को।
खून मुझ में भी है लेकिन मुझको फागन चाहिये ॥

आजकल की कौंसिलें एक प्रकार से खिलोना मात्र हैं। गवर्नर या वाइसराय को अधिकार है कि सर्व सम्मति से स्वीकृत हुवे महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण प्रस्ताव को रद्द करदे —

एक दिल्लगी है वक्त गुजरने के वास्ते।
देखो तो मैम्बरों के ज़रा हेर फेर को ॥
ऐसी कमैटियों से है फल का उम्मैदवार।
अकबर दरख़्त समझा है पत्तों के ढेर को ॥

आप काउन्सिलों को व्यर्थ ही नहीं प्रत्युत् ग़ुलामी की जंजीर और शिकारी का फन्दा समझते थे —

कौम के दिल में खोट है पैदा।
अच्छे अच्छे हैं वोट पै शैदा ॥
भाई भाई में हाथापाई।
सैल्फ़ गवर्नमैन्ट आगे आई ॥

पाव का होश अब फ़िक्र न सर की ।
वोट की धुन में बन गये फिरकी ॥

निम्न लिखित शेरों मे तो अकबर ने आधुनिक कौन्सिलों का खोखलापन बिल्कुल ही स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया है:—

नेटिव है नमूद ही का मोहताज ।
कौन्सिल तो है उनकी जिनका है राज ॥
कहते जाते है या इलाही ।
सोशल हालत की है तबाही ॥
हम लोग जो इसमे फंस रहे हैं ।
अग़यार भी दिल में हँस रहे हैं ॥
दरअसल न दीन है न दुनिया ।
पिंजरे में फुदक रही है मुनिया ॥
स्कीम का झूलना वो झूलें ।
लेकिन ये क्यूं अपनी राह भूलें ॥

सन् १९१४ ई० में योरोपीय महायुद्ध आरम्भ हुआ । आपने समाचार पाते ही एक ग़ज़ल लिखी जिसका एक मिसरा यह था :—

बुलन्द अल्लाह ! अब तूने शहीदां रंग लाया है ।

जिस समय यह ग़ज़ल लिखी गई थी अङ्गरेज लोग लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुये थे। इस कारण प्रत्यक्ष है कि कवि का सकेत अङ्गरेज़ों की ओर नहीं हो सकता था। किन्तु 'चोर की दाढ़ी में तिनका' की कहावत के अनुसार अफसरों ने यह समझा कि अकबर का इशारा अङ्गरेज़ों ही की ओर है। इस कारण अकबर पर कड़ी दृष्टि पड़ने लगी। अकबर ने इस बात की घोषणा कर

दी कि अब मैं कविता नही लिखूंगा। किन्तु शराबी की तोबा के समान प्राकृतिक कवि की तोबा कभी अधिक काल तक नही ठहर सकती। महाकवि ग़ालिब के कथनानुसार 'छुटती नहीं है मुंह से यह काफ़िर लगी हुई'। ज़ाहिर में तो अकबर ने शेर कहना छोड़ दिया, किन्तु चुपके २ शेर लिखते रहे और अपने अभिन्न-हृदय मित्रों को सुनाते रहे। इस समय के लिखे हुवे दो एक शेर भी सुन लीजिये:-

[१]

हुक्म अकबर को मिला है कि न लिखो अशआर।
ख्वाजा हाफ़िज़ भी निकाले गये मयख़ाने से ॥

[२]

सीने इधर ऐसे कि सहें जौरे गफ़ल भी।
कान उनके वो नाज़ुक कि गरां मेरी ग़ज़ल भी ॥

महात्मा गांधी के असहयोग (Non Co-operation) के सिद्धान्त से आप की पूर्ण सहानुभूति थी। आपकी ताड़ने वाली निगाह बहुत पहिले ही ताड गई थी कि शिक्षा तथा सभ्यता के नाम पर जितनी सरकारी संस्थायें हैं सब का यही आशय है कि हम में से जातीयता के भाव जाते रहें और उन्ही के इशारो पर नाचने लगें:-

उन्ही के मतलब की कह रहा हूं ज़बान मेरी है बात उनकी।
उन्हीं की महफ़िल संवारता हूं चिराग़ मेरा है रात उनकी ॥
फ़कत मेरा हाथ चल रहा है उन्हीं का मतलब निकल रहा है।
उन्हींका मज़मून उन्हीं का काग़ज़ क़लम उन्हीं का दवात उन्हींकी ॥

आपका विचार था कि यदि यही दशा रही तो जिनके अन्दर जातीयता के भाव बने हुवे हैं उनके अन्दर से भी शीघ्रही लुप्त हो जायेंगे:—

वो इसको महवे कलीसा बनाके छोड़ेगे ।
इस ऊँट को खरे ईमा बनाके छोड़ेंगे ॥
करेंगे शौक से मुसलिम गिज़ा मे मय दाखिल ।
शराब को भी हरीसा बनाके छोड़ेंगे ॥
कहा ये शेख से अकबर ने रोक अपनी जबान ।
कि तुमको भी वे मुफ्तीसा बनाके छोड़ेंगे ॥

अंग्रेज़ी शिक्षा के विषय मे आपका विचार था:—

सय्याद हुनर दिखलाये अगर सब मुमकिन है ॥
बुलबुल के लिये क्या मुशकिल है उल्लू भी बने और खुश भी रहे ॥

बहुत से लोगों का विचार है कि अंग्रेज़ी शिक्षा के कारण हिन्दू मुसलमानों की पारस्परिक फूट बढ़ती जाती है। आपका भी यही विचार था। देखिये आपने इस विचार को किस अनुपम ढग से व्यक्त किया है—

नज्द मे भी मगरिबी तालीम जारी होगई ।
लैलो मजनूँ मे आखिर फौजदारी होगई ॥

आपका विश्वास था कि भारतवर्ष की अधोगति का दायित्व सरकार ही पर है—

लेगये वसीट के मुझको परेड पर ।
तैयार हो रहा था मैं जलवत के वास्ते ॥

आप यह भी जानते थे कि जब तक भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी में रहेगा उन्नति नहीं कर सकता:-

'दस्तो पा बस्ता'[१] हूँ मैं ज़ाहिर कोई गुन क्या करूँ।
दूसरों के बस में हूँ फ़िक्रे तमद्दुन[२] क्या करूँ॥

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

दाने को है हक़[३] नश्वोनुमा[४] इससे तो मुझे इंकार नहीं।
लेकिन ये बताओ मुझको ज़रा वो खेत में है या पेटमें है॥

महात्मा गांधी के अनुसार आप कौन्सिलों से बिलकुल दूर रहने के पक्ष में थे। स्वराज्य-वादियों का यह विचार, कि कौन्सिलों को तोड़ने के लिये कौन्सिलों में जाना चाहिये, आप को पसन्द न था। सुनिये आप क्या कहते हैं:—

माना कि पढ़ोगे वां पहुँचकर आईन[५]।
जाना ही ज़रूर क्या है शैतां की तरफ़॥

महात्मा गान्धी के समान आप ईश्वर के न्याय तथा दया पर भी पूर्ण विश्वास रखते थे। इस विषय को लेकर आप ने एक पूरी ग़ज़ल कह डाली है:-

मसजिद में खुदा खुदा किये जावो।
मायूस न हो दुआ किये जावो॥
हरगिज न 'कज़ा करो'[६] नमाज़ें।
मरने मरने अदा किये जावो॥

---

१ हाथ पर बांधा हुआ २ राज्य-प्रबन्ध ३. अधिकार ४. विकास ५. भाग ज्ञान ६. छोड़ना

समझो ये वक्त इम्तहां है।
हां भी जो सितम वफ़ा किये जावो ॥
कितना ही हो वक्त, बेहज़ावी[1]।
तुम पैरविये[2] हया[3] किये जावो ॥
उम्मीदे शफ़ा[4] खुदा से रक्खो।
क्यूं तर्क[5] करो दवा किये जावो ॥

आपके विचारानुसार तो अंग्रेज़ों के साथ सहयोग हानिप्रद ही नहीं वरन् एक प्रकार से असम्भव था:—

क्या हो बिनाये उलफ़त आखिर मुनासबत क्या।
मैं खाके बेकसी पर वो नख़्से मल्तनत पर ॥

एक और स्थान पर आप लिखते हैं:—

आपसे मिल मैं क्यूं नुक़सान उठाऊँ अय जनाब।
आपको जब सिर्फ़ अपना फायदा मंजूर है ॥

किन्तु आप दिखावे का असहयोग पसन्द नहीं करते थे। आपका कहना था कि यदि पब्लिक में आने जाने के लिये गाढ़े के कपड़े बनवालिये और दिल में पश्चिमीय सभ्यता का दम भरते रहे तो इस से कुछ लाभ न होगा:—

हुस्ने बुत दैर[6] में लिये जाना है।
क्या नतीजा है अज़ान से खिंचे रहने का ॥

इस ही प्रकार असहयोग के समर्थन में आप के बहुत से शेर उद्धृत किये जा सकते हैं। मरने से कुछ दिन पहिले आपने एक

१ बेशर्मी २. अनुगमन ३. शर्म ४. आराम ५. छोड़ना ६. मन्दिर।

पूरा रिसाला 'गान्धी नामा' के नाम से कह डाला था। महात्मा गान्धी के विषय में आपकी सम्मति थी —

गाँधी में सब भलाई लेकिन वो महज़ बेबस।
साहब में सब बुराई लेकिन वो ख़ूब चौकस॥

महात्मा गान्धी से एक बात में आपका मत-भेद था। महात्मा जी केवल आत्मबल पर भरोसा रखते थे किन्तु आप शारीरिक बल को काम में लाने के भी विरुद्ध नहीं थे। आप के निम्न लिखित शेरों से यही बात झलकती है:—

ख़ूब ये बात कही उन से पुकारो उसको।
बदढुआ साप को क्या देते हो मारो उसको॥

एक और स्थान पर इस से भी साफ़ शब्दों में लिखते हैं —

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है।
समझलो ख़ूब कारे सल्तनत लोहे से चलता है॥

फिर भी आप असहयोग रूपी अस्त्र पर बहुत कुछ भरोसा रखते थे: —

जो पूछा क्यूं कमर इस मनज़िले तारीक में बांधी।
ज़बाने हज़रते शौकत से बोले हज़रते गाधी॥
मखाश अय रह नवरदे इश्क ग़ाफ़िल अज़ तपीदन हा।
कि दर आख़िर बजाय मी रसद अज खुद रमीदन हा॥

अर्थात् यह पूछने पर कि आप इस अन्धकार-मय पथ पर चलने के लिये क्यों कटिबद्ध होगये हैं, महात्मा गांधी जी ने मौलाना शौकत अली के शब्दों से यह उत्तर दिया, "अय प्रेम-पथ के पथिक तू तड़पने से मत चूक क्योंकि इस पथ पर अपने

आपको बिल्कुल भूल जाने वाला ही अन्त में अपने इष्ट स्थान पर पहुच जाता है।

पाठक शायद प्रश्न करेंगे कि जब अकबर सत्याग्रह के सिद्धान्त के इतने अधिक पक्ष में थे तो फिर आपने सत्याग्रह-संग्राम में भाग क्यो नहीं लिया? रण-क्षेत्र में क्यों नहीं कूदे? केवल मौखिक सहानुभूति ही क्यों प्रकट करते रहे? इस प्रश्न का उत्तर हम अकबर ही के शब्दों में देना चाहते हैं:—

उधर है जेल की जहमत[1] इधर है कौम की लानत।
उधर आराम जाता है इधर ईमान जाता है॥
ब मजबूरी वो माज़ूरी[2] शरीके कैम्प है अकबर।
मगर जिस को बसीरत[3] है उसे पहचाना जाता है॥

इन सब बातों पर ध्यान रखते हुवे आपका सत्याग्रह-सग्राम में प्रत्यक्ष रूप से भाग न लेना क्षम्य समझा जा सकता है। किन्तु ऐसा होते हुवे भी आप सत्याग्रह का विरोध करने वाले सरकार के ख़ुशामिदियों को चेतावनी दे गये हैं:—

कम्पू का जो साथी हो तो घर उसका मिटेगा।
बङ्गले मे हैं वो और ये मोहल्ले में पिटेगा॥

अकबर का विचार था कि देश के नेता राजनीति के विद्वान् ही हाने चाहियें। ऐरे ग़ैरे नत्थू ख़ैरे का नेता बन जाना आपको नहीं भाता था। इस ही कारण आप यह उचित न समझते थे कि मौलवी लोग राजनैतिक विषयों पर भी 'फतवे' देने लगे। मौलवियों को धार्मिक क्षेत्र में काम करना चाहिये और राजनीतिज्ञों को राजनीति के क्षेत्र में। देखिये इस भाव को आपने

१. कष्ट, २. विवशता, ३. वास्तविक ज्ञान।

निम्न लिखित पद्य में किस सुन्दरता के साथ प्रगट किया है:-

नई रोशनी का हुवा तेल कम।
हकूमत ने उस से किया मेल कम ॥
इधर मौलवी 'कस-म-पुर्सी मे थे'[1]।
न आफ़िस में थे और न कुरसी में थे ॥
ये ठहरी कि आपस में मिल जाइये।
सयासी[2] कमैटो में पिल जाइये ॥
इसी रोशनी का है वस ये ज़हूर।
खुदा जाने जुल्मत[3] है इसमें कि नूर[4] ॥

भावार्थ यह कि एक ओर तो नई रोशनी वाले अर्थात् अंग्रेज़ी परीक्षा पाये हुवे नौकरियां न मिलने के कारण रुष्ट थे। दूसरी ओर मौलवी भी नाराज़ थे क्योंकि सरकार में उनकी कोई बात न पूछता था। अन्त में दोनों ने मिल कर यही ठानी कि सरकार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया जाय। ईश्वर ही जाने इस मेल का क्या परिणाम निकलेगा ?

हिन्दू मुस्लिम एकता।

अकबर देश के हित के लिये हिन्दू मुसलमानों की एकता को बहुत आवश्यक समझते थे। हिन्दू तथा मुसलमानों को चाहिये कि आप का निम्नलिखित उपदेश सदैव ध्यान में रक्खें:-

कहता हूँ हिन्दु वो मुसलमां से यही,
अपनी २ रविश[5] पर तुम नेक रहो।
लाठी है हवाये दहर[6] पानी वन जाओ,
मौजों[7] की तरह लड़ो मगर एक रहो ॥

---

१. कोई पूछने वाला न था। २. राजनैतिक ३. अन्धकार। ४. प्रकाश।
५. चलन। ६. संसार की हवा। ७. लहर।

कैसे मार्मिक शब्द हैं। उपमा कैसी अनुपम है। हिन्दू मुस्लिम एकता का पक्षपाती होने के कारण अकबर कुरबानी तथा हिन्दी उर्दू का झगड़ा उठाने वालों के विरुद्ध रहते थे। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने इस प्रकार का झगड़ा उठाने वालो के कैसा चुटकीली है:—

हम उर्दू को अरबी क्यूं न करें, वो उर्दू को भाषा क्यूं न करें।
झगड़े के लिये अखबारों में, मज़मून तराशा क्यूं न करें॥
आपस में अदावत[1] कुछ भी नहीं, लेकिन एक अखाड़ा क़ायम है।
जब इससे फलक का दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यूं न करें॥

अकबर न तो मुसलमान मौलवियों के समान उर्दू में बड़े २ अरबी फारसी शब्द ठूंसने के पक्ष में थे और न आर्यसमाजियों के समान उर्दू में कठिन संस्कृत शब्दों का प्रयोग ही उचित समझते थे। आप चाहते थे कि उर्दू उर्दू ही रहे। इसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला एक और पद्य भी सुनने लायक़ है:—

झगड़ा कभी गाय का ज़बां की कभी बहस।
है सख्त मुज़िर यह नुसखये गावज़बां॥

भावार्थ यह है कि आज कल जहां देखो हिन्दू मुसलमानों में झगड़े ही दीखते हैं। कहीं कुरबानी का झगड़ा है। कहीं हिन्दी उर्दू का झगड़ा है। किन्तु यह गावज़बां का नुसखा अर्थात् गाय तथा भाषा के झगड़े दोनों के लिये हैं बहुत अहित कर। दूसरे मिसरे के 'गावज़बां' शब्द ने शेर में विशेष चमत्कार पैदा कर दिया है। गावज़बां के अर्थ गाय तथा भाषा के हैं, किन्तु साथ ही साथ गावज़बां एक प्रसिद्ध यूनानी औषधि का भी नाम है।

१. दुश्मनी।

गतवर्षों मे दशहरा और मौहर्रम एक साथ होने पर पण्डित मदन मोहन मालवीय जी के कहने से आपने जो पद्य लिखे थे वे भी सुनने योग्य हैं:—

मुहर्रम और दशहरा साथ होगा,
निबाह उसका हमारे हाथ होगा।
खुदा ही की तरफ़ से है ये संजोग,
तो बाहम क्यों न रक्खें सुलह हम लोग॥

संजोग को ईश्वर की ओर से बताकर अकबर ने आस्तिक हिन्दू मुसलमानों को आपस में मेल रखने के लिये कैसा प्रबल कारण दिया है।

अब तक भारतवर्ष की राजनैतिक समस्याओं पर ही अकबर के विचार प्रगट किये गये हैं, किन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि अकबर की दृष्टि भारतवर्ष की चारदिवारी से बाहर नही गई थी। आपने अन्तर्जातीय समस्याओं पर भी बहुत कुछ लिखा है।

अंग्रेज़ ऐतिहासिक इतिहास लिखते समय बहुधा उन घटनाओं को छिपा जाते हैं या बदल देते हैं जिनसे अंग्रेज़ों की क्रूरता प्रगट होती है और दूसरी जाति वालों पर ऐसी घटनाओं का, जिनका अस्तित्व केवल उनके मस्तिष्क ही मे होता है, उत्तर-दायित्व डाल देते हैं। काल कोठरी की घटना इसी प्रकार की घटनाओ में है। अस्तु। अंग्रेज़ ऐतिहासिकों का मत है कि इसलाम धर्म तलवार के ज़ोर से फैला है। देखिये इस इलज़ाम का जवाब अकबर ने किस मज़े से दिया है:-

अपने ऐबों की न कुछ फ़िक्र न परवा है।
ग़लत इलज़ाम बस औरों पै लगा रक्खा है॥

यही फरमाते रहे तेग़[1] से फैला इसलाम।
ये न इरशाद हुवा तोप से क्या फैला है॥

अर्थात् अपने अवगुणों पर भी दृष्टि डालिये। या दूसरों ही पर झूंठा अभियोग लगाना आता है। आप यह तो कहते रहे कि इसलाम धर्म तलवार से फैला है किन्तु यह न बताया कि तोप से क्या २ फैला है। निर्बल जातियो की स्वतन्त्रता-हरण करने का भी तो कुछ वर्णन कीजिये।

पश्चिमीय जातियां पहिले तो अस्त्र शस्त्र द्वारा निर्बल ज़ातियों की स्वतत्रता छीन लेती हैं और फिर शिक्षा देने तथा सभ्यता सिखाने के बहाने उनके अन्दर से जातीयता के भाव मिटाने की चेष्टा करती हैं। इस भाव को देखिये अकबर ने किस सुन्दरता से तथा कितने थोड़े शब्दो में व्यक्त कर दिया है:—

तोप खिसकी प्रोफ़ैसर पहुंचे।
जब बिसोला हटा तो रन्दा है॥

यदि कोई पूर्वीय जाति अपनी उन्नति करना चाहती है तो वह जाति यूरुप की दृष्टि में कांटे के समान खटकने लगती है। उस के मार्ग में अनेको रुकावटें डालने का प्रयत्न किया जाता है। पूर्वीय जातियों की इस हृदय-विदारक दशा का अकबर ने ऐसा विनोद पूर्ण चित्र उतारा है कि हंसी रोकना मुश्किल होजाता है। सुनिये क्या कहते हैं:—

सर अफराज़ी[2] हो ऊँटों की तो गरदन काटिये उनकी।
अगर बन्दर की बन आये तो फ़ैज़े[3] इरतक़ा[4] कहिये॥

१. तलवार २. बढती। ३. प्रसाद। ४. विकाश।

अकबर के राजनैतिक विचारों को पढ़ने से मालूम होता है कि आप बड़े ही निर्भीक वक्ता थे। सरकारी नौकर होते हुवे भी इस प्रकार के विचार प्रगट कर जाना आपही का काम था:-

अब आंख को खुलने में हो झपक जब मुंह में जबां जंबिश[1] से डरे।
इस क़ैद से क्यूं कर जीना हो अल्लाह ही अपना फ़ज़्ल करे॥
क्या नाज़ हो ऐसी साअ़त[2] पर अफ़सोस है ऐसी हालत पर।
या झूठ कहे या कुछ न कहे या कुफ़्र करे या कुछ न करे॥
क़ातिल को भरोसा कुव्वत का और हमको ख़ुदा की रहमत[3] का।
होना था जो कुछ वो हो ही लिया वो भी न रुका हम भी न डरे॥

६. अकबर के पत्र।

इस छोटी सी जीवनी को समाप्त करने से पहिले अकबर के पत्रों से भी पाठकों का परिचय करा देना उचित प्रतीत होता है। यूं तो स्यात् ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे कभी पत्र लिखने या लिखवाने का काम न पड़ता हो, किन्तु साधारण मनुष्यों के पत्रों तथा साहित्यज्ञों के पत्रों में आकाश पाताल का अन्तर होता है। अंग्रेज़ी आदि उत्तम भाषाओं में तो उपन्यास आदि के समान पत्र-लेखन भी साहित्य की एक महत्वपूर्ण शाखा समझी जाती है। खेद का विषय है कि हिन्दी वालों का साहित्य के इस अङ्ग की पूर्ति की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। एक भी हिन्दी लेखक या कवि ऐसा नहीं है जिसके पत्र साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण ठहराये जा सकें। और हो भी कहां से?

---

१. हिलना २. समय। ३. क्षमा।

हम लोग तो हिन्दी में पत्र लिखना अपमान-सूचक तथा अंग्रेज़ी से अनभिज्ञ होने का कारण समझते हैं। अस्तु। यद्यपि उर्दू में भी साहित्य की दृष्टि से अच्छे पत्र लिखने वाले बहुत कम साहित्य-सेवी हुये हैं, किन्तु, फिर भी ग़ालिब, आज़ाद (शम्सुल उलमा मौलवी मोहम्मद हुसैन आज़ाद) और अकबर—इन तीन लेखकों—के पत्र ऐसे हैं जो साहित्य-सेवियों में आदर की दृष्टि से देखे जा सकते हैं।

अकबर के पत्रों की भाषा बहुत ही सरल तथा सारगर्भित है। दार्शनिक समस्याओं को भी बहुत ही साधारण शब्दों में हल कर दिया है। बड़े २ भावों को दो शब्दों में व्यक्त कर दिया है। यदि किसी के विरुद्ध भी लिखा है तो इस ढंग से कि उसको किञ्चित भी बुरा न मालूम हो। आपके पत्र पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आप सामने खड़े बात कर रहे हों। पाठकों के मनोरञ्जन के लिये यहा पर आपके तीन छोटे २ पत्र उद्धृत किये जाते हैं। इनमें से पहिले दो पत्र देहली निवासी ख्वाजा हसन निज़ामी के नाम हैं और तीसरा पत्र मौलाना अब्दुल माजिद के नाम है:-

[१]

'मुकर्रमो दाम मजद कुम[१]'!

मुद्दत से आपका ख़त नही आया। हूरबानू कैसी हैं? मेरे ख़तूत पहुंचे होंगे? अपना हाल क्या लिखूं? मेरी दुनिया हो चुकी है। ज़िन्दगी बाक़ी रह गई है। उसका बसर करना दुशवार हो रहा है।

बहे जाते हैं बेमक़सूद[२] बहरे[३] जिन्दगानी मे।

१. मान्यवर! आप हमेशा बुजुर्ग रहें। २. बिना उद्देश्य। ३. समुद्र।

अमराज़ से तकलीफ़ एक तरफ़। दुनिया की सर्द महरी का आलम एक तरफ़। याराने मुवाफ़िक़ का साथ नहीं। ख़ुदाये करीम नदारद। इशरत मन्ज़िल की वीरानी और अपनी माज़ूरी पेशे नज़र। माजिद मियां जूलाई में आने वाले हैं। मैं तो ख़ुद ही यहां इशरत मियां का महमान हूं। महमां-नवाज़ी क्या करूंगा।

एक ख़त में एक फ़िक़रा लिख गया हूं। इख़्तसार और मानी को देखिये। इशरत मियां चाहते हैं कि आराम से रहूं, ख़ुश रहूं। लेकिन आराम की उम्र नहीं। ख़ुशी की अमलदारी नहीं। ग़ालिबन इस फ़िक़रे को आप लिट्रेरी और पब्लिक माल क़रार दें।

अकबर-प्रतापगढ़ १६ जून सन् १६२१ ई०।

[२]

मुकर्रमी[१] ! फ़तवाये फ़ितरत यही है कि देहली में रहिये। तकलीफ़ें उठाइये। या सलीक़ा नौकर हम लोगों के लिये उनका होते जाते हैं। फ़ारसी भूल जाइये, ग़ुस्सा कम हो जाय। मेरठ का सफ़र भी इस मौसम में ज़हमत[२] से ख़ाली न हुआ होगा। नवाब साहब के मोटर से गिरने का अफ़सोस हुआ। अपना शेर याद आया :—

अज़मत[३] तक़लीदे[४] मग़रिब का हुनर के ज़ोर में।
लुत्फ़ क्या है लद लिये मोटर पे ज़र के ज़ोर में॥

नवाब साहब को आपने फ़रिश्ता सिफ़त लिखा है। मैं मानता हूं इससे भी ज़्यादा। फ़रिश्ते सिर्फ़ नेक और मुक़द्दस[५] होते हैं। अक्ल की उनको ज़रूरत नहीं क्योंकि सिर्फ़ हुक्मे ख़ुदा की तामील कर देते हैं। नवाब साहब अक्लमन्द भी हैं। मेरे फ़हीम

१ मान्यवर। २ कष्ट। ३ इरादा। ४ अनुगमन। ५ पवित्र।

इनायत फ़रमा हैं। हूर[1] को फिर बुला लीजियेगा। उर्दू आजाय। मज़हब से वाक़िफ़ होजाय। बस काफ़ी है। बहुत प्यारी लड़की है और वाजिब उल रहम है।

अकबर—इलाहाबाद २२ मई सन् १९१२ ई०

[३]

इलाहाबाद—२८ अगस्त सन् १९१७ ई०

अज़ीज़ मुकर्रम सलमा अल्लाह ताला! आपने ख़ूब लिखा की निस्बत। भला देखिये तो जो शख़्स हाफ़िज़[2] को बद कहे उसको क्या कहूं? मगर मजबूरी है।

अफ़सोस है कि आप से मुझ से क़ब्ल रवानगी हैदराबाद⋯ ⋯ मुलाक़ात न होगी। ख़ैर, अल्लाह आपको कामयाब करे। मैं क्या? मेरी ज़िन्दगी क्या?

फलक[3] मश्शाक है पैहम[4] नया जलवा दिखाने में।
जमीं को देर क्या गुज़रे हुवों को भूल जाने में॥

लखनऊ पहुंचा तो आपके बग़ैर सूना नज़र आयगा। ख़तीब भेजता हूं। बाद मुलाहज़ा वापिस फ़रमाइये। हैदराबाद से ख़त लिखियेगा। ख्वाजा ग़ुलाम हुसैन साहब का इन्तक़ाल इबरत-अङ्गेज़ है। वह मुझ से भी मिले थे। लेकिन भूल जाने में दुनिया को देर न लगेगी। क्या राज़ हस्ती है। ख़ुदा गोर की फ़ुरसत दे। मालूम हुवा कि आपके दोस्त ख्वाजा साहब को चीफ़ कमिश्नर ने अपने सूबे में क़ैदे निगरानी से बरी कर दिया। काश यहां भी ऐसा हो। वर्न साहब लखनऊ कब आयेंगे? कब तक रहेंगे।

अकबर

१. ख्वाजा साहब की लड़की का नाम है, २ फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि
३ आकाश ४. लगातार

निस्सन्देह अकबर अपने समय के उर्दू के सब से बड़े तथा अनुपम कवि थे। आपकी मृत्यु से उर्दू साहित्य को जो हानि पहुंची है उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। खेद की बात तो यह है कि शीघ्र ही आपके स्थान की पूर्ति की कोई आशा नहीं दिखाई देती। आपके स्वर्गवास ने बहुत दिनों के लिये उर्दू समाज को सूना कर दिया है—

कोई बैठ के लुत्फ़ उठायगा क्या।
कि जो रौनके बज़्म तुम्हीं न रहे॥

—अकबर

महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य।

धर्म, तत्त्वज्ञान तथा उपदेश।

१. कमसिन हो अभी तजरुबा दुनिया का नहीं है।
तुम खुद ही समझ जाओगे कि खुदा भी है कोई चीज़ ॥१॥
तदबीर सदा रास्त जो आती नहीं अकबर।
इन्सान की ताक़त के सिवा भी है कोई चीज ॥२॥
मैंने कहा क्यूं लाश पै आक़ा की है मरता।
होटल की तरफ़ जा कि गिज़ा भी है कोई चीज़ ॥३॥
कुत्ते ने कहा कि हो ये जहालत कि तास्सुब।
लेकिन मेरे नज़दीक वफ़ा भी है कोई चीज़ ॥४॥

शब्दार्थ—कमसिन-कम उम्र. रास्त न आना-ठीक न पड़ना. आक़ा-स्वामी. जहालत-मूर्खता. तास्सुब-पक्षपात ॥

२. जो मिल गया वो खाना दाता का नाम जपना।
इसके सिवा बताऊं क्या तुम को काम अपना ॥१॥
रोना है तो इसका कोई नहीं किसी का।
दुनिया है और मतलब मतलब है और अपना ॥२॥

अय बिरहमन हमारा तेरा है एक आलम।
हम ख्वाब देखते हैं तू देखता है सपना ॥३॥
बे इश्क़ के जवानी कटनी नहीं मुनासिब।
क्यूंकर कहूं कि अच्छा है जेठ का न तपना ॥४॥

शब्दार्थ—आलम-दशा।

३ अजल से वो डरें जीने को जो अच्छा समझते हैं।
यहां हम चार दिन की ज़िन्दगी को क्या समझते हैं ॥१॥
यक़ीं कुफ़्फार को आता नहीं रोज़े कयामत का।
इसे भी वो तुम्हारा वादये फ़रदा समझते हैं ॥२॥
मैं अपने नक़्द दिल से जिन्से उल्फ़त मोल लेता हूं।
अतिब्बा को ज़रा देखो इसे सौदा समझते हैं ॥३॥
इसे हम आख़िरत कहते हैं जो मशग़ूले हक़ रक्खे।
ख़ुदा से जो करे ग़ाफिल उसे दुनिया समझते हैं ॥४॥

शब्दार्थ—कुफ्फ़ार-नास्तिक, क़यामत-ईश्वरीय न्याय का दिन, फ़रदा-कल, उल्फत-प्रेम, अतिब्बा-वैद्य, सौदा-पागलपन, आ'खिरत-परलोक।

४. मुश्ताक़ नहीं ज़िन्दगी के।
मरना है तो क्या करेंगे जीके ॥१॥
पाई न किसी में बू वफ़ा की।
चाहा था कि हो रहे किसी के ॥२॥
तौहीद का मसला है असली।
बाक़ी हैं शगूफे हिस्ट्री❀ के ॥३॥
रिन्दी किस काम की ये अकबर।
मिलते ही नहीं जब किसी से पीके ॥४॥

शब्दार्थ-मुश्ताक़-इच्छुक, तौहीद-अद्वैत, शगूफे-समस्यायें, रिन्दी-मस्ती।

❀ History

५. हो मुझ पै बुतों की चश्मे करम दिल को ये तलब इस्ला न रही।
मुझको भी खुदा ने ग़ैरत दी उनको जो मेरी परवा न रही ॥१॥
दुनिया का तरद्दुद जबतक था जबतक कि हम उसके तालिब थे।
फेरी जो नज़र ग़म हो गये कम रग़बत न रही दुनिया न रही ॥२॥
सच पूछिये तो राहत ही मिली दुनिया से जुदा हो जाने में।
थोड़ी सी उदासी है भी तो हो आफ़त तो मगर बरपा न रही ॥३॥

शब्दार्थ-चश्मे करम-कृपा दृष्टि. तलब-इच्छा. इस्ला-बिल्कुल. तरद्दुद-दुःख.
तालिब-इच्छुक।

६ फिलसफ़ी को बहस के अन्दर खुदा मिलना नहीं।
डोर को सुलझा रहे हैं और सिरा मिलता नहीं ॥१॥
मारफ़त ख़ालिक़ की आलम में बहुत दुशवार है।
शहरे तन में जब कि खुद अपना पता मिलता नहीं ॥२॥
ग़ाफ़िलों के लुत्फ़ को काफ़ी है दुनियावी खुशी।
आक़िलों को बे ग़मे उक़बा मज़ा मिलता नहीं ॥३॥

शब्दार्थ-मारफत-ज्ञान ख़ालिक़-विधाता उक़बा-परलोक।

७. सब जानते हैं इल्म से है ज़िन्दगिये रूह।
बेइल्म है अगर तो वो इन्सां है नातमाम ॥१॥
बेइल्म बेहुनर है जो दुनिया में कोई क़ौम।
नेचर का इक्तज़ा है रहे बनके वो ग़ुलाम ॥२॥
तालीम अगर नही है ज़माने के हस्ब हाल।
फिर क्या उम्मीदे दौलतो आरामो अहतराम ॥३॥

शब्दार्थ-इक्तजा-तक़ाजा. हस्ब हाल-समय के अनुसार अहतराम-मान।

८. कुछ ग़र्ज़ और है अहबाब न इस शक में रहें।
बस ये है शौक़ कि पब्लिक की झकझक मे रहें ॥१॥
नहीं मंज़ूर नमाज़ो मे गुज़ारें रातें।
हां कमेटी हो तो उलझे हुवे झक २ में रहे ॥२॥
नग़मये मुर्ग़ सहर से नहीं अन्जन को ग़रज़।
पेट अङ्गारों से भर दीजिये भक भक में रहे ॥३॥

शब्दार्थ—नग़मये मुर्ग़े सहर-प्रात काल के मुर्ग़े की आवाज़।

९. बस यही काम सब को करना है।
यानी जीना है और मरना है ॥१॥
अब रही बहस रंजो राहत की।
ये फ़क़त वक्त का गुज़रना है ॥२॥
सब से बदतर बुतों से है उम्मीद।
सब से बेहतर ख़ुदा से डरना है ॥३॥

१०. ये शेख़ अकबर से इतना क्यूं ख़फ़ा है?
ये क्यों ग़ैज़ो ग़ज़ब जौरो जफ़ा है ॥१॥
नहीं है इसमें झगड़े की कोई बात।
ये एक क़ौले हकीमे बासफ़ा है ॥२॥
न हो मज़हब में जब ज़ोरे हकूमत।
तो वो क्या है फ़क़त एक फ़िलसफ़ा है ॥३॥

११. आफ़िशल आमालनामे की न होगी कुछ सनद।
हश्र में तो नामये आमाल देखा जायगा ॥१॥
बच रहे ताऊन से तो अहले ग़फ़लत बोल उठे।
अब तो मौहलत है फिर अगले साल देखा जायगा ॥२॥

तह करो साहब नसबनामे वो वक्त आया है अब।
बे असर होगी शराफ़त माल देखा जायगा ॥३॥

शब्दार्थ—नामये आमाल-कर्मों का लेखा। नस्बनामे-वंशावलि ॥

१२. क्या है मज़हब एक मुल्की और सोशल इन्तज़ाम।
ये नहीं पहचान हरगिज़ काफ़िरो दीनदार की ॥१॥
सूरतो अलफाज़ का अकसर नहीं है ऐतबार।
हैं फ़क्त ये आदतें रफ्तार की गुफ्तार की ॥२॥
हैं हर एक मज़हब में कुछ काफ़िर भी कुछ दीनदार भी।
याद रख तू बात ये एक महरमे इसरार की ॥३॥

शब्दार्थ-महरमे इसरार-रहस्य जानने वाला ॥

१३. फ़िलसफ़ी तजरुबा करता था हुवा मैं रुख़सत।
मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं ॥१॥
कह दिया मैंने हुवा तजरुबा मुझको तो यही।
तजरुबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं ॥२॥

१४. हर ख़ाक के पुतले को उभारा है फ़लक ने।
यकताई के इज़हार में मस्त अहले ज़मीं हैं ॥१॥
हर एक को ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज़।
और हम को ये नाज़ कि हम कुछ भी नहीं हैं ॥२॥

शब्दार्थ-फलक-आकाश. यकताई-अद्वितीयता. अहले जमीं-पृथ्वी वाले।

१५. किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस बाब में झगड़ा।
करो तुम ध्यान परमेश्वर का दिल को उसका दर्शन हो ॥१॥
मगर मुश्किल तो है नाम सब लेते हैं मज़हब का।
गरज़ लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो ॥२॥

१६. मैं तो हमदर्द हूं बस उनकी गिरफ्तारी का।
कैदे हस्ती से जो मुश्ताक़ हैं आज़ादी के ॥१॥
ढूंढना चाहिये था अकबरे बेकस को वहां।
एक वीराना भी है मुत्तस्लि आबादी के ॥२॥

शब्दार्थ-हस्ती-अस्तित्व, मुत्तसिल-निकट।

१७ इस मौत के आगे अब अकबर मशग़ूलिये दुनिया कुछ भी नहीं।
सब कुछ जिसे हम समझे थे अभी दमभर में तो देखा कुछ भी नहीं ॥१॥
तद्बीर की कोई हद न रही और बिल आख़िर कहना ही पड़ा।
अल्लाह की मरज़ी सब कुछ है बन्दे की तमन्ना कुछ भी नहीं ॥२॥

१८ अंधेर मचा है ज़ेरे फ़लक ख़लक़त भी है चुप और आज भी चुप।
हम देख रहे हैं आंखों से पर कल भी थे और आज भी चुप ॥१॥
साहबज़ादे नशे मे हैं और बीफ़* कुंवर जी की है टिफ़न।
हैं मौलवीसाहब क़िबलाभी चुप और पण्डितजीमहाराजभी चुप ॥२॥

शब्दार्थ-बीफ-गाय का गोश्त।

१९. पेच मज़हब का किसी साहब ने ढीला कर दिया।
सादा तबओं को भी रंगीला कर दिया ॥१॥
शौक़ पैदा कर दिया बंगले का और पतलून का।
वो मसल है मुफ़लिसी में आटा गीला कर दिया ॥२॥

२०. जनाबे शेख़ से जाकर ज़रा लिल्लाह कह देना।
कि गुमराही थी मुझ से रिन्द को गुमराह कह देना ॥१॥
बहुत मुश्किल है बचना बादये गुलगूं से खिलवत में।
बहुत आसान है यारों में मआज़-अल्लाह कह देना ॥२॥

शब्दार्थ-गुमराह-भ्रष्ट, बादये गुलगूं-सुर्ख शराब, मआज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण।

---

* Beef

२१ मुनकिर हैं रूह के जो ये अहले गरूर।
एक अमर है पूछना हमें उन से जरूर ।१।
है फ़हमा ख़िर्द का तुमको दावा ये कहां।
पैदा हुवा माद्दे में क्यू कर ये शऊर ।२।

शब्दार्थ-मुनकिर-इन्कार करने वाले. फहमो-समझ. खिर्द-बुद्धि ।

२२ चाल दुनिया की तुम्हें महसूस हो दुश्वार है।
ये ज़मीं चलती है तेजी से मगर हिलती नहीं ॥१।
दिल के जो दुश्मन हैं उनके शौक़ में रहती है आंख।
जान का मालिक जो है उससे नज़र मिलती नहीं ॥२।

शब्दार्थ-महसूस-अनुभव. दुश्वार-कठिन।

२३ खाने से अगर जीना होता मरते न कभी जीने वाले।
खाना भी ख़ुदा के हुक्म से है जीना भी ख़ुदा के हुक्म से है ॥१॥
ईमान से उल्फ़त रखता हू शैतान को दुश्मन जानता हूं।
उल्फ़त भी ख़ुदा के हुक्म से है कीना भी ख़ुदा के हुक्म से है ॥२॥

शब्दार्थ-उल्फत-प्रेम. कीना-द्वेष।

२४ दिल मेरा जिस से बहलता कोई ऐसा न मिला।
बुत के बन्दे मिले अल्लाह का बन्दा न मिला ॥१॥
सय्यद उठे जो गज़ट लेकर तो लाखों लाये।
शेख़ कुरआन दिखाते फिरे पैसा न मिला ।२।

२५ इनक़लाबे जहा को देख लिया।
हुब्बे दुनिया से क़ल्ब पाक हुवा ॥१॥
कल कली खिल के हो गई थी फूल।
फूल कुम्हला के आज ख़ाक हुवा ॥२॥

शब्दार्थ-इनकलाब-परिवर्तन. हुब्बे दुनिया-संसार का प्रेम. कल्ब-दिल।

२६ है सब्रो क़नाअत एक बड़ी चीज़।
लज्ज़त अभी उसको तूने चक्खी है कहां ॥१॥
दुनिया तलबी के वाज़ में मह्व है तू।
ये तो ज़रा समझ कि रक्खी है कहां ॥२॥

शब्दार्थ—क़नाग्रत-संतोष. वाज-उपदेश. महव-निमग्न।

२७ कहा बुक़रात से दुनिया मे क्यूं आया तू अय दाना।
कहा उसने कि मैं लाया गया मुझको पड़ा आना ।१।
कहा क्यूंकर बसर की उम्र बोला साथ हैरत के।
कहा क्या जाना ? बोला कुछ नही जाना यही जाना।

शब्दार्थ—हैरत-आश्चर्य।

२८. अकबर से मैंने पूंछा अय वाइज़े तरीक़त।
दुनियाये दूं से रक्खूं मैं किस क़दर ताल्लुक़ ।१।
उसने दिया बलागत से ये जवाब मुझको।
अङ्गरेज़ को है नेटिव से जिस क़दर ताल्लुक़ ।२।

२९. इल्मो हिकमत में हो गर ख़्वाहिशे फ़ेम।
सरकार की नौकरी को हरगिज़ न कर एम* ।१।
शादी न कर अपनी क़ब्ल तहसीले अलूम।
बुत हो कि परी हो ख़्वाह वो हो कोई मेम ।२।

शब्दार्थ—कब्ल-पूर्व. तहसीले अलूम-विद्या प्राप्ति।

३०. कुछ सनअतो हिरफ़त पै भी लाज़िम है तवज्जह।
आख़िर ये गवर्नमैंन्ट से तनख़्वाह कहां तक ।१।
मरना भी ज़रूरी है ख़ुदा भी है कोई चीज़।
अय हिर्स के बन्दे हविसे जाह कहां तक ।२।

शब्दार्थ—जाह-पद, ओहदा।

---

* Aim

३१ ग़फ़लत की हँसी से आह भरना अच्छा।
अफ़आले मुज़िर से कुछ न करना अच्छा ॥१॥
अकबर ने सुना है अहले ग़ैरत से येही।
जीना ज़िल्लत से हो तो मरना अच्छा ॥२॥

शब्दार्थ-अफआल-कार्य, मुज़िर-हानिकारक।

३२ जो अपनी जिन्दगानी को हुबाब आसा समझते हैं।
नफ़स की मौज को मौजे लवे दरिया समझते हैं ॥१॥
जो हैं अहले वसीरत इस तमाशा गाहे हस्ती मे।
तिलस्मे जिन्दगी को खेल लड़कों का समझते हैं ॥२॥

शब्दार्थ-हुबाव आसा-बुलबुले के समान, नफस-सास, अहले वसीरत-ज्ञानी।

३३ जब लुत्फो करम से पेश आये महबूब।
अगले रञ्जों को भूल जाना अच्छा ॥१॥
जब मिस्ले नसीम वो गले से लग जाये।
मानिन्द कली के फूल जाना अच्छा ॥२॥

शब्दार्थ-लुत्फो करम-मेहरबानी, महबूब-प्यारा, नसीम-प्रात काल की वायु।

३४ क्या तुम से कहे जहां को कैसा पाया।
ग़फ़लत ही मे आदमी को डूबा पाया ॥१॥
आखें तो वेशुमार देखीं लेकिन।
कम थीं वखुदा कि जिन को बीना पाया ॥२॥

शब्दार्थ-बीना-वास्तविकता को देखने वाली।

३५. हर एक को नौकरी नहीं मिलने की।
हर बाग में ये कली नहीं खिलने की ॥१॥
कुछ पढ़के तू सनअतो ज़राअत को देख।
इज़्ज़त के लिये काफ़ी है अय दिल नेकी ॥२॥

शब्दार्थ—सनअत-शिल्प। जराअत-कृषि।

३६. आला मक़सूद चाहिये पेशे नजर।
कोशिश तेरी गो हो लुत्फ़े ज़ाती के लिये ॥१॥
फ़रहाद पहाड़ पर अमल करता था।
शीरीं के लिये कि नाशपाती के लिये ॥२॥

शब्दार्थ-आला-उच्च। मक़सद-उद्देश्य।

३७ नफ़्स के ताबअ् हुवे ईमान रुख़सत हो गया।
वो जनाने में घुसे मेहमान रुख़सत हो गया ॥१॥
मय उन्होंने पी अब उनके पास क्यूंकर दिल लगे।
जानवर इक रह गया इन्सान रुख़सत हो गया ॥२॥

शब्दार्थ—नफ़्स-वासना। ताबअ-अनुयायी। मय-शराब।

३८. ऊंचा नीयत का अपनी ज़ीना रखना।
अहबाब से साफ़ अपना सीना रखना ॥१॥
गुस्सा आना तो नेचरल† है अकबर।
लेकिन है शदीद ऐब कीना रखना ॥२॥

शब्दार्थ-अहबाब-मित्रगण. नेचरल-प्राकृतिक. शदीद-सख्त. कीना-द्वेष॥

३९. औरो की कही हुई जो दोहराते हैं।
वो फ़ोनोग्राफ़ की तरह गाते हैं ॥१॥
खुद सोच के हस्ब हाल मजमून निकाल।
इन्सान यूंही तरक़्क़ियां पाते हैं ॥२॥

४० ग़फ़लत को छोड़ दीजिये कुछ काम कीजिये।
इल्मो हुनर से नाम का अन्जाम कीजिये ॥१॥
गर कुछ नहीं तो हज़रते अकबर का क़ौल है।
मुर्दों के साथ क़ब्र में आराम कीजिये ॥२॥

† Natural

४१. हासिल करो इल्म तबअ् को तेज करो ।
बातें जो बुरी हैं उन से परहेज करो ॥१॥
क़ौमी इज़्ज़त है नेकियों से अकबर ।
इसमें क्या है कि नक़्ले अङ्गरेज करो ॥२॥

४२. रोज़ी मिल जाय मालो दौलत न सही ।
राहत हो नसीब शानो शौकत न सही ॥१॥
घरबार में ख़ुश रहें अज़ीज़ों के साथ ।
दरबार में बाहमी रक़ाबत न सही ॥२॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, नसीब-प्राप्त, अजीज-प्यारा, बाहमी रक़ाबत-पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता ।

४३ ख़ातिर मज़बूत दिल तवाना रक्खो ।
उम्मीद अच्छी ख़याल अच्छा रक्खो ॥१॥
हो जायेगी मुश्किले तुम्हारी आसान ।
अकबर अल्लाह पै भरोसा रक्खो ॥२॥

शब्दार्थ—तवाना-मजबूत ।

४४ गर जेब मे ज़र नहीं तो राहत भी नहीं ।
बाज़ू में सक्त नहीं तो इज्ज़त भी नहीं ॥१॥
गर इल्म नहीं तो ज़ोरो ज़र है बेकार ।
मज़हब जो नहीं तो आदमियत भी नहीं ॥२॥

शब्दार्थ—सक्त-ताक़त ।

४५ दौलत वो है जो अक़्लो मेहनत से मिले ।
लज्ज़त वो है कि जोशे सेहत से मिले ॥१॥
ईमां का हो नूर दिल में वो राहत है ।
इज़्ज़त वो है जो अपनी मिल्लत से मिले ॥२॥

४६ आमाल के हुस्न से संवरना सीखो।
अल्लाह से नेक उम्मीद करना सीखो ॥१॥
मरने से मफ़र नहीं है जब अय अकबर।
बेहतर है यही ख़ुशी से मरना सीखो ॥२॥

शब्दार्थ—मफर-भागने की जगह।

४७. आज़ाद से दीन का गिरफ़्तार अच्छा।
शरमिन्दा हो दिल में जो गुनहगार अच्छा ॥१॥
हरचन्द कि ज़ोर भी है एक खसलते बद।
वल्लाह बेहया से मक्कार अच्छा ॥२॥

शब्दार्थ—दीन-धर्म।

४८. मर्द को चाहिये क़ायम रहे ईमान के साथ।
ता दमे मर्ग रहे यादे ख़ुदा जान के साथ ॥१॥
मैंने माना कि तुम्हारी नहीं सुनता कोई।
सुर मिलाना तुम्हें क्या फ़र्ज़ है शैतान के साथ ॥२॥

शब्दार्थ—ता दमे मर्ग-मृत्यु पर्यन्त।

४९. हजूमे बुलबुल हुवा चमन में,
किया जो गुल ने जमाल पैदा।
कमी नहीं कद्रदां की अकबर,
करे तो कोई कमाल पैदा ॥

५०. निसार अपने तसव्वुर के कि जिसके फ़ैज़ से हरदम।
जो ना पैदा है नजरों से उसे पैदा समझते हैं ॥१॥

५१ लताफ़त को न छोड़े रङ्ग तेरी शादी ओ गम का।
हँसी आये तो फूलों की जो रोना हो तो शबनम का॥

५२ कामयाबी हो गई तो बेवकूफ़ी पर भी नाज़।
और जो नाकामी हुई अक़्ल भी शरमिन्दा है॥

शब्दार्थ—नाज-गर्व।

५३ हमारे ज़हन को इस मिसरये अकबर पै मस्ती है।
खुश अख़्लाक़ो इबादत है ख़ुशामद बुत परस्ती है॥

५४ जुस्तजू हमको आदमी की है।
वे किताबें अबस मंगाते हैं॥

शब्दार्थ—जुस्तजू-खोज। अबस-व्यर्थ॥

५५ निगाहें क़ाबिलों पर पड़ ही जाती हैं ज़माने मे।
कहीं छिपता है अकबर फूल पत्तो में निहा होकर॥

शब्दार्थ—निहा-छिपना॥

५६. हक़ीक़त ज़ीस्त की पीरी में हम समझे तो क्या समझे।
बड़ा धोका दिया ज़ालिम ने दुनिया से खुदा समझे॥

शब्दार्थ—जीस्त-जीवन। पीरी-बुढापा।

५७ न किताबों से न कालिज के है दर से पैदा।
दीन होता है बज़ुर्गों की नज़र से पैदा॥

शब्दार्थ—दर-द्वार। दीन-धर्म॥

५८ जुदाई ने 'मै' बनाया मुझको जुदा न होता तो मैं न होता।
ख़ुदा की हस्ती है मुझ से साबित ख़ुदा न होता तो मैं न होता॥

५६ नज़र उनकी रही कालिज में बस इल्मी फ़वायद पर।
गिरा कीं चुपके चुपके बिजलियां दीनी अक़ायद पर॥

शब्दार्थ—फवायद-लाभ, दीनी अक़ायद-धार्मिक सिद्धान्त॥

६० टट्टू पै जिस तरह से हो ताज़ी का साज़ बोझ।
यूं बाबुआने हिन्द पै है अब नमाज़ बोझ॥

६१. पेच मज़हब का किसी साहब ने ढीला कर दिया।
सादा तबओं को भी रङ्गीला कर दिया॥१॥
शौक़ पैदा कर दिया बङ्गले का और पतलून का।
वो मिस्ल है मुफ़लिसी में आटा गीला कर दिया॥२॥

६२. तमाशा देखिये बिजली का मग़रिब और मशरिक़ में।
कलों में है वहां दाख़िल यहां मज़हब पै गिरती है॥

६३. जो मुज़तरिब है उसको इल्तफ़ात है।
आख़िर ख़ुदा के नाम में कोई तो बात है॥

शब्दार्थ-मुजतरिब-परेशान, इल्तफात-आनन्द॥

६४ गो हमनफ़स अपने उठ गये सब दमसाज़ हमारी आह तो है।
कोई जो हमारा रह न गया ईमान तो है अल्लाह तो है॥

शब्दार्थ-हमनफस, दमसाज-मित्र॥

६५. हमेशा कहता था हर बात पर 'नमीदानम' ।
कुछ इसमें शक नही अकबर बड़ा ही आलिम था ॥

शब्दार्थ—नमीदानम-मैं कुछ नहीं जानता. आलिम-विद्वान ॥

६६ वही कानूने फ़ितरत है जिसे तकदीर कहते हैं।
जिसे क़िस्मत समझते हैं वो तद्बीरों का हासिल है ॥

शब्दार्थ-फ़ितरत-प्रकृति ।

६७. सखुन-तर्जी का क्या कहना मगर ये याद रख अकबर ।
जो सच्ची बात होती है वही दिल में उतरती है ॥

६८ फ़िलासफ़ी के मुकालमों मे किसी ने ये ख़ूब ही कहा है।
जो तन्दुरुस्ती हो तेरी अच्छी तो सास हो में बड़ा मज़ा है॥

६६ हरम में दम बखुद बैठा तो अकबर ने किया अच्छा ।
वो क्यूं बेसूद बुतख़ाने में आहे नारसो खींचे ॥

शब्दार्थ-हरम-घर, बेसूद-व्यर्थ । नारसा-न पहुचने वाली, प्रभाव हीन ।

७० किया है जिसने आलम को पैदा, उसको क्या कहिये ।
ख़िर्द खामोश है और दिल ये कहता है ख़ुदा कहिये ॥

शब्दार्थ-खिद-बुद्धि ।

७१ कह दिया मैंने कि हू और यह नहीं समझा कि क्या ।
इस खुदी का हश्र क्या होता है देखा चाहिये ॥

शब्दार्थ-खुदी-आत्मज्ञान । हश्र-परिणाम ॥

७२ ख़ुदाई तेरी है हम भी हैं अय ख़ुदा तेरे।
मुसीबतों में पुकारें किसे सिवा तेरे॥

७३ ज़ुबान खोली है महफ़िल में वाह २ के लिये।
कभी तो बन्द कर आंखों को भी ख़ुदा के लिये॥

७४ हिस्ट्री* की क्या ज़रूरत है मज़हब की तालीम को।
अञ्जमो शम्सा क़मर काफ़ी थे इब्राहीम को॥

शब्दार्थ-अञ्जम-तारे. शम्स-चांद. क़मर-सूर्य॥

७५. आता है वज्द मुझको हर दीन की अदा पर।
मसजिद मे नाचता हू नाक़ूस की सदा पर॥

शब्दार्थ—नाक़ूस-शंख. सदा-आवाज॥

७६ ख़ुदा ने अक़्ल की नामत अता की मेहरबां होकर।
अदाये शुक्र कर दीवानये हुस्ने बुतां होकर॥

७७ बेसाख़्ता आती है मुसीबत में ये लब पर।
फ़ितरत ही की जानिब से दुआ भी है कोई चीज॥

शब्दार्थ-फ़ितरत-प्रकृति. बेसाख़्ता-आप ही आप. लब-होठ. दुआ-प्रार्थना॥

७८ बरसों का छोड़ती है साथ ज़ालिम।
कहते हैं उम्र जिस को माशूक़े बेवफ़ा है॥

---

* History

७६ कभी लरजता हू कुफ्र से मैं कभी हूं कुरबान भोलेपन पर।
खुदा के देता हू वास्ते जब तो पूछता है वो बुत खुदा क्या ॥

शब्दार्थ-लरजना-कापना, कुफ्र-नास्तिकता, कुरबान-न्यौछावर।

८०. ये बुत पिन्हां नहीं होते खुदा जाहिर नही होता।
गनीमत वो जमाना है कि मैं काफ़िर नहीं होता॥

शब्दार्थ—पिन्हा होना-छिपना, काफिर-नास्तिक।

८१ कोई कहता नहीं सैयाह हूं फितरत का माहर हू।
यहीं तक फख्र की हद है डिप्टी हू नाजिर हू॥

शब्दार्थ-सैयाह-यात्री, फितरत-प्रकृति, माहिर-जानने वाला।

८२. सदियों फिलासफी की चुनाचुनी रही।
लेकिन खुदा की बात जहां थी वहीं रही॥

८३ मैं तो कहता था यही और कहूंगा यही।
बात वो खूब है जो अल्लाह से नजदीक करे॥

८४. साइन्स से जियादा है मजहब की जड़ बड़ी।
तोपों की मार से भी खुदा की पकड़ बड़ी॥

८५. मैं ये नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती।
कहता हू कि वे हुक्मे खुदा कुछ नही करती॥

८६. अतिब्बा को तो अपनी फीस लेना और दवा देना।
खुद का काम है लुत्फो करम करना शफा देना॥

शब्दार्थ-अतिब्बा-वैद्य, लुत्फो करम-दया, शफा-आराम॥

८७. किसी के मरने से ये न समझो कि जान वापिस नहीं मिलेगी।
बईद शाने करीम से है किसी को कुछ देके छीन लेना॥

शब्दार्थ—बईद-विरूद्ध। करीम-दयालु।

८८. मिटा दो रंगे वहदत में ख़ुदी का नक़शा अय अकबर।
अगर साबित किया चाहो तुम अपना मौतबिर होना॥

शब्दार्थ—वहदत-अद्वैत. ख़ुदी-आत्म-भाव। मौतबिर-विश्वास-पात्र।

८९. सेठ जी को फ़िक्र थी एक एक के दस कीजिये।
मौत आ पहुंची कि हज़रत जान वापिस कीजिये॥

९०. मैं जिसे समझा हूं "मैं" वे नफ़्स की हैं ख़्वाहिशें।
"मैं" हक़ीक़त में है जो मुझ से निहायत दूर है॥

९१. असल अल्लाह से लगावट है।
वरना मज़हब में सब बनावट है॥

९२ सदाक़त के निशां इस मिसरये अकबर में मिलते हैं।
कले साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं॥

९३ ख़ुदाकी हस्ती की याद रखना और अपनी हस्तीको भूल जाना।
नज़र उसी पर है और बातों को मैंने अपनी फ़िज़ूल जाना॥

शब्दार्थ—हस्ती-अस्तित्व।

६४ ग़ौर से देखो ज़मीं वो आस्मां को मुन्किरों।
चल भी सकता मे ख़ुदा के इन्तज़ाम इतना ॥

शब्दार्थ—मुन्किरों-नास्तिकों।

६५ हज़ार साइन्स रंग लाये हज़ार क़ानून हम बनायें।
ख़ुदा की क़ुदरत यही रहेगी हमारी हैरत यही रहेगी ॥

६६ मज़हब के ये मुबाहस निकले हैं हिस्ट्री✤ से।
उनको है क्या ताल्लुक़ वहदत की 'मिस्ट्री'* से ॥

शब्दार्थ-वहदत-अद्वैत। मिस्ट्री-भेद। मुबाहस-शास्त्रार्थ।

६७ मज़ा भी आता है दुनियां से दिल लगाने में।
सज़ा भी मिलती है दुनियां से दिल लगाने की ॥

६८ खाने से अगर जीना होता मरते न कभी जीने वाले।
खाना भी ख़ुदा के हुक्म से है जीना भी ख़ुदा के हुक्म से है ॥
ईमान से उल्फ़त रखता हूं शैतान को दुश्मन जानता हूं।
उल्फत भी ख़ुदा के हुक्म से है कीना भी ख़ुदा के हुक्म से है ॥

शब्दार्थ-उल्फत-प्रेम. कीना-द्वेष।

६८ जुग़राफ़िये से हाले गवर्न्मेन्ट पूछिये।
हम तो ये जानते हैं ख़ुदाई ख़ुदा की है ॥

६६. कुफ़्रो इसलाम की तफ़रीक़ नहीं फ़ितरत मे।
ये वो नुक्ता है जिसे मैं भी बमुशकिल समझा ॥

शब्दार्थ-फितरत-प्रकृति. नुकता-बारीक बात।

✤ History. * Mystery.

१००. निज़ामे आलम बता रहा है कि है इसका बनाने वाला।
जहूरे आदम दिखा रहा है कि दिल में है कोई आने वाला॥

शब्दार्थ—निजाम-प्रबन्ध.

१०१. ये मिसरा चाहिये लिखना बयाज़े चश्मे वहदत में।
ख़ुदा का इश्क़ है इश्क़े मजाज़ी भी हक़ीक़त में॥

शब्दार्थ-बयाज-कापी. चश्म-आंख. वहदत-अद्वैत।

१०२. शोर क्यों गबरो मुसलमां ने मचा रक्खा है।
दैर में कुछ नही काबे में क्या रक्खा है॥

शब्दार्थ-गब्र-प्रतिमा पूजक. दैर-मन्दिर.

१०३. दिखलाते हैं बुत जलवये मस्ताना किसी का।
यहां काबये मक़सूद है बुतख़ाना किसी का॥

शब्दार्थ-मक़सूद-इष्ट।

१०४. मेरी नाकामयाबी की कोई हद हो नहीं सकती।
सदाक़त चल नहीं सकती ख़ुशामद हो नहीं सकती॥

१०५. हुस्न है बेवफ़ा भी फ़ानी भी।
काश समझे इसे जवानी भी॥

शब्दार्थ-फानी-नश्वर. काश-कहीं ऐसा हो।

१०६. रगे हाफ़िज़ पै बहक जाते हैं अरबाबे मजाज़।
ये समझते नहीं वो बादापरस्ती क्या थी॥

शब्दार्थ—हाफिज-फारसी के प्रसिद्ध कवि जो बड़े ईश्वर-भक्त थे॥
अरबाबे मजाज-झूठा प्रेम रखने वाले। बादा परस्ती-मद्यपान।

१०७. फ़ना का दौर जारी है मगर मरते हैं जीने पर।
तिलस्मे ज़िन्दगानी भी अजब एक राज़े फ़ितरत है॥

शब्दार्थ–फना-मृत्यु, राजे फितरत-प्रकृति का रहस्य।

१०८. ख़ुदा का घर बनाना है तो नक़्शा ले किसी दिल का।
ये दीवारों की क्या तजवीज़ है ज़ाहिद ये छत कैसी॥

१०९ जो देखी हिस्ट्री इस बात पर कामिल यक़ीं आया।
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया॥

शब्दार्थ–कामिल यक़ीं-पूरा विश्वास।

२—प्रेम।

१. क्यूं हश्र हुवा बरपा थोड़ी सी जो पीली है।
डाका तो नहीं मारा चोरी तो नहीं की है॥ १॥
ना तजरुबेकारी से वाइज़ की हैं ये बातें।
इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है॥ २॥
उस मय से नहीं मतलब दिल जिस से है बेगाना।
मक़सूद है उस मय से दिल ही में जो खिंचती है॥ ३॥
वां दिल में कि सदमे दो यां जी में कि सब सहलो।
उनका भी अजब दिल है मेरा भी अजब जी है॥ ४॥
सूरज में लगे धब्बा फ़ितरत के करिश्मे हैं।
बुत हम को कहें काफ़िर अल्लाह की मरज़ी है॥ ५॥

शब्दार्थ-हश्र-क़यामत। वाइज़-उपदेशक. मय-शराब. बेगाना-अजनबी। मक़सूद-मतलब. सदमे-कष्ट. फ़ितरत-प्रकृति. करिश्मे-अनोखे काम।

२. शौक़े पाबोसिये जानां मुझे बाक़ी है हनोज़।
घास जो उगती है तुरबत पै हिना होती है॥ १॥

नज़अ का वक़्त बुरा वक़्त है ख़ालिक़ की पनाह।
है वो साअत कि क़यामत से सिवा होती है॥ २॥

रूह तो एक तरफ़ होती है रुख़सत तन से।
आरज़ू एक तरफ़ दिल से जुदा होती है॥ ३॥

जिस्म तो ख़ाक में मिल जाते हुवे देखते हैं।
रूह क्या जाने किधर जाती है क्या होती है॥ ४॥

हूं फ़रेबे सितमे यार का क़ायल 'अकबर'।
मरते मरते न कहा ये कि जफ़ा होती है॥ ५॥

शब्दार्थ-पा बोसी-पाव का चुम्बन करना. हनोज़-अब तक. तुरबत-क़ब्र. हिना-मेंहदी. नज़अ-प्राण निकलने का समय. पनाह-शरण. साअत-समय. सिवा-अधिक. आरज़ू-इच्छा।

३. ज़माने साज़ी है अब ये कि मुन्तज़िर था मैं।
हमारे आने की तुम को तो कुछ ख़बर भी न थी॥ १॥

फ़लक ने क्यूं शबे फ़ुरक़त मुझे हलाक किया।
जमाले यार नहीं था तो क्या सहर भी न थी॥ २॥

तुम्हारे दिल की नज़ाकत पै उस को रहम आया।
नहीं तो आह मेरी ऐसी बे असर न थी॥ ३॥

जो आप होते हैं मुनकिर तो ख़ैर मैं झूटा।
मेरा जिगर भी न था आप की नज़र भी न थी॥ ४॥

शहीदे जलवये मस्ताना होगया शबे वस्ल।
ख़ुशी नसीब में आशिक़ के रात भर भी न थी॥ ५॥

शब्दार्थ—ज़माना साज़ी-दुनिया के दिखावे की बात। सहर-प्रातःकाल. मुनकिर-इन्कार करने वाला. शब-रात।

४ जलवये साक़ी वो मय जान लिये लेते हैं।
शेख़जी ज़ब्त करें हम तो पिये लेते हैं ॥१॥
दिल मे याद उनकी जो आते हुवे शरमाती है।
दर्द उठता है कि हम आह किये लेते हैं ॥२॥
दौरे तहज़ीब मे परियों का हुवा दूर नक़ाब।
हम भी अब चाके गरीबां को सिये लेते हैं ॥३॥
ख़ुदकशी मना ख़ुशी गुम ये क़यामत है मगर।
जीना ही कितना है अब ख़ैर जिये लेते हैं ॥४॥
लज्जते वस्ल को परवाने से पूछे उश्शाक़।
वो मज़ा क्या है जो वे जान दिये लेते हैं ॥५॥

शब्दार्थ—साक़ी-शराब पिलाने वाला. मय-शराब. नक़ाब-घूघट ॥

५. क्या मौत है तबियत आ गई उस आफ़ते जां पर।
जिसे इतना नहीं मालूम उलफत क्या वफा क्या है ॥१॥
उन्हे भी जोशे उलफत हो तो लुत्फ़ उट्ठे मौहब्बत का।
हमी दिन रात अगर तड़पे तो फिर इसमें मज़ा क्या है ॥२॥
मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिक़े सादिक़।
कोई परवाने से पूछे कि जलने में मजा क्या है ॥३॥
तबीबों से मैं क्या पूछूं इलाजे दर्दे दिल अपना।
मरज़ जबज़िन्दगी ख़ुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है ॥४॥

शब्दार्थ–उल्फत-प्रेम ऐन-बिल्कुल राहत-आराम. सादिक़-सच्चा. तबीब-वैद्य।

६. ज़ख़्मी किया सीने को नज़र है कि ग़ज़ब है।
ख़ूं होके भी क़ायम है जिगर है कि ग़ज़ब है ॥१॥

वो कहते हैं मय पीने को तू पी नहीं सकता ।
अय शेख ये अल्लाह का डर है कि ग़ज़ब है ॥२॥

गुज़री है शबे वस्ल कि आई है मेरी मौत ।
वो होते हैं रुखसत ये सहर है कि गज़ब है ॥३॥

लिपटा के मुझे सीने से वो आज ये बोले ।
अकबर तेरी आहों का असर है कि ग़ज़ब है ॥४॥

शब्दार्थ—मय-शराब, शब-रात्रि सहर- प्रात काल ॥

७ अलग सब से नज़र नीची ख़राम आहिस्ता आहिस्ता ।
वो मुझ को दफ़न करके अब पशेमां होते जाते हैं ॥१॥

कहा से लाऊंगा खूने जिगर उनके खिलाने को ।
हज़ारो तरह के ग़म दिल के महमा होते जाते हैं ॥२॥

ग़ज़ब की याद हैं अय्यारियां वल्लाह तुमको भी ।
गरज़ क़ायल तुम्हारे हम तो अय जा होते जाते हैं ॥३॥

इधर हम से भी बातें आप करते हैं लगावट की ।
उधर ग़ैरों से भी कुछ अहदो पैमां होते जाते हैं ॥४॥

शब्दार्थ—खराम-चाल, पशेमा-लज्जित, अहदो पैमा-वादे ॥

८ ज़हादे खुश्क हुस्ने बुतां से हैं बेनसीब ।
आंखें ख़ुदा ने दी हैं मगर देखते नहीं ॥१॥

मैं जिनके देखने को समझता हूं ज़िन्दगी ।
उनका ये हाल है कि इधर देखते नहीं ॥२॥

तासीरे इन्तज़ार ने ये हाल कर दिया ।
आंखें खुली हुई हैं मगर देखते नहीं ॥३॥

बे ख़ौफ दिल को करते हो पामाल अय बुतो ।
ये शोख़ियां ख़ुदा का भी घर देखते नहीं ॥४॥

शब्दार्थ—जहाद-जाहिद लोग अर्थात साधु. तासीर-प्रभाव.
पामाल करना-कुचलना ॥

९. जो नासह मेरे आगे बकने लगा ।
मैं क्या करता मुंह उसका तकने लगा ॥१॥

मोहब्बत का तुम से असर क्या कहूं ।
नजरें मिल गईं दिल धड़कने लगा ॥२॥

रक़ीबों ने पहलू दबाया तो चुप ।
मैं बैठा तो ज़ालिम सरकने लगा ॥३॥

जो महफ़िल में अकबर ने खोली ज़बान ।
गुलिस्तां में बुलबुल चहकने लगा ॥४॥

शब्दार्थ—नासह-उपदेशक. गुलिस्ता-बाग ॥

१०. लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है ।
क़यामत है सितम है दिल फ़िदा है जान हाज़िर है ॥१॥

कहो जो चाहो सुन लेंगे मगर मुतलक़ न समझेंगे ।
तबियत तो ख़ुदा जाने कहां है कान हाजिर है ॥२॥

निगाहें ढूंढती हैं जिन को उनका दो निशां यारो ।
इसे मैं क्या करूंगा ये जो सब सामान हाजिर है ॥३॥

बिठा कर ग़ैर की महफ़िल मे मुझको उसने फ़रमाया ।
सुनो अकबर की ग़ज़लें देखो ये मस्तान हाज़िर है ॥४॥

शब्दार्थ—मुतलक़-बिल्कुल ।

११ इश्क कहता है बयाने हाल की परवा न कर।
तेरे दिल की खुद बखुद उनको ख़बर हो जायगी ॥१॥
मुझको हैरत है निगाहे शौक की उम्मीद पर।
क्या निगाहे कहर उल्फत की नज़र हो जायगी ॥२॥
मैंने पूछा तुम्हें मुझ से मोहब्बत है या नहीं।
हंस के फ़रमाया नहीं अब तक मगर हो जायगी ॥३॥
मैं शबे फुरक़त में तड़पूं और वो सोये चैन से।
किस तरह मानूं मोहब्बत का असर हो जायगी ॥४॥

शब्दार्थ—क़हर-क्रोध शबे फुरक़त-वियोग की रात ॥

१२. खुदा की शान वो मेरा तड़पना दिल्लगी समझे।
किसी की जान जाती है किसी का जी बहलता है ॥१॥
ख़याले ज़ुल्फ़ में अय दिल न तय कर मञ्जिले उल्फ़त।
अन्धेरी रात में नादां कोई राह चलता है ॥२॥
विसाले यार का वादा है कल और आज मौत आई।
करें क्या अब मुक़द्दर पर किसी का ज़ोर चलता है ॥३॥
मोहब्बत उन से करके फंस गये हम तो आफ़त में।
न दिल क़ाबू में आता है न उन पर ज़ोर चलता है ॥४॥

१३. ग़रीब ख़ाने में लिल्लाह दो घड़ी बैठो।
बहुत दिनों में तुम आये हो इस गली की तरफ़ ॥१॥
ज़रा सी देर ही हो जायगी तो क्या होगा।
घड़ी घड़ी न उठावो नज़र घड़ी की तरफ़ ॥२॥
जो घर में पूछे कोई खौफ़ क्या है कह देना।
चले गये थे टहलते हुवे किसी की तरफ़ ॥३॥

१४ तेरे सहरे नजर से हुवा ये जनून,
मेरे दिल की तो इसमें ख़ता ही न थी।
तेरे कूचे में आके मैं बैठ रहा,
बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥१॥

न निभी तो फिर इसमें थी किसकी ख़ता,
ये गिला है मेरी ही तरफ़ से बजा।
मेरे इश्क़ का रंग तो ख़ूब रहा,
मगर आप में बुवे वफ़ा ही न थी ॥२॥

ग़मे हिज्र में जी से गया जो गुज़र,
तो ये अकबरे ज़ार ने ख़ूब किया।
कि इलाजे फ़िराक़ तो था ही यही,
बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥३॥

शब्दार्थ—सहर-जादू. बजुज-अतिरिक्त. गिला-शिकायत. बजा—उचित ॥

१५. वो आये भी जो बालीं पर तो ऐसे वक़्त में आये।
कि फ़र्ते ज़ोफ़ से हम कर नहीं सकते इशारा तक ॥१॥

जो उसने नाज़ से पूछा कि तेरी आरज़ू क्या है।
ख़ुशी से ये हुवे बेख़ुद कि, हम भूले तमन्ना तक ॥२॥

ना निकले अश्के हसरत नज़अ में अय बेकसी क्यूंकर।
वो बेकस हूं नहीं है कोई मुझ पर रोने वाला तक ॥३॥

शब्दार्थ-बालीं-सिरहाने फर्ते जोफ-कमजोरी की अधिकता. आरजू-इच्छा. तमन्ना-इच्छा. अश्के हसरत-नैराश्य के आंसू. नजअ-प्राण निकलने का समय ॥

१६ वो कूचये जानां के मज़े एक न पाये।
हम पहले समझते थे कि जन्नत में भी कुछ है ॥१॥

फ़रमाते हैं वो सुनकर मेरे रोने का अहवाल।
ये बात तो दाख़िल तेरी आदत मे भी कुछ है ॥२॥

जब कहता हू उन से कि मेरे दिल में हसरत है।
किस नाज़ से कहते हैं कि हसरत में भी कुछ है ॥३॥

शब्दार्थ—कूचये जाना-माशूक़ की गली. जन्नत-स्वर्ग. अहवाल-हाल ॥

१७. तुझे अय उम्मीदे फ़र्दा दिलो जां से प्यार करते।
मगर अपनी ज़िन्दगी का नहीं ऐतबार करते ॥१॥

है बुतों की खुदनुमाई मेरी गफ़लतों से कायम।
मैं अगर नज़र न करता तो वो क्यूं सिगार करते ॥२॥

लिया हमने बोसये रुख तो न बदगुमा हो जाना।
कोई फूल देख लेते तो उसे भी प्यार करते ॥३॥

शब्दार्थ—फर्दा-कल, भविष्य ॥

१८ पोशीदा आंखों मे कभी दिल में निहा रहा।
बरसों ख़याले यार मेरा महमां रहा ॥१॥

फ़रयाद किसकी थी पसे दीवार रात भर।
क्या मुझ से पूछते हो तू कल शब कहां रहा ॥२॥

बेजा मेरे सफ़र पै हैं ये बदगुमानियां।
पेशे नज़र तुम्हीं तो रहे मैं जहां रहा ॥३॥

शब्दार्थ-पोशीदा-छिपा हुआ. निहा-गुप्त. पसे दीवार-दीवार के नीचे. शब-रात. बेजा-अनुचित. पेशे नजर-आंखों के सामने ॥

१९ ये शर्म के मानी हैं हया कहते हैं इसको।
आगोशे तसव्वुर में न आया बदन उनका ॥१॥

मरक़द में उतारा हमें तेवरी को चढ़ा कर।
हम मर भी गये पर न छुटा बांकपन उनका ॥२॥
दिलचस्प है आफ़त है क़यामत है ग़ज़ब है।
बात उनकी अदा उनकी क़द उनका चलन उनका ॥३॥

शब्दार्थ-हया-लज्जा, आगोशे तसव्वुर-कल्पना की गोद, मरक़द-क़ब्र।

२०. मैं शेफ़ता हूं आप से वे मिस्ल हसीं का।
हैरां हूं मेरे काम संवर क्यूं नहीं जाते ॥१॥
जब कहता हूं मरता हूं मेरी जान मैं तुम पर।
फ़रमाते हैं मरते हो तो मर क्यूं नहीं जाते ॥२॥
वो नींद में हैं शहर में फिरने लगे पहरे।
पूछे कोई अकबर से ये घर क्यूं नहीं जाते ॥३॥

शब्दार्थ-शेफ़ता-आसक्त।

२१. मेरे इश्क़ के सोज़ में हो न कमी,
अजल आये तो ऐसी जफ़ा न करे।
मेरी जान को जिस्म से कर दे अलग,
मेरे दर्द को दिल से जुदा न करे ॥१॥
बुते शोख़ की देख रहा हूं नज़र,
मेरे इश्क़ का कुछ भी नहीं है असर।
जो मैं कहता हूं काश हो तुझ में वफ़ा,
तो वो कहता है हंसके ख़ुदा न करे ॥२॥
मुझे इश्क़ो वफ़ा की सनद न मिले,
जो मैं ज़ब्त से सब्र से काम न लूं।
वहां हुस्न के नाज़ में आय कमी,
जो वो हक़्क़े सितम को अदा न करे ॥३॥

शब्दार्थ-सोज़-जलन, नाज़-नख़रा।

२२ रंगे शराब से मेरी नीयत बदल गई।
वाइज़ की बात रह गई साक़ी की चल गई ॥१॥
तैयार थे नमाज़ पै हम सुन के ज़िक्रे हूर।
जलवा बुतों का देख के नीयत बदल गई ॥२॥
चमका तेरा जमाल जो महफ़िल में वक़्ते शाम।
परवाना बेक़रार हुवा शमअ् जल गई ॥३॥

❧ ❧ ❧ ❧

२३ में नज़अ् मैं हूं आयें तो अहसान है उनका।
लेकिन ये समझले कि तमाशा नहीं होता ॥१॥
हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो क़त्ल भी करते हैं तो चरचा नहीं होता ॥२॥

शब्दार्थ—नजअ-अन्तिम समय।

❧ ❧ ❧ ❧

२४ जब कहा मैं ने भुला दो ग़ैर को हस कर कहा।
याद फिर मुझ को दिलाना भूल जाने के लिये ॥ १ ॥
खूब उम्मीदें बंधीं लेकिन हुईं हिरमां नसीब।
बदलियां उट्ठीं मगर बिजली गिराने के लिये ॥ २ ॥

शब्दार्थ-हिरमा दु ख।

❧ ❧ ❧ ❧

२५ तुमने बीमारे मोहब्बत को अभी क्या देखा।
जो ये कहते हुवे जाते हो कि देखा देखा ॥ १ ॥
तिफ़्ले दिलको मेरे जाने लगी किसकी नज़र।
मैंने कमबख़्तको दो दिन भी न अच्छा देखा ॥ २ ॥

❧ ❧ ❧ ❧

२६ इस जफ़ा पर भी तबियत उस पै बस आ ही गई।
एक अदा ज़ालिम ने ऐसी की कि वो भी ही गई ॥ १ ॥

आशिक़ों में रस्मे ऐशो दुनयवी रायज नहीं।
क़ैस* कब दूल्हा बना लैला कहां ब्याही गई॥ २॥

❀ ❀ ❀ ❀

२७. जब उन को रहम कुछ आया हया ने समझाया।
बिगड़ बिगड़ गई तक़दीर मेरी बन बन के॥ १॥
मरीज़े ग़म को डराया करे न फिर इतना।
क़ज़ा जो देखले तेवर तुम्हारी चितवन के॥ २॥

शब्दार्थ—हया-लज्जा।

❀ ❀ ❀ ❀

२८. हया से सर झुकालेना अदा से मुस्करा देना।
हसीनों को भी कितना सहल है बिजली गिरा देना॥ १॥
ये तर्ज़े अहसान करने का तुम्ही को ज़ेबा देता है।
मरज़ में मुबतला करके मरीज़ों को दवा देना॥ २॥

❀ ❀ ❀ ❀

२९. वफ़ा बुतों में नहीं है ख़ुदा को पायें कहां।
इसी फ़िराक़ में कटते हैं दिन कि जायें कहां॥ १॥
ये कहके ख़ूने जिगर मांगता है ग़म दिल से।
कि तेरे घर में रहें रात दिन तो खायें कहां॥ २॥

❀ ❀ ❀ ❀

३०. हूर मिस को मये गुलगूं को परी कहते हैं।
शेख़ ख़ुश हों कि ख़फ़ा हम तो खरी कहते हैं॥ १॥
हुस्न के बाब में 'अकबर' की सनद ठीक नहीं।
ये तो हरेक बुते कमसिन को परी कहते हैं॥ २॥

शब्दार्थ—मये गुलगू-सुर्ख़ शराब, कमसिन-कमउम्र।

❀ ❀ ❀ ❀

---

* मजनू।

३१ उलफत जो कीजिये गर्ज़ आशना से क्या।
वादा जो लीजिये तो बुते बे वफ़ा से क्या ॥ १ ॥
क़ातिल तुम्हे कहेंगे जहां में हमें शहीद।
अय यार और होगा तुम्हारी जफा से क्या ॥ २ ॥

३२ अहबाव क्या करेंगे ठहर कर मज़ार पर।
बालीं पै ख़ाक उड़ाने को हा आरज़ू रहे ॥ १ ॥
फ़ितना रहे फ़िसाद रहे गुफ़्तगू रहे।
मन्ज़ूर सब मुझे जो मेरे घर में तू रहे ॥ २ ॥
शब्दार्थ-अहबाव-मित्रगण. मजार-क़ब्र. बाली-सिरहाना. आरज़ू-इच्छा ॥

३३ ज़िन्दा जो तेरे हिज्र में हूं मैं तो क्या अजब।
गो तू नहीं है पास तेरी आरज़ू तो है ॥ १ ॥
मुझको तो देखलेने से मतलब है नासहा।
बदखू अगर है यार तो हो ख़ूबरू तो है ॥ २ ॥
शब्दार्थ-बदखू-बुरे स्वभाव वाला।

३४ आस्मां से क्या गरज़ जब है ज़मीं पर ये चमक।
माहो अन्जुम से हैं बढ़ कर उनके बुन्दे बालिया ॥ १ ॥
फ़ूल* वो कहती हैं मुझको मैं उन्हें समझा हूं फूल।
हैं गुले रंगी से बेहतर इन गुलों की गालिया ॥ २ ॥
शब्दार्थ-माह-चांद. अन्जुम-तारे।

३५ पहुंचना दाद को मज़लूम का मुशकिल ही होता है।
कभी क़ाज़ी नहीं मिलते कभी क़ातिल नहीं मिलता ॥ १ ॥

---

* Fool.

ये हुस्नो इश्क़ ही का काम है शुबहा करे किस पर ।
मिजाज उनका नहीं मिलता हमारा दिल नहीं मिलता ॥ २ ॥

शब्दार्थ-दाद-न्याय, मज़लूम-अन्याय पीड़ित ।

३६. राज़े बुते शोख़ की ख़बर ही न मिली ।
दिल क्या मिलता कभी नज़र ही न मिली ॥ १ ॥

क्या वस्ल का हौसला करें ऐसे रक़ीब ।
जिनको इस वक़्त तक कमर ही न मिली ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राज-रहस्य ।

३७ उठाना था हज़ारों सख़्तियां दिल में इसे रख कर ।
मेरे सङ्गे लहद पर आरज़ू पटकेगी सर अपना ॥१॥
कहीं देखा न हस्ती वो अदम का इश्तराक ऐसा ।
जहां में मिस्ल रखती ही नहीं उनकी कमर अपना ॥२॥

शब्दार्थ—सगे लहद-क़ब्र का पत्थर, आरजु-इच्छा, हस्ती-अस्तित्व,
अदम-अनुपस्थिति, इश्तराक-मेल ।

३८. बहुत अच्छा हुवा आये न वो मेरी अयादत को ।
जो वो आते तो ग़ैर आते जो ग़ैर आते तो ग़म होता ॥१॥
अगर क़बरें नज़र आतीं न दारा वो सिकन्दर की ।
मुझे भी इश्तयाक़े दौलतो जाहो हशम होता ॥२॥

शब्दार्थ—अयादत-मिजाज पूछना, इश्तयाक़-शौक़, जाहो हशम-वैभव तथा ऐश्वर्य ।

३९. किसी से वो मौहब्बत हो मौहब्बत जिसको कहते हैं ।
फिर उससे ऐसी फ़ुरक़त हो कि फ़ुरक़त जिसको कहते हैं ॥१॥

दिली हालत का अन्दाजा उस वक्त हो ग़ाफ़िल को।
मुसीबत ही नहीं देखी मुसीबत जिसको कहते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—फुरक़त-जुदाई।

४०. लहजा लहजा है तरक्की पै तेरा हुस्नो जमाल।
जिस को शक हो तुझे देखे तेरी तसवीर के साथ ॥१॥
नातवानी मेरी देखी तो मुसव्विर ने कहा।
डर है तुम भी कहीं खिंच आवो न तसवीर के साथ ॥२॥

शब्दार्थ—लहजा लहजा-प्रति क्षण मुसव्विर-चित्रकार।

४१ सर सर ने लाख चाहा उड़ाना उस गली से।
अब तक ग़ुबार अपना ख़ाके रहे वफ़ा है ॥१॥
रंगीं तेरी अदा ने दिल खूं किया चमन का।
जो गुल है दाग़े दिल है जो बर्ग है हिना है ॥२॥

शब्दार्थ—सर सर-आंधी, रहे वफ़ा-वफा का रास्ता बर्ग-पत्ता, हिना-मेंहदी।

४२ दिन रात की ये बेचैनी है ये आठ पहर का रोना है।
आसार बुरे हैं फुरक़त मे मालूम नहीं क्या होना है ॥१॥
क्यूं पस्त हुई है हिम्मते दिल क्यूं रोक रही है मायूसी।
कोशिश तो हम अपनी सी करलें होगा तो वही जो होना है ॥२॥

४३ उन्हें पसन्द नहीं और इस से मैं बेज़ार।
इलाही फिर ये दिले बेक़रार क्या होगा ॥१॥
अज़ीज़ो सादा ही रहने दो लौहे तुरबत को।
हमी मिटे तो ये नक़्शो निगार क्या होगा ॥२॥

४४ नज़अ में हूं अब भी आजायें वो दम भर के लिये।
और तो क्या एक निगाहे आख़िरी हो जायगी॥

शब्दार्थ—नज़अ-प्राण निकलने का समय।

४५. दिल लेके कहते हैं तेरी ख़ातिर से ले लिया।
उलटा मुझी पै रखते हैं अहसान लीजिये॥

४६. जब कहा मैंने मेरा दिल मुझको वापिस कीजिये।
नाज़ो शोख़ी से वो बोला खो गया मिलता नहीं॥

४७ गूंज से बाले की ज़ुल्फ़ उलझी मैं आशिक़ हो गया।
ये न ख़ौफ़ आया कि वो अफ़ई है ये ज़ंबूर है॥

शब्दार्थ-अफई-सर्प।

४८. जमाना हो गया बिसमिल तेरी सीधी निगाहों से।
ख़ुदा ना ख़्वास्ता तिरछी नज़र होती तो क्या होता॥

शब्दार्थ—बिसमिल-घायल. खुदा ना ख्वास्ता-ईश्वर न करे।

४९. बुतों के पहिले बन्दे थे मिस्सों के अब हुवे ख़ादिम।
हमें हर अहद मे मुशकिल रहा है बाखुदा होना॥

शब्दार्थ-अहद-समय बाखुदा-आस्तिक।

५०. ख़ुदा जाने वो क्या समझे कि बिगड़े इस क़दर मुझ पर।
कहा था मैंने इतना ही मुझे कुछ अर्ज़ करना है॥

शब्दार्थ-अर्ज-निवेदन॥

५१ हंसाते हैं क्यूं वो गैरों को मुझ पर।
यही रोना है अब रोना है जो कुछ॥

❀ ❀ ❀ ❀

५२. बुतों की याद से दिल मायले फरयाद होता है।
मगर कहना ही पडता है बजा इरशाद होता है॥

❀ ❀ ❀ ❀

५३ देख कर मुझ को वो कहते हैं कि अच्छे तो रहे।
ज़िन्दा हैं सास लिये जाते हैं अच्छे क्या हैं॥

❀ ❀ ❀ ❀

५४ दिलो जिगर को फिराके बुत में हवालये चश्मेतर करूंगा।
कभी किसी ने किया न होगा किनारये गग दान ऐसा॥

❀ ❀ ❀ ❀

५५ मन्जिले गोर में क्या ख़ाक मिलेगा आराम।
ख़ू तड़पने की वही और ज़मीं थोडी सी॥

शब्दार्थ–मजिल-पड़ाव, ख़ू-आदत।

❀ ❀ ❀ ❀

५६ जफाये झेल कर तासीर उलफत की दिखाते हैं।
हिना की तरह पिस लेते हैं तब हम रंग लाते हैं॥

शब्दार्थ–जफ़ायें-बेवफाइया तासीर-असर, उल्फत-प्रेम, हिना-मेंहदी।

❀ ❀ ❀ ❀

५७ बनते हो मेरी जान तो आ बैठो गोद में।
तुम जानते हो रूह को क़ालिब ज़रूर है॥

शब्दार्थ-रूह-आत्मा क़ालिब-शरीर।

❀ ❀ ❀ ❀

५८ कहा जो मैंने न तोड दिल को तुझे मुनासिब है दिल नवाज़ी ।
तो हंसके बोला कि सहज होगा दिले शकिस्ता में राह करना ॥
शब्दार्थ-दिले शकिस्ता-टूटा हुवा दिल ।

५९. तुम्हारे आरिज़े रोशन ने खोलदी आंखें ।
मैं कह रहा था कि अब क्या है मेहरो माह के बाद ॥
शब्दार्थ-आरिज-कपोल. मेहरो माह-सूर्य चाद ।

६०. नाज़ कहता है कि ज़ेवर से हो तज़ीने जमाल ।
नाज़ुकी कहती है सुरमा भी कहीं बार न हो ॥
शब्दार्थ-तजीने जमाल-सौन्दर्य वृद्धि बार-बोझ ।

६१. बेगानगी नहीं है बस इतनी दोस्ती है ।
मैं उनको जानता हू वो मुझको जानते हैं ॥

६२. ये परवानों का शमओं से लिपटना और जल मरना ।
मोहब्बत की रविश ये भी है यों भी प्यार करते हैं ॥

६३. तुम्हारे हुस्न में साइन्स* का भी दिल उलझता है ।
कमर को देख कर वो खते उक़लैदस समझता है ॥

६४. वस्ल का उस बुते खुदबीं से कोई हिन्ट† कहां ।
सिर्फ़ बोसे में भला सैलफ गवर्न्मैंन्ट‡ कहां ॥

६५ हम रीश दिखाते हैं कि इसलाम को देखो ।
मिस ज़ुल्फ़ दिखाती है कि इस लाम को देखो ॥

---

*Science †Hint ‡Self Government.

६६. दिला क्यूंकर मैं उस रुखसारे रोशन के मुक़ाबिल हूं।
जिसे खुरशीदे महशर देख कर कहता है मैं तिल हूं॥

शब्दार्थ-रुखसार-कपोल, गाल खुरशीद-सूर्य. महशर-क़यामत, ईश्वरीय न्याय का दिन।

६७ एक दिल था सो दिया और कहां से लाऊं।
झूंठ कहिये तो मैं कहदूं कि नहीं और भी है॥

६८. ज़ेरे गेसू रूवे रोशन जलवागर देखा किये।
शाने हक़ ले एक जा शामो सहर देखा किये॥

शब्दार्थ-ज़ेरे गेसू-जुल्फों के नीचे. रूवे रोशन-उज्ज्वल मुख.
शाने हक़-ईश्वर की महिमा. एक जा-एक जगह.
शामो सहर-सायकाल तथा प्रात काल।

६९ फेर सकती नहीं तक़वे से मुझे कोई सदा।
शर्त ये है कि वो पाज़ेब की झन्कार न हो॥

शब्दार्थ-तक़वा-परहेजगारी. सदा-आवाज।

७० कुछ नतीजा न सही इश्क की उम्मीदों का।
दिल तो बढ़ता है तबियत तो बहल जाती है॥

७१ बुते मशरिक़ नहीं मोहताजे सामां।
कमर ही जब न हो कैसा कमरबन्द॥

३—हास्य ।

१. बुतों से मेल ख़ुदा पै नजर ये ख़ूब कही ।
शब गुनाह वो नमाज़े सहर ये ख़ूब कही ॥१॥

फिटन नफीस सड़क ख़ुशनुमा डिनर* हर शब ।
ये लुत्फ़ छोड़के हज्ज का सफ़र ये ख़ूब कही ॥२॥

तुम्हारी ख़ातिरे नाज़ुक का है ख़याल फ़क़त ।
वगरना मुझको रक़ीबों का डर ये ख़ूब कही ॥३॥

जनाबे शेख़ का हो जाऊं मौतक़िद माक़ूल ।
निगाहे यार रहे बेअसर ये ख़ूब कही ॥४॥

सवाले वस्ल करूं या तलब हो बोसे की ।
वो कहते हैं मेरी हर बात पै ये ख़ूब कही ॥५॥

शब्दार्थ-शब-रात, नमाजे सहर-प्रातःकाल की नमाज, मौतक़िद-मानने वाला ।

---

*Dinner.

२. मज़हब का हो क्यूंकर इल्मो अमल दिल ही नहीं भाई एक तरफ़।
किरकिट की खिलाई एक तरफ़ कालिज की पढ़ाई एक तरफ़ ॥१॥
क्या ज़ौक़े इबादत हो उनको जो मिस के लबों के शैदा हों।
हलवाय बहिश्ती एक तरफ़ होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥२॥
ताऊनो तप और खटमल मच्छर सब कुछ है ये पैदा कीचड़ से।
बम्बे की रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़ ॥३॥
क्या काम चले क्या रग जमे क्या बात बने कौन उसकी सुने।
है अकबरे बेकस एक तरफ़ और सारी ख़ुदाई एक तरफ़ ॥४॥
फ़रयाद किये जा अय अकबर कुछ हो ही रहेगा आखिरकार।
अल्लाह से तोबा एक तरफ़ साहब की दुहाई एक तरफ़ ॥५॥

शब्दार्थ—ज़ौक़े इबादत-पूजा का चाव, लब- ओष्ठ, शैदा-आसक्त ॥

३ उन्हें शौक़े इबादत भी है और गाने की आदत भी।
निकलती हैं दुआयें उनके मुंह से ठुमरियां होकर ॥१॥
न थी मुतलक़ तवक़्क़ो बिल* बना कर पेश कर दोगे।
मेरी जा लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमां होकर ॥२॥
निकाला करती है घर से ये कह कर तू तो मजनूं है।
सता रक्खा है मुझको सास ने लैला की मा होकर ॥३॥
रक़ीबे सिफ़ला ख़ू ठहरे न मेरी आह के आगे।
भगाया मच्छरों का उनके कमरे से धुंवा होकर ॥४॥

शब्दार्थ— इबादत-पूजन, सिफला ख़ू-कमीन ॥

---

* Bill

४. अपना रंग उन से मिलाना चाहिये ।
आजकल पीना पिलाना चाहिये ॥१॥
चाल में तलदार है दिल की घड़ी ।
तोप से इसको मिलाना चाहिये ॥२॥
क़ौले बाबू है जब बिल* पेश हो ।
पेशे हाकिम खिलखिलाना चाहिये ॥३॥
कुछ न हाथ आये मगर इज़्ज़त तो है ।
हाथ उस मिस से मिलाना चाहिये ॥४॥

शब्दार्थ—पेश-सन्मुख॥

५. जब मैं कहता हूं कि या अल्लाह मेरा हाल देख ।
हुक्म होता है कि अपना नामये आमाल देख ॥१॥
सोच तुझ को है अगर आइन्दा पालिटिक्स‡ की ।
ले नतायज से मदद और हिस्ट्री मे फ़ाल देख ॥२॥
शौक़े तूलो पेच इस ज़ुल्मतकदे में है अगर ।
बात बङ्गाली की सुन बङ्गालनों के बाल देख ॥३॥
हुस्ने मिस पर कर नज़र मज़हब अगर जाता है जाय ।
क़द्रदां को निर्ख़ की क्या बहस अकबर माल देख ॥४॥

शब्दार्थ—नामये आमाल-कर्मों का लेखा। ज़ुल्मत कदा-अन्धकारमय स्थान।

६. अज़ीज़ाने वतन को पहिले ही से देता हूं नोटिस ‡ ।
चुरट और चाय की आमद है हुक़्क़ा पान जाता है ॥१॥
ये इतनी गोशमाली तिफ़्ले मकतब की नहीं अच्छी ।
ज़बान आती है उसको सच है लेकिन कान जाता है ॥२॥

* Bill ‡ Politics. ‡ Notice

मेरी डाढ़ी से रहता है वो बुत इन्कार पर क़ायम ।
मगर जब दिल दिखाता हूं तो फ़ौरन मान जाता है ॥३॥

शब्दार्थ-गोशमाली-कान खेंचना. तिफ्ल-बच्चा ।

७. चल गई मूसा की लाठी रह गया जादू का खेल ।
साहिरों के सांप को मारा ख़ुदा की मार ने ॥१॥
रेल काबे तक अगर बन भी गई तो नाज़ क्या ।
अर्शे बारी तक नहीं पाई रसाई तार ने ॥२॥
बाप मां से शेख़ से अल्लाह से क्या उनको काम ।
डाक्टर जनवा गये तालीम दी सरकार ने ॥३॥

शब्दार्थ-साहिरों-जादूगरों. नाज़-गर्व. अर्शे बारी-आकाश, खुदा की छत. रसाई-पहुँच ।

८. शू मेकरी शुरू जो की एक अज़ीज़ ने ।
जो सिलसिला मिलाते थे बहराम ग़ोर से ॥१॥
पूछा कि भाई तुम तो थे तलवार के धनी ।
मूरिस तुम्हारे आये थे ग़ज़नी वो ग़ोर से ॥२॥
कहने लगे है इसमें भी एक बात नोक की ।
रोटी हम अब कमाते हैं जूते के ज़ोर से ॥३॥

शब्दार्थ-शू मेकरी-जूता बनाना. मूरिस-पुरखा. गज़नी-महमूद गज़नवी की जन्मभूमि. ग़ोर-मोहम्मद गोरी की जन्मभूमि ।

९. अकबर मुझे शक नहीं तेरी तेज़ी में ।
और तेरे बयान की दिलावेज़ी में ॥१॥

शैतान अरबी से है हिन्द में बेख़ौफ ।
लाहौल का तरजुमा कर अंग्रेज़ी में ॥२॥

शब्दार्थ–दिलाविजी-चित्ताकर्षकता, लाहौल-भाग शैतान ।

१०. कचहरियों में पुरसिश है ग्रेजुवेटों की ।
सड़क पै मांग है कुलियों की और मेटों की ॥१॥

नहीं है क़द्र तो बस इल्मे दीनो तक़वे की ।
ख़राबी है तो फ़क़त शेख़ जी के बेटों की ॥२॥

शब्दार्थ–पुरसिश-पूछ, तक़वा-परहेजगारी ।

११. मजहब और मौलवी पै गाली हो लई ।
स्पीच * पै अन्जुमन में ताली हो लई ॥१॥

दरवाज़ये मुनसफ़ी है हम पर क्यूं बन्द ।
हर बात तो अय जनाबे आली हो लई ॥२॥

१२. उश्शाक़ को भी माले तिजारत समझ लिया ।
इस क़द्र को मुलाहज़ा लिल्लाह कीजिये ॥१॥

भरते हैं मेरी आह को फ़ोनोग्राफ़ में ।
कहते हैं फ़ीस लीजिये और आह कीजिये ॥२॥

१३ मिल का आटा है नल का पानी है ।
आबोदाने की हुक्मरानी है ॥१॥

एक अदा से कहा मिसों ने 'कम आन' * ।
तीर की मुझ में अब रवानी है ॥२॥

शब्दार्थ–रवानी-चाल ।

* Speech. * Come on.

१४. परचा रक्खा जो उसने मैं ये समझा ।
पाकेट* में ये बीस रुपये का नोट गया ॥१॥
घर पर खोला तो बस यही लिखा था ।
क्या शेर थे वाह वाह मैं लोट गया ॥२॥

१५. स्माल◇ नहीं ग्रेट‖ होना अच्छा ।
दिल होना बुरा है पेट होना अच्छा ॥१॥
पंडित हो कि मौलवी हो दोनों बेकार ।
इन्सान को ग्रेजुवेट† होना अच्छा ॥२॥

१६. जो दोनों साथ पड़ें तो ये मुनासिब है ।
कि अपने घर में क्रसमस* भी कर तू ईद भी कर ॥१॥
खुदा करे कोई बुत आके कहे मुझ से ।
बिठा भी ले घर में मुझे मुरीद भी कर ॥२॥

१७ थे केक× की फ़िक्र में सो रोटी भी गई ।
चाहते थे बड़ी शय सो छोटी भी गई ॥१॥
वाइज़ की नसीहत क्यूं न मानें आख़िर ।
पतलून की ताक में लंगोटी भी गई ॥२॥

१८ कर दिया करज़न ने जन मरदों की सूरत देखिये ।
आबरू चेहरे की सब फ़ैशन बना कर पूंछली ॥१॥
सच ये है इन्सान को यूरुप ने हलका कर दिया ।
इब्तदा डाढ़ी से की और इन्तहा में मूंछ ली ॥२॥
शब्दार्थ—जन-स्त्री इब्तदा-आरम्भ. इन्तहा-अन्त ॥

---

* Pocket. ◇ Small. ‖ Great. † Graduate.
* Christmas. × Cake.

१६. मैं रय्यत हूं वो शाहाना दिलेरी है कहां ?
मुझको क्यूं रश्क आये वज़अ मिल्लते अंग्रेज पर ॥१॥
कांटे बिछ जाते हैं उन लोगों की राहे रिज़्क़ में।
ख़ौफ़ आता है छुरी चलती है उनकी मेज़ पर ॥२॥
शब्दार्थ—राहे रिज़्क-भोजन का मार्ग ॥

२०. रह गया दिल ही में शौक़े सायये अलताफ़े ख़ास।
मुझको आने को इजाज़त दी नहीं बडरूम* में ॥१॥
खाने के कमरे से रुख़सत कर दिया बाद अज डिनर⁑।
थीं फ़कत छुरियां ही और कांटे मेरे मक़सूम में ॥२॥
शब्दार्थ—अलताफ ख़ास-विशेष प्रेम, मक़सूम-भाग्य ॥

२१. क़िस्सये मनसूर[1] सुन कर बोल उठी वो शेख़ मिस।
कैसा अहमक़ लोग था पागल को फांसी क्यों दिया ॥१॥

---

* Bed Room. ⁑ Dinner.

१ खलीफ़ा हारूँ उलरशीद के समय में फ़ारस (Persia) देश में मनसूर नामक एक बड़े ईश्वर-भक्त हुवे हैं। आप अद्वैतवादी थे। आपको प्रत्येक पदार्थ में ईश्वर ही दृष्टिगोचर होता था। अतएव आपके मुँह से बार बार 'अनल हक़' अर्थात 'मैं ईश्वर हूँ' की आवाज़ निकलती थी। जन साधारण इस रहस्य को कहां समझ सकते हैं। आप पर कुफ़ अर्थात् नास्तिकता का अभियोग लगाया गया और बग़दाद के प्रधान न्यायाधीश अबू यूसुफ़ ने आपको फांसी की सज़ा दी।

उ० सिं० कारुणिक।

काश अय अकबर वही हालत मुझे भी पेश आय।
और ये काफ़िर पुकारे दर पनाहे मन बिया ॥२॥

शब्दार्थ-अहमक-पागल। दरपनाहे मन बिया-मेरी शरण में आ ॥

❧ ❧ ❧ ❧

२२. उनकी तहरीकों से यूं रहती है दुनिया बेचैन।
जिस तरह पेट में बीमार के बाई दौड़े ॥१॥
कैसरी के लिये लपका मेरी जानिब वो गोल।
गाय मोटी नज़र आई तो क़साई दौड़े ॥२॥

❧ ❧ ❧ ❧

२३ ख्वाह साहब को तुम सलाम करो।
ख्वाह मन्दिर में राम राम करो ॥१॥
भाई जी का फ़क़त ये मतलब है।
जिसमें रुपया मिले वो काम करो ॥२॥

❧ ❧ ❧ ❧

२४. मेरी रसाई है दैर में भी हरम में भी मेरी मनज़िलत है।
बुतों से बोसे की है तवक़्क़ो खुदा से उम्मीदे मग़फ़रत है।१।
झुका है सर अपना पाये बुत पर ज़बान पर है गिला जफ़ा का।
मेरे अमल में है तरज़े सय्यद ग़ज़ल में अन्दाज़े लाजपत है।२।

शब्दार्थ—रसाई-पहुंच। दैर-मन्दिर। मनजिलत-आदर। मगफ़रत-क्षमा-दान। सैयद-सर सैयद अहमद। लाजपत-पंजाब के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत लाला लाजपतराय।

❧ ❧ ❧ ❧

२५ इस क़दर था खटमलों का चारपाई में हुजूम।
वस्ल का दिल से मेरे अरमान रुख़सत होगया ॥१॥

लात दुनिया ने जो मारी बन गया दीनदार वो ।
थी बुरी ठोकर मगर शैतान रुख़सत होगया ॥२॥

शब्दार्थ—अरमान-इच्छा। दीनदार-धार्मिक।

२६ इस से तो इस सदी मे नहीं हमको कुछ ग़रज़ ।
सुक़रात* बोले क्या अरस्तू† ने क्या कहा ॥१॥
बहरे ख़ुदा जनाब दे हमको इत्तला।
साहब का क्या जवाब था बाबू ने क्या कहा ॥२॥

शब्दार्थ—बहरे खुदा-ईश्वर के लिये।

---

* आप यूनान के बडे प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी थे । आपका जन्म ईसा से ४६६ वर्ष पूर्व एथन्स में हुवा था। आप आरकीलस (Archelaus) के शिष्य थे। लोगो ने आप पर नास्तिकता तथा युवकों को बिगाडने का अभियोग लगाया। न्यायाधीश नें आपको दोषी समझा और प्राण-दण्ड की सज़ा दी। ईसा से ३९९ वर्ष पूर्व यह महापुरुष ज़हर का प्याला पीकर सदैव के लिये सो गया।

उ० सिं० कारुणिक।

† अरस्तू भी यूनान का एक प्रसिद्ध तत्वज्ञानी था। आपका जन्म ईसा से ३८४ वर्ष पूर्व स्टैगीरा नामक स्थान में हुवा था, किन्तु आप अधिकतर एथैन्स मे रहा करते थे। आप महान् सिकन्दर (Alexander the Great) के गुरु भी थे। ईसा से ३२२ वर्ष पूर्व इस महापुरुष ने सदैव के लिये अपनी कीर्ति छोड़कर इस संसार से मुँह मोड लिया।

उ० सिं० कारुणिक।

२७. हमको अपने एलबम* पर नाज़ का है क्या महल ।
बेहद अरज़ां होगया है अब तो फ़ोटो आपका ॥१॥
आपके दरशन मुसव्विर के भी हिस्से में नहीं ।
बस लिया जाता है फ़ोटो* ही से फ़ोटो आपका ॥२॥

शब्दार्थ—अरज़ां-सस्ता ।

२८. मौहताजे दरे वकीलो मुख़तार हैं आप ।
सारे अमलों के नाज़बरदार हैं आप ॥१॥
आवारओ मुन्तशिर हैं मानिन्दे ग़ुबार ।
मालूम हुआ मुझे ज़मींदार हैं आप ॥२॥

शब्दार्थ—दर-द्वार । मुन्तशिर-व्यग्र ।

२९. कहती है ज़राहे किब्र मुझ से वो गर्ल× ।
क्या तुझ से मिलूं कहीं का तू ड्यूक* न अर्ल* ॥१॥
अकबर ने कहा दिखा के दाग़े दिलो अश्क ।
है मेरी गिरह में भी ये रूबी÷ ये पर्ल+ ॥२॥

शब्दार्थ—ज़राहे किब्र-घमण्ड से. गर्ल-लड़की. ड्यूक, अर्ल-उपाधियों के नाम. अश्क-आंसू. रूबी-लाल. पर्ल-मोती ।

३०. उम्मीदे चश्मे मरव्वत कहां रही बाक़ी ।
ज़रिया बातों का जब सिर्फ़ टेलीफ़ून‡ हुवा ॥१॥
निगाहे गर्म किरसमस‡ में भी रही हम पर ।
हमारे हक़ में दिसम्बर भी माहे जून हुवा ॥२॥

शब्दार्थ—चश्मे मरव्वत-कृपा दृष्टि ।

*Album. * Photo. × Girl. * Duke. * Earl.
÷ Ruby. + Pearl. ‡ Telephone. ‡ Christmas.

३१. वो मिस बोली मैं करतो आपका जिक्र अपने फ़ादर॰ से।
मगर आप अल्लाह अल्लाह करता है पागल का माफ़िक़ है ॥१॥

न माना शेख़ जी ने चल गये दस पांच ये कह कर।
अगर क़ाबिज़ हैं ये बिसकुट तो हाँ अल्लाह मालिक है ॥२॥

॰ ॰ ॰ ॰

३२. शायक़ तहक़ीक़ के ये मज़मूं सुनलें।
इन्सान की शक्ल जैसे मैमूं बना ॥१॥

पाजामा भी यूंही इरतफ़ा से बदला।
सिमटा उभरा ग़र्ज़ कि पतलून बना ॥२॥

शब्दार्थ—मैमू-बन्दर. इरतफा-विकाश।

॰ ॰ ॰ ॰

३३ फ़ैज़े कालिज से जवानी रह गई बालाये ताक़।
इन्तहां पेशे नज़र और आशिक़ी बालाये ताक़ ॥१॥

वो चिराग़ों से हैं जलते ऐसे हैं रोशन ज़मीर।
कहते हैं रखिये पुरानी रोशनी बालाये ताक़ ॥२॥

शब्दार्थ—रोशन जमीर-दिव्य दृष्टि रखने वाले. बालाये ताक़-ताक़ पर अर्थात् अलग.

॰ ॰ ॰ ॰

३४. नुक़ता ये सुना है एक बङ्गाली से।
करना हो बसर जो तुम को ख़ुशहाली से ॥१॥

ख़ाली हो जगह तो अपने भाई को दिलावो।
ग़ुस्सा आय तो काम लो गाली से ॥२॥

शब्दार्थ—नुक़ता-बारीक़ बात।

॰ ॰ ॰ ॰

॰ Father.

३५ बाबू जी का वो बुत हुवा नौकर ।
गैर उस को पयाम देता है ॥१॥
बाबू कहते हैं वा न जायगा ।
मेरे अन्डर* में काम देता है ॥२॥ ◇

शब्दार्थ—अन्डर-नीचे ।

३६ लज्जते नाने जवीं तुमको मुबारिक अय शेख ।
मुझ गुनहगार को है सिर्फ़ मुतअन काफ़ी ॥१॥
हज़रते खिज्र टिकट मुझको दिलादें अकबर ।
रहनुमाई के लिये है मुझे अञन काफी ॥२॥

शब्दार्थ-नाने जवीं-जव की रोटी. मुतञ्जन-एक बढ़िया भोज्य पदार्थ.
रहनुमाई-मार्ग दिखाना ।

३७. कुछ सैन नहीं खुश आते हैं न भाते हैं बनर जी ।
मैं ज़ील* का तालिब हूं न ख्वावाहाने आनर+ जी ॥१॥
सुनता नहीं लैक्चर× मैं पड़ा रहता हूं दिन रात ।
लगता फ़क़त लेडियों में वक्ते डिनर— जी ॥२॥

शब्दार्थ-ज़ील-जोश. ख्वाहा-इच्छुक आनर-मान. डिनर-भोजन ।

३८ सब समझते हैं कि ये इश्के बुतां एक रोग है ।
लेकिन इसको क्या करे मिलता जो मोहनभोग है ॥१॥
शाहिदाने मग़रिबी करते नहीं मुझको क़बूल ।
टाल देते हैं ये कह कर आप काला लोग है ॥२॥

शब्दार्थ—शाहिदाने मग़रिबी-पश्चिम के माशूक़ ।

---

* Under.

◇ इस पद्य में अकबर ने अँग्रेजी पढे बाबू लोगों की उर्दू का नमूना

* Zeal. + Honour. × Lecture. ÷

३९. हुस्न देखिये बुताने काशी का।
चेहरा है चांद पूर्णमाशी का ॥१॥
चश्मेतर देख कर वो मिस बोली।
महकमा है ये आबपाशी का ॥२॥

४०. पर्दे का किया है, खुद अड्डा पैदा।
खुद हमने किया इज़ार और अड्डा पैदा ॥२॥
क्या खूब कहा है मौलवी मेहदी ने।
नेचर ने किया है हमको नङ्गा पैदा ॥२॥

शब्दार्थ—नेचर-प्रकृति।

४१. ज़र क़ौम से लेके पैसा सामान करो।
जिस से कि तुम्हारी बज़्म बन जाय बहिश्त ॥१॥
हलवे मांडे से काम रखो भाई।
मुरदा दोज़ख में जाय या जाय बहिश्त ॥२॥

शब्दार्थ—ज़र-रुपया; बज़्म-सभा।

४२. लैला ने साया पहना मजनूं ने कोट पहना।
टोका जो मैंने बोले बस बस ख़ामोश रहना ॥१॥
हुस्नो जनूं बदस्तूर अपनी जगह हैं लेकिन।
है लुत्फ़े बहरे हस्ती, फ़ैशन के साथ बहना ॥२॥

शब्दार्थ—लुत्फे बहरे हस्ती-जीवन का आनन्द।

४३. छोड लिट्रेचर का अपनी हिस्ट्री को भूल जा।
शेख़ो मसजिद से तअल्लुक़ तर्क कर स्कूल जा ॥१॥

चार दिन की ज़िन्दगी है कोफ़्त से क्या फ़ायदा।
खा डबल रोटी किलरकी कर ख़ुशी से फूल जा ॥२॥

शब्दार्थ-लिट्रेचर-साहित्य. तअल्लुक़-सम्बन्ध. तर्क कर-त्याग. कोफ्त-रञ्ज।

४४ तिल खेत में मिल जाय तो गोदाम में ले जायें।
क्या फ़ायदा आरिज़ पे किसी बुत के जो तिल है ॥१॥

तनख़्वाह के बिल से हमें होती है मुसर्रत।
और शेख़ ये कहता है कि ये सांप का बिल है ॥२॥

शब्दार्थ-आरिज़-कपोल. बुत-माशूक़. मुसर्रत-खुशी।

४५. फ़रमायें मेरा क़सुर जो हज़रत माफ़।
जो अमर है वाक़ई गुज़ारिश करूं साफ़ ॥१॥

इन्कार नहीं नमाज़ रोज़े से मुझे।
लेकिन ये तरीक़ अब है फ़ैशन के ख़िलाफ़ ॥२॥

४६. दरबारे सल्तनत में है किब्रो ख़ुद पसन्दी।
मज़हब में देखता हूं जङ्ग और गिरोह बन्दी ॥१॥

रिन्दी वो आशिक़ी का है शग़ल सब से बेहतर।
लैमनेड है और व्हिसकी बन्दा है और बन्दी ॥२॥

शब्दार्थ-किब्र-गर्व. जंग-लड़ाई गिरोह बन्दी-अपने २ अखाड़े अलग २ क़ायम करना।

४७. न लैसन्स हथियार का है न ज़ोर।
कि टरकी के दुश्मन से जाकर लड़ें ॥१॥

तहे दिल से हम कोसते हैं मगर।
कि इटली की तोपों में कीड़े पड़ें ॥२॥

४८ मग़रिबी ज़ौक है और वज़ा की पाबन्दी भी।
ऊँट पर चढ़ कर थियेटर को चले हैं हज़रत॥

शब्दार्थ—ज़ौक-शौक़. वज़ा-मर्यादा. पाबन्दी-पालन।

५९. शेख़ आनर के लिये आते हैं मैदान के बीच।
वोट हाथों में हैं स्पीच क़लमदान के बीच॥

५०. पादरी से वो मिले पहले तो क्या शेख़ को उज्र।
देखिये पीर का नम्बर तो है इतवार के बाद॥

५१ शेख़ के दामन को अकबर ने दिया बोसा जो कल।
हमने बरकत के लिये एक मिल का साया छू लिया।

५२. जो जिसके मुनासिब था गर्दूं ने किया पैदा।
यारों के लिये औहदे चिड़यों के लिये फन्दे॥

शब्दार्थ-गर्दूं-आकाश।

५३. मग़रिब ने ख़ुर्दबीं से कमर उन की देखली।
मशरिक़ की शाइरी का मज़ा किरकिरा हुवा॥

शब्दार्थ-मग़रिब-पश्चिम. मशरिक़-पूर्व. ख़ुर्दबीं-सूक्ष्म दर्शक यन्त्र।

५४. क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज़ जुदा।
दौरे फ़ोनो मे गले से हुई आवाज़ जुदा॥

शब्दार्थ-दमसाज-सान्त्वना देने वाले. दौर-युग।

५५ पाकर खिताब नाच का भी शौक हो गया।
सर+ हो गये तो बाल का भी शौक हो गया॥

शब्दार्थ-सर-एक उपाधि. बाल-नाच।

५६ क्या वस्ल का हौसला करे पेशे रक़ीब।
जिनको इस वक़्त तक कम्र ही न मिली॥

५७ बन्दूक़ का नहीं है जो लैसन्स◇ ग़म नहीं।
मैंने तो इस ख़याल ही को गोली मारदी॥

५८ तकलील ग़िज़ा में हो पीपरमन्ट यही है।
कर जब्त हविस सैल्फ गवर्न्मेंट⁑ यही है॥

शब्दार्थ-तक़लील-कमी हविस-वासना।

५९ आदत जो पड़ी हो हमेशा से वो दूर भला कब होती है।
रक्खी है चिनौटी पाकट* में पतलून के नीचे धोती है॥

६० मौलवी साहब न छोड़ेंगे ख़ुदा गो बख़्श दे।
घेर ही लेंगे पुलिस वाले सज़ा हो या न हो॥

६१ क्यों सिविल सर्जन⁂ का आना रोकता है हमनशीं।
इसमें हैं एक बात आनर✕ को शफ़ा हो या न हो॥

+ Sir ◇ License. ⁑ Self Government. ⁑ Election. ‖ Vote. * Pocket ⁂ Civil Surgeon ✕ Honour.

६२. बाबू हमें निगल गये इस अहद में तो ख़ैर।
रहना पड़ा है नबियों को मछली के पेट में॥ *

६३. डाढ़ी ख़ुदा का नूर है बेशक मगर जनाब।
फ़ैशन के इन्तज़ामे सफ़ाई को क्या करूं॥

६४. न कटलट है यहां न कांटा छुरी है।
मगर घी है तो खिचड़ी क्या बुरी है॥

६५. खींचो न कमानों को न तलवार निकालो।
जब तोप मुक़ाबिल है तो अख़बार निकालो॥

६६. बिरगड के मौलवी को क्या पूछते हो क्या है।
मग़रिब की पालिसी का अ़रबी में तरजुमा है॥

---

* एशिया माइनर में यूनिस नामक मुसलमानों के एक नबी हुवे हैं। लोगों ने आपके उपदेश की उपेक्षा की। कहा जाता है कि आपने ख़ुदा से शिकायत की। ख़ुदा ने उत्तर दिया कि जन साधारण से कहदो कि उन्हें थोड़ा अवकाश और दिया जाता है। यदि इस अवधि में भी वे तुम्हारे उपदेश को न मानेंगे और अपनी पुरानी बातों ही पर डटे रहेंगे तो मैं अपना कोप प्रगट करूंगा। कोप प्रगट होने से पूर्व अमुक २ चिन्ह दृष्टिगोचर होंगे। अस्तु। लोगों ने यूनिस साहब की बात न सुनी। जब अवधि

६७. माल गाड़ी पे जिन्हें भरोसा है अकबर ।
उनको क्या ग़म है गुनाहों की गरां बारी का ॥

शब्दार्थ—गरा बारी-बोझ.

६८ फ़रमा गये हैं ये ख़ूब भाई घूरन ।
दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन ॥

६९. आदम छुटे बहिश्त से गेहूं के वास्ते ।
मस्जिद से हम निकल गये बिस्कुट की चाट में ॥

समाप्त होने को आ[illegible]ती कोप के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे । यूनिस साहब ने यह सोच कर कि कहीं मैं भी अन्य मनुष्यों के साथ २ किसी संकट मे न पड़ जाऊँ अपना देश छोडने का विचार कर लिया और एक नाव में बैठ कर चल दिये । मँझधार में पहुंचने पर नाव डगमगाने लगी । मल्लाह ने कहा, "हमारी नाव उस समय डगमगाती है जब कोई ऐसा मनुष्य नाव में बैठ जाता है जो अपने स्वामी की आज्ञा के बिना भाग आया हो। यदि कोई ऐसा मनुष्य हो तो नाव से पानी में कूद पड़े । नहीं तो अपने साथ सब को ले डूबेगा।" यूनिस साहब ने सोचा कि ऐसा तो मैं ही हूं । बिना ख़ुदा की आज्ञा के मैं अपना देश छोड़ रहा हूं । यह सोच कर आप पानी में कूद पड़े । एक मछली जो मुँह खोले हुवे बैठी थी आपको निगल गई ।

उ० सिं० कारुणिक ।

७०. साहब सलामत अब भी मेरी शेख़ जी से है।
लेकिन छटे छमाहे वही राह हाट मे॥

७१. बोले चपरासी जो मैं पहुंचा ब उम्मीदे सलाम।
फांकिये ख़ाक आप भी साहब हवा खाने गये॥

७२. उनको बिस्कुट के लिये सूजी की थैली मिल गई।
कैम्प में गुल मच गया मजनूं को लैली मिल गई॥

७३. इन से बोसा मांगता हूं उन से वोट।
बुत भी मुझ से तङ्ग हैं और शेख़ भी॥

७४. 'नेटिवियत' पर किया जो मैंने इज़हार मलाल।
सुन के साहब ने कहा 'सच है मगर हम क्या करें'॥

७५ फ़ज़ले ख़ुदा से इज़्ज़त पाई आज हुवे हम सी० एस० आई*।
शेख़ न समझे लफ़्ज़े अंग्रेज़ी बोले हुवे हैं ये ईसाई॥

७६. ऐसा शौक़ न करना अकबर, गोरे को न बनाना साला।
भाई रंग यही है अच्छा, हम भी काले यार भी काला॥

७७. यही सबब है अब उनकी बातों पै कान धरते नहीं हैं लड़के।
खिंचा न हो इस्से मौलवी से न था यहां कोई कान ऐसा॥

* C. S. I.

७८ वो हंस के बोला जगह कहा है दिखाऊं कारीगरी जो अपनी।
कहा था मुन्किर से मैंने एक दिन बना तो ले आस्मान ऐसा॥

शब्दार्थ मुन्किर-नास्तिक।

७९ पकालें पीस कर दो रोटियां थोड़े से जौ लाना।
हमारी क्या है अय भाई न मिस्टर हैं न मौलाना॥

८० इस्लाम को जो कहते हैं फैला बज़ोरे तेग़।
ये भी कहेंगे फैली खुदाई बज़ोरे मौत॥

शब्दार्थ-तेग़-तलवार।

८१. जो सुन चुके मेरी गज़लें तो बोले ला चन्दा।
जो हिनहिनाया है आज इतना तो लीद भी कर॥

८२. कोठी में जमा है न डिपाजिट$ है बैंक्स* में।
कुल्लाश कर दिया है मुझे दो चार थैंक्स‡ ने॥

८३ सुना के मिसरा ये शेख़ साहब बहुत ज़्यादा हंसा चुके हैं।
हमारी गर्दन वो क्यूं न मारे जो नाक अपनी कटा चुके हैं॥

८४ रकीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस जमाने में॥

$ Deposit. * Banks. ‡ Thanks.

८५. मज़हब ने पुकारा अय अकबर अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं।
यारों ने कहा ये क़ौल ग़लत तनख्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥

८६ उनके दस्ते नाज़नीं से पाई टी❀।
अब कहां बाक़ी है हम में पायटी* ॥

शब्दार्थ—टी-चाय। पायटी-पवित्रता।

८७. धमकाके बोसा लूंगा रुखे रश्के माह का।
चन्दा वसूल होता है साहब दबाव से॥

८८ आशिक़ी का हो बुरा इस ने बिगाड़े सारे काम।
हम तो ए० बी० में रहे अग़यार बी० ए० हो गये॥

८९. खाई मिज़गां वो नज़र की जो क़सम बोला वो शेख़।
आप अब क़समें भी खाते हैं छुरी कांटे से॥

शब्दार्थ—मिजगा-भवें।

९०. इस अखाड़े में अड़न्गो देख कर क़ानून के।
शेख़ ने तहमद से हिजरत की तरफ़ पतलून के॥

शब्दार्थ-हिजरत-गमन.

९१ वज़ए मग़रिब सीख कर देखा तो ये काफ़ूर थी।
अब मैं समझा वाक़ई डाढ़ी ख़ुदा का नूर थी॥

शब्दार्थ-नूर-ज्योति।

❀ Tea. * Piety.

९२. वे पास के तो सास की भी अब नहीं है आस।
मौक़ूफ़ शादियां भी हैं अब इम्तहान पर॥

९३. हम क्या कहें अहबाब क्या कारे नुमायां कर गये।
बी० ए० किया नौकर हुवे पेन्शन‡ मिली फिर मर गये॥
शब्दार्थ–कारे नुमाया–उल्लेखनीय कार्य।

९४. शाप* में सब जमा हैं मुझ से न पी पी कीजिये।
आप इस बोतल को मेरे घर पे वी० पी० कीजिये॥
शब्दार्थ–शाप–दुकान।

९५. शेख़ जी घर से न निकले और मुझ से कह दिया।
आप बी० ए० पास हैं और बन्दा बी० बी० पास है।

९६. आबरू चाहो तो अंग्रेज़ से डरते रहो।
नाक रखते हो तो तेग़े तेज़ से डरते रहो॥

९७. शेख़ जी के दोनों बेटे बा हुनर पैदा हुवे।
एक हैं ख़ुफ़िया पुलिस में एक फांसी पा गये॥

९८. मुसल्मानों को लुत्फ़ो ऐश से जाने नहीं देते।
ख़ुदा देता है खाना शेख़ जी पीने नहीं देते॥

९९. सिधारे शेख़ काबे को हम इङ्गलिस्तान देखेंगे।
वो देखे घर ख़ुदा का हम ख़ुदा की शान देखेंगे॥

‡ Pension. * Shop.

१००. जब ग़म हुवा चढ़ाली दो बोतलें इकट्ठी।
मुल्ला की दौड़ मसजिद 'अकबर' की दौड़ भट्ठी॥

१०१. इसकी हरकत है कलीदे मग़रिबी पर मुनहसिर।
दिल ये सीने में है या पाकेट[] के अन्दर वाच* है॥

शब्दार्थ—कलीद-कुञ्जी. मुनहसिर-आश्रित. पाकेट-जेब. वाच-घड़ी।

१०२. नाक रगड़ी बरसों इस अरमान में।
सुनले मेरी बात एक दिन कान में॥

१०३. तुम नाक चढ़ाते हो मेरी बात पे अय शेख।
खींचूंगा किसी रोज़ मैं अब कान तुम्हारे॥

१०४. आदत जो पड़ी हो हमेशा से वो दूर भला कब होती है।
रक्खो है चिनौटी पाकट} में पतलून के नीचे धोती है॥

शब्दार्थ—पाकट-जेब।

१०५. शबों को कोर्स+ दिन में फ़ारमूला × वर्क ÷ करते हैं।
अदीम उल्फ़ुरसती से उनकी उल्फ़त तर्क करते हैं॥

शब्दार्थ—शब-रात्रि. कोर्स-अध्ययन की पुस्तकें. फारमूला-सूत्र. वर्क-काम.
अदीम उल्फ़ुरसती-अवकाशाभाव. तर्क-छोड़ना।

[] Pocket. * Watch. } Pocket. + Course.
× Formula. ÷ Work.

१०६ हरीफ़ों पर ख़ज़ाने हैं खुले या हिज्रे गेसू है।
वहा पे बिल‡ है और या साप का भी बिल नही मिलता ॥

शब्दार्थ—हरीफ-दुश्मन. हिज्रे गेसू-जुल्फों का वियोग. पे बिल-तनख्वाह का बिल. साप का बिल-साप का भट।

१०७ एवज कुरआन के अब है डारविन का ज़िक्र यारों में।
जहा थे हज़रते आदम वहा बन्दर उछलते हैं

१०८. फ़र्क़ क्या वाइज़ो आशिक़ में है बतायें तुम से।
उसकी हुज्जत में कटी इसकी मौहब्बत में कटी ॥

१०९ थी शबे तारीक चोर आये जो कुछ था ले गये।
कर ही क्या सकता था बन्दा खांस लेने के सिवा ॥

११०. हमारे बाग़ में पेड़ अब कहां माली लगाते हैं।
उन्होंने भी तो देखा ये फ़क़त डाली लगाते हैं ॥

१११. ये आपका फ़रमाना है बजा कुरआन भी है अल्लाह भी है।
मुशकिल तो ये है लेकिन कि इधर आनर* भी है तनख्वाह भी है ॥

११२. क़ाबिले रश्क है ज़माने मे।
दिन वकीलों का रात आशिक़ की ॥

‡ Pay Bill. * Honour.

११३. लिपट भी जा, न रुक अकबर, ग़ज़ब की ब्यूटी‖ है।
नहीं नहीं पै न जा, ये हया की ड्यूटी❀ है॥

शब्दार्थ–ब्यूटी-सौन्दर्य. हया-लज्जा. ड्यूटी-धर्म।

११४. शाइराना दाद अच्छी दी ये मुझको चर्ख़ ने।
तेग़े अबरू का था आशिक़ ख़ान बहादुर कर दिया॥

शब्दार्थ–चर्ख-आकाश।

११५ बी० ए० के कमाल की कामयाबी है यही।
सरविस* के लगाव से मौज़िज़ बनना॥

११६. हरम वालों से क्या निसबत हम अहले होटल को।
वहां क़ुरआन उतरा है यहां अंग्रेज़ उतरे हैं॥

११७. तुम बीबियों को मेम बनाते हो आजकल।
क्या ग़म जो हमने मेम को बीबी बना लिया॥

११८. ख़ुदा की राह में अब रेल चल गई अकबर।
जो जान देना हो अञ्जन से कट मरो एक दिन॥

११६. अजब क्या शेख़ बिरगड में जो मुश्ताक़े ग़ुलामी हैं।
हमारे ऊँट साहब ख़ुद ही कमसरियट‡ के हामी हैं॥

शब्दार्थ—मुश्ताक़-इच्छुक. हामी-सहायक।

‖ Beauty. ❀ Duty. * Service. ‡ Comissariat.

१२० गुज़र उनका हुवा कब आलमे अल्लाहो अकबर में।
पले कालिज* के चक्कर में मरे साहब के दफ़्तर में॥
शब्दार्थ-अल्लाहो अकबर-ईश्वर बड़ा है।

१२१. शौक़े सिविल सरविस॰ ने मुझ मजनून को।
इतना दौड़ाया लँगोटी कर दिया पतलून को॥

१२२. बुरा हुवा कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू।
ज़रा सी बात हुई और ये सुवे थाने चले॥

१२३. हम नशीं ज़ुल्मे बुतां पर चुप न रहना चाहिये।
बात जब कुछ बन न आये शेर कहना चाहिये॥

१२४. हुवे इस क़द्र मौहज़्ज़िब कभी घर का मुँह न देखा।
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जा कर॥

१२५. अफई ज़ुल्फ़े मिस का तो सौदा बुरा नहीं।
पेचीदगी जो कुछ है फ़क़त उसके दिल में है॥
शब्दार्थ-अफई-साप, सौदा-ख़ब्त।

१२६. हिज्र की शब यों ही काटो भाइयो।
उनका फ़ोटो लेके चाटो भाइयो॥
शब्दार्थ-हिज्र-वियोग।

* College. ॰ Civil Service.

१२७. क्या पूछते हो अकबरे शोरीदा सर का हाल।
खुफ़िया पुलिस से पूछ रहा है कमर का हाल॥

१२८. मुमकिन नहीं अय मिस तेरा नोटिस* न लिया जाय।
गाल ऐसे परीज़ाद हों और किस‡ न लिया जाय॥

१२९. हमें क्या बाल्शेविक◇ फिर गया या रूस आता है।
यहां तो फ़िक्रे सरमाई है माहे पूस आता है॥

शब्दार्थ—सरमाई-रजाई॥

१३० डिनर§ से तुम को कम फ़ुरसत यहां फ़ाके से कम खाली
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली

१३१. बताऊँ आप से मरने के बाद क्या होगा।
पुलाव खायेंगे अहबाब फ़ातहा होगा॥

* Notice. ‡ Kiss. ◇ Bolshevik. § Dinner.

४—सामयिक घटनायें ।

१. सर मे शौक़ का सौदा देखा ।
देहली को हमने भी जो देखा ॥
जो कुछ देखा अच्छा देखा ।
क्या बतलायें क्या क्या देखा ॥१॥

जमना के पाट को देखा ।
अच्छे सुथरे घाट को देखा ॥
सब से ऊंचे लाट को देखा ।
हज़रत हयूम कनाट को देखा ॥२॥

पलटन और रिसाले देखे।
गोरे देखे काले देखे॥
सङ्गीन और भाले देखे।
बैण्ड बजाने वाले देखे॥३॥

अच्छे अच्छों को भटका देखा।
भीड़ में खाते झटका देखा॥
मुंह को अगरचे लटका देखा।
दिल दरबार से अटका देखा॥४॥

हाथी देखे भारी भरकम।
उनका चलना कम कम थम थम॥
ज़र्रीं झूलें नूर का आलम।
मीलो तक वो चम चम चम चम॥५॥

सुर्ख़ी सड़क पै कुटती देखी।
सांस भीड़ में घुटती देखी॥
आतिशबाज़ी छुटती देखी।
लुत्फ़ की दौलत लुटती देखी॥६॥

एक्ज़ीबीशन* की शान अनोखी।
हर शय उम्दा हर शय चोखी॥
उक़लैदस की नापी जोखी।
मन भर सोने की लागत सोखी॥७॥

की है ये बन्दिश जहन रसा ने।
कोई माने ख़्वाह न माने॥
सुनते हैं हम तो ये अफ़साने।
जिसने देखा हो वो जाने॥८॥

शब्दार्थ—सौदा-स्वप्न. ज़र्रीं झूलें-सुनहरे काम की झूलें.
नूर-प्रकाश. एक्ज़ीबीशन-नुमायश।

* Exhibition.

२. ताज्जुब से कहने लगे बाबू साहब।
गवर्न्मैन्ट सय्यद पै क्यूं मेहरबां है ॥१॥

इसे क्यूं हुई इस क़दर कामयाबी।
कि हर बज़्म में बस यही दास्तां है ॥२॥

कभी लाट साहब हैं महमान उसके।
कभी लाट साहब का वो महमां है ॥३॥

नहीं है हमारे बराबर वो हर्गिज़।
दिया हमने हर सीग़े का इम्तहां है ॥४॥

वो अंग्रेज़ी से कुछ भी वाक़िफ़ नहीं है।
यहां जितनी इङ्गलिश है सब बर ज़ुबां है ॥५॥

कहा हँस के अकबर ने अय बाबू साहब।
सुनो मुझ से जो रम्ज़ इसमें निहां है ॥६॥

नहीं है तुम्हें कुछ भी सय्यद से निसबत।
तुम अंग्रेज़ी-दां हो वो अंग्रेज़-दां है ॥७॥

शब्दार्थ—सीग़ा-विभाग, रम्ज़-भेद, निहां-गुप्त,
अंग्रेजी दां-अंग्रेजी भाषा जानने वाला,
अंग्रेज़ दां-अंग्रेजों का स्वभाव जानने वाला।

३. इशरती घर की मौहब्बत का मज़ा भूल गये।
खा के लन्दन की हवा अहदे वफ़ा भूल गये ॥१॥

पहुंचे होटल में तो फिर ईद की परवा न रही।
केक* को चख के सवइयों का मज़ा भूल गये ॥२॥

भूले मां बाप को अग़यार के चरचों में वहां।
सायये कुफ़्र पड़ा नूरे ख़ुदा भूल गये ॥३॥

* Cake.

मौम की पुतलियों पर ऐसी तबीयत पिघली।
चमने हिन्द की परियों की अदा भूल गये ॥४॥

बख़्ल है अहले वतन से जो वफ़ा में तुमको।
क्या बज़ुर्गों की वो सब जूदो अता भूल गये ॥५॥

नक़ले मग़रिब की तरङ्ग आई तुम्हारे दिल में।
और ये नुकता कि मेरी अस्ल है क्या भूल गये ॥६॥

क्या ताज्जुब है जो लड़कों ने भुलाया घर को।
जब कि बूढ़े रविशे दीने ख़ुदा भूल गये ॥७॥

शब्दार्थ—अग़यार-अजनबियों. कुफ्र-नास्तिकता। नूर-प्रकाश.
बख़्ल-कन्जूसी. जूदो अता-उदारता। रविश-मार्ग।

४. लन्दन को छोड़ लड़के अब हिन्द की ख़बर ले।
बनती रहेगी बातें आबाद घर तो करले ॥१॥

राह अपनी अब बदल दे बस 'पास' करके चल दे।
अपने वतन का रुख़ कर और रुख़सते सफ़र ले ॥२॥

इङ्गलिश की करके कापी दुनिया की राह नापी।
दीनी तरीक़ में भी अपने क़दम को धरले ॥३॥

वापिस नहीं जो आता क्या मुन्तज़िर हैं इसका।
मां ख़स्ता हाल होले बेचारा बाप मरले ॥४॥

मग़रिब के मुरशिदों से तू पढ़ चुका बहुत कुछ।
पीराने मशरिक़ी से अब फ़ैज़ की नज़र ले ॥५॥

मैं भी हूं एक सख़ुनवर आ सुन कलामे 'अकबर'।
इन मोतियों से आकर दामन को अपने भरले ॥६॥

५. इन्फ्लूएन्ज़ा* चढ़ा चौगान बाज़ी अब कहां।
अस्पताली हो रहे हैं अस्प ताज़ी अब कहां ॥१॥
चारे की क़िल्लत हुई तो बैल भी अब मरने लगे।
इन्फ्लूञ्जा हुवा करनैल भी मरने लगे ॥२॥
हम में टेढ़ापन जो आये तो सीधा वो करे।
देवता बिगड़े तो फिर सरकार इस को क्या करे ॥३॥

६. आग़ोश से सिधारा मुझ से ये कहने वाला।
अब्बा सुनाइये तो क्या आपने कहा है ॥१॥
अशआरे हसरते आगीं कहने की ताब किस को।
अब हर नज़र है नौहा हर सांस मरसिया है ॥२॥

७. ले ले के क़लम के लोग भाले निकले।
हर सिम्त से बीसियों रिसाले निकले ॥१॥
अफ़सोस कि मुफ़लिसी ने छापा मारा।
आख़िर अहबाब के दिवाले निकले ॥२॥

८. उन्हीं के मतलब की कह रहा हूं,
ज़बान मेरी है बात उनकी।
उन्ही की महफ़िल संवारता हूं,
चिराग़ मेरा है रात उनकी ॥१॥
फ़क़त मेरा हाथ चल रहा है,
उन्हीं का मतलब निकल रहा है।
उन्हीं का मज़मूं उन्हीं का काग़ज़,
क़लम उन्हीं का दवात उन्ही की ॥२॥

---
* Influenza

९. एक मुसीबत में है साधू है या कोई सेठ है।
है तो ये सावन मगर हुक्मे ख़ुदा से जेठ है ॥१॥
सच तो ये है गर्दूं को राहे मेहरबानी क्यूं मिले।
आग जब यूरुप में बरसे हम को पानी क्यूं मिले ॥२॥

शब्दार्थ—गर्दूं-आस्मान ॥

१०. देखता एक उम्र से है चन्दा।
होता है कुछ काम न धन्दा ॥१॥
बस यही बातें और यही फन्दा।
लाओ चन्दा लाओ चन्दा ॥२॥

११. जब ये समझे थे परहेज़ ज़रूरी है इन्हें।
थाद्रा बच्चों से मिठाई का मुनासिब ही न था ॥१॥
आप ही ने तो किया केक* का ज़िक्रे शीरीं।
वरना इस चीज़ का इनमें कोई तालिब ही न था ॥२॥

१२. कहां उर्दू वो हिन्दी में ज़रे नक़्द।
वही अच्छा है जो गिनता मनी‡ है ॥१॥
मेरे नज़दीक तो बेसूद ये बहस।
मियां हमदम वो चिन्तामणि है ॥२॥

शब्दार्थ—बेसूद-व्यर्थ। हमदम-एक समाचार पत्र का नाम।
चिन्तामणि-भूतपूर्व सम्पादक लीडर ॥

---

* Cake.

‡ एक बार प्रयाग के 'लीडर' और लखनऊ के 'हमदम' नामक पत्र में उर्दू हिन्दी की बहस छिड़ी थी। उस समय आपने उपरोक्त शेर लिखे थे।

१३ शुक्र है सुन्नी वो शिआ का इरादा नेक है।
तर्ज़े ताअत दो सही तरकीबे कालिज एक है ॥१॥
घर में ये फ़र्क़ जाहिर हो कि हलवा या पुलाव।
ख़्वाने मग़रिब पर मगर दोनों के आगे केक* है ॥२॥

१४. तकल्लुफ़ उन्हीं के लिये कीजिये।
फ़क़ीरों की क्या है ? जहां पड़ रहे ॥१॥
बुतों से भी लड़ती नहीं यां तो आंख।
बिरहमन⁑ हैं लन्दन तलक लड़ रहे ॥२॥

१५. हज़रते अकबर ने फ़रमाया ये ख़ूब।
दाद के क़ाबिल है ये फ़र्ज़ान्गी ॥१॥
उज़्र हमको कुछ ग़ुलामी में नहीं।
है फ़क़त तकलीफ़दह बेगान्गी ॥२॥

शब्दार्थ-तकलीफ़दह-कष्टप्रद, बेगान्गी-अजनबीपन, फ़र्ज़ान्गी-उदारता।

१६ हमारी बातें ही बातें हैं सय्यद काम करता था।
न भूलो फ़र्क़ जो है कहने वाले करने वाले में ॥१॥
कहे जो चाहे कोई मैं तो ये कहता हूं अय अकबर।
ख़ुदा बख़्शे बहुत सी ख़ूबियां थी मरने वाले में ॥२॥

१७. जो सच्ची बात है कहदूंगा बे ख़ौफ़ो ख़तर उसको।
नहीं रुकने का मैं हरगिज़ परी रोके कि जिन रोके ॥१॥
अनार आते जो काबुल के तो पड़ते सब के हिस्से में।
अमीर आये तो हम को क्या मज़े हैं लार्ड मिन्टो के ॥२॥

---

* Cake.

⁑ लोकमान्य तिलक की ओर संकेत है।

१८ करज़नो किचनर की हालत पर जो कल।
वो सनम तशरीह का तालिब हुआ॥१॥
कह दिया मैंने कि है ये साफ़ बात।
देखलो तुम ज़न पे नर ग़ालिब हुआ॥२॥

शब्दार्थ—तशरीह-व्याख्या, ज़न-स्त्री, नर-पुरुष, ग़ालिब-विजयी।

१६. ये बात ग़लत दारे इस्लाम है हिन्द।
ये झूंठ कि मुल्के लछमनो राम है हिन्द॥१॥
हम सब हैं मुती वो ख़ैरख़्वाहे इङ्गलिश।
यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द॥२॥

२०. लीडरों‡ की धूम है और फ़ालोवर‖ कोई नहीं।
सब तो जनरल हैं यहां आख़िर सिपाही कौन है॥

२१ क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
लीडर को ग़म बहुत है पर आराम के साथ॥

२२. सरविस* में मैं दाख़िल नहीं हूं क़ौम का ख़ादिम।
चन्दों की फ़क़त आस है तनख़्वाह कहां है॥

२३ वो रोये बहुत स्पीचों में हिकमत इस को कहते हैं।
मैं समझा ख़ैरख़्वाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं॥

---

‡ Leaders. ‖ Followers. * Service.

२४. कोई साहब न हों लिल्लाह नाखुश सुनके ये मिसरा।
खयाले हुब्बे क़ौमी पीछे और फ़िकरे शिकम पहिले॥

शब्दार्थ—हुब्बे कौमी-जातीय हित, शिकम-पेट।

२५. हो दिसम्बर में मुबारिक ये उछल कूद आपको।
खून मुझ में भी है लेकिन मुझको फागन चाहिये॥

२६. लन्दन में बिगड़ जाओगे विश्वास यही है।
तुम पास रहो मेरे बड़ा पास यही है॥

२७ हम से छिन कर हो गई बज़्मे तरक्क़ी के सपुर्द।
सच कहा मिरज़ा ने अब उर्दू भी कोरट हो गई॥

२८. हर्ज क्या रुपया जो काग़ज़ का चला।
ग़म न खा रोटी तो गेहूं की रही॥

२९ ताऊन की बदौलत उनको भी इरतफ़ा है।
जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूहे॥

शब्दार्थ—इरतफा-विकाश।

३०. अब मिसेज़ बेसेन्ट नज़्मों में कहानी बन गई।
राज हम पायें न पायें वो तो रानी बन गई॥

३१. तङ्ग दुनिया से दिल इस दौरे फ़लक में आ गया।
जिस जगह मैंने बनाया घर सड़क में आ गया॥

३२. करो न तामीर घर की अकबर हदूदे म्युनिसिपिल के अन्दर ।
ये अहलकाराने बद दियानत बनेंगे फोड़ा बग़ल के अन्दर ॥

३३. लो निकलना पड़ा सड़क के साथ ।
आज तो मेरा घर भी नपता है ॥

३४. दफ़्तरे तश्हीर तो खोला गया है हिन्द में ।
फ़ैसला क़िस्मत का गय अकबर मगर लन्दन में है ॥
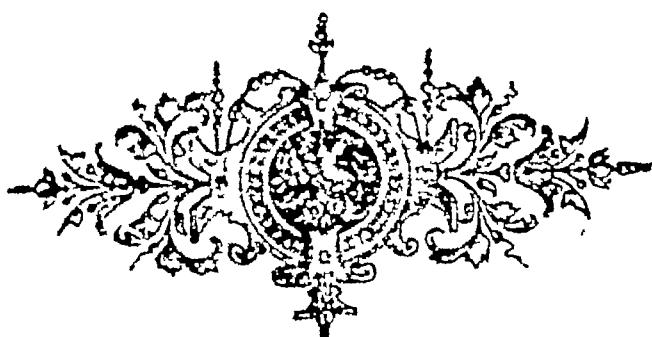
५-पश्चिमीय सभ्यता ।

कहां की पूजा नमाज़ कैसी कहां की गंगा कहां का ज़मज़म ।
डटा है होटल के दर पै हर एक हमें भी दो एक जाम साहब ॥१॥
हज़ार समझाते हैं वो सबको कि सब नहीं नामदार होते ।
करो ख़मोशी वो नेकबख़्ती से जाके तुम घर का काम साहब ॥२॥
मगर नहीं मानता है कोई हर एक की ये इल्तजा है उन से ।
मुझे भी छाप दो कहीं पर मेरा भी हो जाय नाम साहब ॥३॥
मेरी तुम्हारी नहीं निभैगी सिधारता हूं मैं अब यहां से ।
सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब ॥४॥

शब्दार्थ-जमजम-मुसलमानों की पवित्र नदी. नामदार-प्रसिद्ध. इल्तजा-प्रार्थना ।

२. मुरीदे दहर हुवे वज़अ मगरिबी करली।
नये जनम की तमन्ना में खुदकशी करली ॥१॥

निगाहे नाज़े बुतां पर निसार दिल को किया।
ज़माना देख के दुशमन से दोस्ती करली ॥२॥

जो हुक्मे बुत की जगह हुस्ने मिस हुवा क़ायम।
तो इश्क़ छोड़ के हमने भी नौकरी करली ॥३॥

ज़वाले क़ौम की तो इब्तदा वही थी कि जब।
तिजारत आपने की तर्क नौकरी करली ॥४॥

शब्दार्थ—मुरीदे दहर हुवे-दुनिया के पीछे और सब बातें भूल गये. ज़वाल-अध पतन. इब्तदा-आरम्भ. तर्क-त्याग।

३. एक पीर ने तहज़ीब से लड़के को उभारा।
एक पीर ने तालीम से लड़की को संवारा ॥१॥

पतलून में वो तन गया ये साये में फैली।
पाजामा ग़र्ज़ ये है दोनों ने उतारा ॥२॥

चहरा वो बना कैम्प में ये बन गई आया।
बीबी न रही जब तो मियांपन भी सिधारा ॥३॥

दोनों जो कभी मिलते हैं गाते हैं ये मिसरा।
आग़ाज़ से बद्तर है अन्जाम हमारा ॥४॥

शब्दार्थ—आग़ाज़-आरम्भ. अन्जाम-परिणाम।

४ पास कालिज के जो हैं वोट तलब करते हैं।
पास मसजिद के जो हैं ताअते रब करते हैं ॥१॥

उनको है लैमनेडो व्हिसकी की ज़रूरत और ये।
दर्फ़ पानी से फ़क़त खुश्किये लब करते हैं ॥२॥

वक़्त को देखके अय आप ही इन्साफ करें।
वो सितम करते हैं या आप ग़जब करते हैं ॥३॥

शब्दार्थ—तलब-याचना. ताअ़ते रब-ईश्वर की आज्ञा का पालन.
रफै-दूर. लब-ओष्ठ।

५. कर गई काम निगाहे मिसे पुरफ़न कैसा।
तज चले दैरो हरम शेख़ो बिरहमन कैसा ॥१॥

उसको चक्कर ही रहा और ये ख़ुदा तक पहुंचा।
दिले पुर सोज़ जो हाथ आय तो अञ्जन कैसा ॥२॥

अस्ल से होके जुदा नश्वो नुमा की उम्मीद।
मुझको हैरत है कि बूढ़ों में ये बचपन कैसा ॥३॥

६. मेरे अमल से न शेख़ ख़ुश हैं,
न भाई ख़ुश हैं न बाप ख़ुश हैं।
मगर मैं समझा हूं इसको अच्छा,
दलील ये है कि आप ख़ुश हैं ॥१॥

जो देखा साइन्स का ये चक्कर,
धरम पुकारा कि अय बिरादर।
हमारे दौरे में पुन मगन थे,
तुम्हारे दौरे में पाप ख़ुश हैं ॥२॥

शब्दार्थ—बिरादर-भाई. दौरे-समय।

७. मज़हब के वास्ते न शराफ़त के वास्ते।
है अब तो जङ्ग हुक्मो तिजारत के वास्ते ॥१॥

ले ही गये घसीट के मुझको परेड पर।
तय्यार हो रहा था मैं जन्नत के वास्ते ॥२॥

८. जिस रोशनी में लूट ही की आपको सूझे।
तहज़ीब की मैं उसको तजल्ली न कहूंगा ॥१॥
लाखों को मिटा कर जो हज़ारों को उभारे।
उसको तो मैं दुनिया की तरक्क़ी न कहूंगा ॥२॥

शब्दार्थ—तज्जली-ज्योति।

* * * *

हरचन्द कि मिस का लवण्डर भी है बहुत ख़ूब।
बेगम का मगर इतरे हिना और ही कुछ है ॥१॥
साये की भी सन सन हविस अंगेज़ है लेकिन।
उस शोख़ के घुंघरुवों की सदा और ही कुछ है ॥२॥

* * * *

१० ये बात तो खरी है हरगिज़ नहीं है खोटी।
अरबी में नज़्मे मिल्लत बी० ए० मे सिर्फ रोटी ॥१॥
लेकिन जनावे लीडर सुन कर ये शेर बोले।
बधवायेंगे ये हज़रत इस क़ौम को लंगोटी ॥२॥
इस बात को ख़ुदा ही बस ख़ूब जानता है।
किस की नज़र है ग़ायर किस की नज़र है मोटी ॥३॥

शब्दार्थ-ग़ायर-बारीक।

* * * *

११. हुवे नेकी से बेगाना तरक्क़ी इसको कहते हैं।
फ़रिश्ते हो गये रुख़सत फ़क़त शैतान बाक़ी है ॥१॥
तबीअत को अभी पतलून से सेरी नही अकबर।
ये सच है कट गये हैं पांव लेकिन रान बाक़ी है ॥२॥

* * * *

१२. अफ़ई से कहा मैंने मुझे तूने डसा क्यों।
बोला कि बिना लाठी के तू बन में बसा क्यों ॥१॥
पांव में तो मेंहदी है लगी शौक़े डिनर की।
हैरान हूं अकबर ने कमर को ये कसा क्यों ॥२॥

१३. मशरिकी को है ज़ौके रूहानी।
मग़रिबी में है मेले जिस्मानी ॥१॥
कहा मन्सूर ने ख़ुदा हूं मैं।
डारविन बोले बूज़ना हूं मैं ॥२॥

शब्दार्थ-बूज़ना-बन्दर।

१४. नई तहज़ीब में दिक़्क़त ज़ियादा तो नहीं होती।
मज़ाहब रहते हैं क़ायम फ़क़त ईमान जाता है ॥१॥
थियेटर रात को दिन को यारों की ये इस्पीचें।
दुहाई लाट साहब की मेरा ईमान जाता है ॥२॥

१५. मिस से बेगम ने कहा कल तू कहां और हम कहां।
बूट को घरचर में क्या रक्खा है ये चमचम कहां ॥१॥
मिस ये बोली पढ़ के निकलो तो ज़रा स्कूल से।
और ही चालें नज़र आयेंगी ये आलम कहां ॥२॥

१६. पढ़े गुन-गुनाते थे लाला निरञ्जन।
न आंखों में अञ्जन न दांतों में मञ्जन ॥१॥
छुटे हम से बिल्कुल वो अगले तरीक़े।
कहां खींच ले जायगा हमको अञ्जन ॥२॥

१७. तरक्क़ी की नई राहें जो ज़ेरे आस्मां निकलीं।
मियां मसजिद से निकले और हरम से बीबियां निकलीं ॥१॥
मुसीबत में भी अब यादे ख़ुदा आती नहीं उनको।
दुआ निकली न मुँह से पाकटों से अर्ज़ियां निकलीं ॥२॥

१८. मेरे मनसूबे तरक़्क़ी के हुवे सब पायमाल।
बीज मग़रिब ने जो बोया वो उगा और फल गया ॥१॥
बूट डासन ने बनाया मैंने एक मज़मूं लिखा।
मुल्क में मज़मूं न फैला और जूता चल गया ॥२॥

शब्दार्थ—मनसूबे-विचार, पायमाल-पददलित।

१९. अज़ां से अब सवा बेहारकुन अञ्जन की सीटी है।
इसी पर शेख़ बेचारे ने छाती अपनी पीटी है ॥१॥
कहां बाक़ी रहे हम में वो औरादे सहरगाही।
वज़ीफ़ों की जगह या पायनियर या आई० डी० टी०* है ॥२॥

२०. पण्डित जी ने ख़ूब बात कही जोशे तबअ में।
नाहक़ गुज़श्ता अहद पर यूं तानेज़न हैं आप ॥१॥
पत्थर के बदले अब तो धरम टूटने लगा।
महमूद बुतशिकन था बिरहमन शिकन हैं आप ॥२॥

शब्दार्थ—जोशे तबअ-तबियत का जोश, गुज़श्ता-भूत। अहद-काल, शिकन-तोडने वाला।

* Indian Daily Telegraph.

२१. इधर ख़याल नहीं, मसलहाते नेशन† का।
कि फ़र्ते ज़ोफ़ नहीं वक्त आप्रेशन* का॥

शब्दार्थ-मसलहाते नेशन-जाति के शुभचिन्तक, फ़र्ते ज़ोफ़-अत्यधिक कमज़ोरी, आप्रेशन-चीड़फाड़।

२२. पुरानी रोशनी में और नई में फ़र्क़ इतना है।
उसे किश्ती नहीं मिलती इसे साहिल नहीं मिलता॥

शब्दार्थ-साहिल-किनारा

२३. सूझता लैक्चर तरक्क़ी का जो है हर बात पर।
ख़तम हो के लेकिन रह जाता है मेरी ज़ात पर॥

२४. न कोई तकरीमे बाहमी है,
न प्यार बाक़ी है अब दिलों में।
ये सिर्फ़ तहरीर में डियर सर,
है या "जनाबे मुकर्रमी" है॥

शब्दार्थ-तकरीमे बाहमी-शिष्टाचार, जनाबे मुकर्रमी-मान्यवर महाशय।

२५. हमें घेरे हुवे हैं हर तरफ़ इसलाह की मौजें।
मगर ये हिस नहीं है डूबते हैं या उभरते हैं॥

शब्दार्थ—इसलाह-सुधार, हिस-ज्ञान।

२६. दिल में अब नूरे ख़ुदा के दिन गये।
हड्डियों में फ़ास्फ़ोरस देखिये॥

† Nation. * Operation.

२७. तर्ज़े मग़रिब में नहीं है शर्ते दिल बहरे अमल।
चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो॥

२८. लगी लिप्टी न लगा रखती थी तलवार की अक़्ल।
तोप क्या चाहती है सिर्फ़ दग़ा चाहती है॥

२९. कुछ देखता नहीं मैं दिले ज़ार के लिये।
जो कुछ ये हो रहा है सब अख़बार के लिये।

३०. इल्मी तरक्क़ियों से ज़ुबां तो चमक गई।
लेकिन अमल फ़रेबो दग़ा ही के साथ है॥

३१. मेरी नसीहतों को सुन कर वो शोख़ बोला।
नेटिव की क्या सनद है साहब कहें तो मानूं॥

शब्दार्थ-सनद-प्रमाण।

३२. शेख़ साहब का तास्सुब है जो फ़रमाते हैं।
ऊंट मौजूद है फिर रेल पै क्यूं चढ़ते हो?॥

३३ मिटाते हैं जो वो हमको तो अपना काम करते हैं।
मुझे हैरत तो उन पर है जो इस मिटने पै मरते हैं॥

३४. बक़ौल अहले मग़रिब ये ज़माना है तरक़्क़ी का।
मुझे भी शक नहीं इसमें कि ग़फ़लत की जवानी है॥

६–समाज-सुधार तथा आधुनिक शिक्षा

परदा।

बिठाई जायेंगी परदे में बीवियां कब तक।
बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियां कब तक॥

अवाम बांध ले दोहर को थर्डो इन्टर में।
सैकिन्डो फर्स्ट की हों बन्द खिड़कियां कब तक॥

मुंह दिखाई की रस्मों पर है मुसिर इबलीस।
छिपगी हजरते हव्वा की बेटिया कब तक॥

शब्दार्थ—अवाम-सर्वसाधारण. मुसिर-तुला हुवा. इबलीस-शैतान।

७. मजलिसे निसवां में देखो इज़्ज़ते तालीम को।
परदा उठा चाहता है इल्म की ताज़ीम को॥

शब्दार्थ—निसवा-स्त्रियां, ताजीम-मान।

८ नूरे इसलाम ने समझा था मुनासिब परदा।
शमए ख़ामोश को फ़ानूस की हाजित क्या है॥

९ ग़रीब अकबर ने बहस परदे की,
की बहुत कुछ मगर हुवा क्या।
नक़ाब उलट ही दी उसने कह कर,
कि कर ही लेगा मेरा मुवा क्या॥

आधुनिक शिक्षा।

१०. तालीम जो हमें दी जाती है,
वो क्या है फ़क़त बाज़ारी है।
जो अक़्ल सिखाई जाती है,
वो क्या है फ़क़त सरकारी है॥

११. मिस्टरे नक़ली को उक़बा में सजा कैसी मिली।
शरह उसकी नामुनासिब है मिली जैसी मिली॥१॥
उसने भी लेकिन अदब से कर दिया ये इल्तमास।
चारा क्या था अय ख़ुदा तालीम ही ऐसी मिली॥२॥

१२ जब पेशवा ने अपना काबा जुदा बनाया।
अपने मज़े को सब ने अपना ख़ुदा बनाया॥१॥

अपनी ही ये ख़ता है हमने तो ख़ूब जांचा।
लड़के ढले हैं वैसे जैसा बना था सांचा ॥२॥

❀ ❀ ❀ ❀

१३. फ़िलसफ़े में क्या धरा है घर का हो या लन्दनी।
सई का मौक़ा मिले तो आर्ट या साइन्स सीख ॥१॥

दुश्मने दाना से बच पहचान ले नादान दोस्त।
सिर्फ़ लफ़्फ़ाज़ी से इन रोज़ों नहीं मिलने की भीख ॥२॥

❀ ❀ ❀ ❀

१४. तिफ़्ल में बू आये क्या मां बाप के अतवार की।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की ॥

❀ ❀ ❀ ❀

१५. मेरे सय्याद की तालीम की है धूम गुलशन में।
यहां जो आज फँसता है वो कल सय्याद होता है ॥

❀ ❀ ❀ ❀

१६. हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यों कर।
ये बहस अच्छी है इस से हज़रते आदम बने क्यों कर ॥

❀ ❀ ❀ ❀

१७. नई तालीम को क्या वास्ता है आदमियत से।
जनाबे डारविन को हज़रते आदम से क्या मतलब ?

❀ ❀ ❀ ❀

१८. नई तहजीब में भी मज़हबी तालीम शामिल है।
मगर यों ही कि गोया आबे ज़मज़म मय में दाख़िल है ॥

शब्दार्थ—आबे ज़मज़म-ज़मज़म का पानी. ज़मज़म-गंगा के समान मुसलमानों की एक पवित्र नदी है, मय-शराब।

❀ ❀ ❀ ❀

२. बे परदा नज़र आईं जो कल चन्द बीबियां ।
'अकबर' ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गढ़ गया ॥१॥
पूछा जब उन से आपका परदा कहां गया ।
कहने लगीं कि अक़्ल पै मरदों की पड़ गया ॥२॥

३. परदा उठ जाने से इख़लाक़ी तरक़्क़ी क़ौम की ।
जो समझते हैं यक़ीनन अक़्ल से फ़ारिग़ हैं वो ॥१॥
सुन चुका हूं मैं कि कुछ बूढ़े भी हैं इसमें शरीक ।
ये अगर सच है तो बेशक पीरे नाबालिग़ हैं वो ॥२॥

४. परदे में ज़रूर है तवालत बेहद ।
इन्साफ़ पसन्द को नहीं चाहिये हट ॥१॥
तशबीह बुरी नहीं अगर मैं ये कहूं ।
बेगम है पेचवान लेडी सिगरट ॥२॥

५. ये परदा-दर को सुवे क़ौम किसने भेजा है ।
कि जिस की बहस से मजरूह हर कलेजा है ॥१॥
यही है उक़दे कशाइये क़ौम तो एक दिन ।
इज़ारबन्द को कह देंगे हक्से बेजा है ॥२॥

६. उठ गया परदा तो अकबर का बढ़ा कौन सा हक़ ।
बे पुकारे मेरे घर में चला आता है ॥१॥
बे हिजाबी मेरी हमसाये की ख़ातिर से नहीं ।
सिर्फ़ हुक्काम से मिलने में मज़ा आता है ॥२॥

स्त्री-शिक्षा।

१६. तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर।
खातूने खाना हों वे सभा की परी न हों।
ज़ी इल्मो मुत्तक़ी हों जो हों उनके मुन्तज़िम,
उस्ताद अच्छे हों मगर उस्ताद जी न हों ॥२॥

शब्दार्थ—खातूने खाना-घर की देवियां. ज़ी इल्म-विद्वान्. मुत्तकी-परहेज़गार।

२०. कौन कहता है कि तालीमे ज़नां खूब नहीं।
एक ही बात फ़क़त कहना है यां हिकमत को ॥१॥
दो उसे शौहरो अतफ़ाल की खातिर तालीम।
क़ौम के वासते तालीम न दो औरत को ॥२॥

शब्दार्थ—तालीमे जनां-स्त्रियों की शिक्षा. शौहर-पति. अतफ़ाल-बच्चे।

२१ तालीमे दुख़्तरां से ये उम्मीद है ज़रूर।
नाचे दुल्हन खुशी से खुद अपनी बरात में ॥

२२. उन से बीवी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की।
ये न बतलाया कहां रक्खी है रोटी रात की ॥

२३. तालीम की ख़राबी से हो गई बिल आख़िर।
शौहर पसन्द बीवी पब्लिक पसन्द लेडी ॥

२४. बीवी में तरज़े मग़रिबी हो तो कहो।
अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो ॥

७—राज-नीति

तथा

हिन्दू-मुस्लिम एकता।

राज-नीति।

१. मुल्क पर तासीरे चश्मे वोट तारी हो गई।
मुफ़्त शेखो बिरहमन में फ़ौजदारी हो गई॥१॥

हिन्दुवों को क्यूं न अब भाई बनायें सुलह दोस्त।
आर्य मज़हब में भी तौहीद जारी हो गई॥२॥

मेम्बरी पर जङ्ग हो इसमें गऊ का क्या क़सूर।
मुल्क में बदनाम नाहक़ ये बिचारी हो गई॥३॥

शब्दार्थ-तौहीद-एक ईश्वर को मानना।

२. अज़ राहे ताल्लुक जोड़ा करे कोई रिश्ता।
अंग्रेज़ तो 'नेटिव' के चचा हो नहीं सकते ॥१॥
'नेटिव' नहीं हो सकते गोरे तो. है क्या ग़म।
गोरे भी तो बन्दे से ख़ुदा हो नहीं सकते ॥२॥
हम हों जो कलक्टर तो वो हो जायें कमिश्नर।
हम उन से कभी ओहदेवरा हो नहीं सकते ॥३॥

शब्दार्थ-ओहदे वरा होना-ओहदे में बढ़ना।

३. अञ्जन आया निकल गया ज़न से।
सुन लिया नाम आग पानी का ॥१॥
बात इतनी और उस पै ये तूमार।
ग़ुल है यूरुप पै जांफ़िशानी का ॥२॥
इल्म पूरा हमें सिखायें अगर।
तब करें शुक्र मेहरबानी का ॥३॥

शब्दार्थ-जा फिशानी-परिश्रम।

४. क्यों अपने सर पर ज़हमते वेसूद लीजिये।
कौन्सिल के बदले घर में उछल कूद लीजिये ॥१॥
खा पी के घर में वैठिये और गाइये भजन।
काशी से जल प्रयाग से अमरूद लीजिये ॥२॥
हो वज़अ अपने देस की माल अपने देस का।
बेहतर है राहे मञ्ज़िले बहबूद लीजिये ॥३॥

शब्दार्थ-ज़हमत-कष्ट, वेसूद-व्यर्थ, बहबूद-आराम।

५. क़ौम पर पैग़म्बरी का फ़ेर हुवा।
कल जो अपना था वो ग़ैर हुवा ॥१॥
शेख़ जी मर गये कमैटी में।
ग़ुल मचा ख़ातमा बख़ैर हुवा ॥२॥

६. हमदर्द हों सब ये लुत्फ़े आबादी है।
हमसाया भी हो शरीक तब शादी है ॥१॥
तसकीन है जब कि ख़ुदा पर हो तकिया।
क़ानून बना सकें तब आज़ादी है ॥२॥

शब्दार्थ—तसकीन-शान्ति. तकिया-सहारा।

७. मुल्क में मुझको ज़लीलो ख़्वार रहने दीजिये।
आप अपनी इज़्ज़तो दरबार रहने दीजिये ॥१॥
ज़ालिमाना मशवरों में मैं नहीं हूंगा शरीक।
ग़ैर ही को महरमे इसरार रहने दीजिये ॥२॥

शब्दार्थ-महरमे इसरार-भेद की बात जानने वाला।

८. रिज़ोल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर ग़ायब।
प्लेटों की सदा सुनता हूं और खाना नहीं आता ॥

शब्दार्थ—रिजोल्यूशन-प्रस्ताव. शोरिश-धूम. प्लेट-रकाबी।

९. रिआया को मुनासिब है कि बाहम दोस्ती रक्खें।
हिमाक़त हाकिमों से है तवक़्क़ो गर्म जोशी की ॥

शब्दार्थ—हिमाक़त-मूर्खता. तवक्क़ो-आशा।

१३. उन्ही की भैंस है भाई कि जिन की लाठी है।
उन्हीं का गांव है अकबर जो बन सके ठाकुर ॥

११. ज़ोरे बाज़ू न हो तो क्या स्पीच।
हाथ भी दे ख़ुदा ज़बां के साथ ॥

१२ हमें तो चाहते हैं खींचना ख़ुद हम से खिचते हैं।
ये उनकी पालिसी के बाग़ किस पानी से सिंचते हैं ॥

हिन्दु-मुस्लिम एकता।

१. अमूरे मुल्की की बहस में तुम,
जो हिन्दुवों के बनोगे साथी।
न लाट साहब ख़िताब देंगे,
न राजा जी से मिलेगा हाथी ॥१॥

न अपना मक्खन वो तुमको देंगे,
न अपनी पूरी वो बांट देंगे।
पड़ेगा मौक़ा जो कोई आकर,
तो दोनों ही तुमको छांट देंगे ॥२॥

मगर वो रहते हैं दूर तुम से,
ये लोग साथी हैं और पड़ोसी।
मिले जुले हैं सोसायटी में,
अहीर इनमें तो हम में घोसी ॥३॥

न होगी हुक्काम को भी दिक्कत,
जो होगी एक जा हर एक की ख़्वाहिश।
ज़रूरत उनको भी ये न होगी,
करें हर एक से अलहदा पुरसिश ॥४॥

❀ ❀ ❀ ❀

१४. हम उर्दू को अरबी क्यूं न करें,
उर्दू को वो भाषा क्यूं न करें।
झगड़े के लिये अख़बारों में,
मज़मून तराशा क्यूं न करें ॥१॥

आपस में अदावत कुछ भी नहीं,
लेकिन एक अखाड़ा क़ायम है।
जब इस से फ़लक का दिल बहले,
हम लोग तमाशा क्यूं न करें ॥२॥

❀ ❀ ❀ ❀

१५. चुग़लियां एक दूसरे की वक़् पै जड़ते भी हैं।
नागहां गुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी हैं ॥१॥

हिन्दू वो मुसलिम हैं फिर एक और कहते हैं सच।
है नज़र आपस की हम मिलते भी हैं लड़ते भी हैं ॥२॥

❀ ❀ ❀ ❀

१६ हिन्दू मुसलिम एक हैं दोनों।
यानी ये दोनों एशियाई हैं ॥१॥

हम वतन हम ज़ुबां वो हम क़िस्मत।
क्यूं न कहदूं कि भाई भाई हैं ॥२॥

❀ ❀ ❀ ❀

१७. वाज़ मुसलिम तो ऐसे हैं मौजूद।
मुंह जो लहमे बक़र से मोडते हैं ॥१॥
फ़ौजी गोरे मगर रुकें क्यूंकर।
जान धुल कब गऊ को छोड़ते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—लहमे बक़र-गाय का गोश्त।

१८. बेहतर यही है फेर लें आंखों को गाय से।
क्या फ़ायदा है रोज़ की इस हाय हाय से ॥१॥
कमज़ोरियों को रोकदें ज़ोरों को क्या करें।
मुसलिम हटे तो फ़ौज़ के गोरों को क्या करें ॥२॥

१९. झगड़ा कभी गाय का ज़बां की कभी बहस।
है सख़्त मुज़िर ये नुसख़ये गावज़बां ॥

शब्दार्थ–गावजबा-गाय और भाषा। (एक यूनानी दवा का नाम भी गावजबां है)

२०. मेरी नजरों में यकसां हैं शुतर हों या गऊ माता।
मुझे करते जो वो मदऊ कथा में मैं भी झूम आता ॥

२१ खुदा ही की इबादत जिन को हो मक़सूद अय अकबर।
वो क्यूं बाहम लड़ें गो फ़र्क़ हो तरज़े इबादत में ॥

२२. ऊँट ने गायों की ज़िद पर शेर को साझी किया।
फिर तो मैंढक से भी बदतर सब ने पाया ऊँट को ॥१॥
जिस पे रक्खा चाहते हो बाक़ी अपनी दस्तरस।
मुंह में हाथी के कभी भाई वो गन्ना न दो ॥२॥

८—विभिन्न ।

१. चला जाता था एक नन्हा सा कीड़ा रात काग़ज़ पर ।
बिला क़स्दे ज़रर उसको हटाया मैंने उंगली से ॥१॥
मगर ऐसा वो नाज़ुक था कि फ़ौरन पिस गया बिल्कुल ।
निहायत ही ख़फ़ीफ़ एक दाग़ काग़ज़ पर रहा उसका ॥२॥
अभी वो रोशनी में शमअ की काग़ज़ पै फिरता था ।
अभी यूं मिट गया जंबिशे अन्गुश्ते इन्सां से ॥३॥
लिया मेरे सिवा नोटिस ही किसने उसका दुनियां में ।
न थी फ़ितरत की क्या कारीगरी उसके बनाने में ॥४॥
नसबनामा भी उसका आलमे ज़र्रात में होगा ।
यही थी उसकी हस्ती और उसमें उसकी मस्ती थी ॥५॥
न मातम करने वाला है न लाइफ़ लिखने वाला है ।
यो धब्बा दर्स इबरत दे रहा है मुझको अकबर ॥६॥

मआज़ अल्लाह क्या समझा है तूने अपनी वक़अत को।
तुझे भी सफ़्हे रुवे ज़मीं से एक दिन आख़िर ॥७॥

मिटा देगी कोई तहरीक फ़ितरते हुक्मे बारी से।
अजब हैरत से मैं हूं देखता इस दाग़े काग़ज को ॥८॥

मेरी नज़रों में तो नक़्शा ये है दुनियाये फ़ानी का।
सरीहन जिस्म था एक जान थी अहसास था उसमें ॥९॥

और अब धब्बा सा है क्या जाने कोई कैसा धब्बा है।
अजब क्या है जो समझे कोई पेन्सिल की लकीर इस को ॥१०॥

मआज़ अल्लाह मआज़ अल्लाह सन्नाटे का आलम है।
बहुत जी चाहता है रोऊं इस हस्ती के धब्बे पर ॥११॥

ये हैं बरसात के दिन तीसरी भादों गुज़रती है।
मैं अपना ग़म ग़लत करता हूं कुछ अशआर लिखने से ॥१२॥

शब्दार्थ—क़स्दे ज़रर-नुक़सान पहुँचाने का इरादा. ख़फ़ीफ़-छोटा.
जुम्बिशे अंगुश्ते इन्सा-आदमी की उँगली की हरकत.
फ़ितरत-प्रकृति. नसबनामा-वंशावलि. ज़रात-कथा.
हस्ति-अस्तित्व. लाइफ़-जीवन-चरित्र. दर्स-शिक्षा.
मआज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण. सरीहन-साफ़ तौर से.
अहसास-अनुभव करने की शक्ति।

❀ ❀ ❀ ❀

२ मेरी चश्म क्यूं न हो ख़ूं फ़शां न रही वो बज़्म न वो समा।
न वो तर्ज़े गर्दिशे चर्ख़ है न वो रङ्गे लैलो निहार है ॥१॥

जहां कल था ग़ुलग़ुलये तर्ब वहां हाय आज है ये ग़ज़ब।
कहीं एक मकां है गिरा हुवा कहीं एक शकिस्ता मज़ार है ॥२॥

ग़मो यासो हसरतो बेकसी की हवा कुछ ऐसी है चल रही।
न दिलों में अब वो उमङ्ग है न तबियतों में उभार है ॥३॥

हुवे मुझ पे जो सितमे फ़लक कहूं किससे उसको कहा तलक।
न मुसीबतों की है कोई हद न मेरे ग़मों का शुमार है ॥४॥

मेरा सीना दाग़ों से है भरा मेरे दिल को देखिये तो ज़रा।
ये शहीदे इश्क़ की है लहद पड़ा जिस पै फूलों का हार है ॥५

मैं समझ गया वो हैं बे वफ़ा मगर उनकी राह में हू फ़िदा।
मुझे ख़ाक में वो मिला चुके मगर अब भी दिल में ग़ुबार है ॥

शब्दार्थ—खूफशा-लोहू से भरी हुई. बज्म-सभा. चर्ख-आकाश.
लैलो निहार-रात दिन. गुलगुलये तर्बे-खुशी का शोर.
शकिस्ता-जीर्ण, मजार-क़ब्र, यास-निराशा.
शहीदे इश्क-प्रेम के मार्ग में जान खोने वाला.
लहद-क़ब्र।

२. बन पड़े तो क़िबला ही बनना मुनासिब है तुझे।
खिदमतों में वो फँसा जो स्कायर हो गया ॥१॥

दीदनी है ये तमाशाये मशीने इन्क़लाब।
बाप तो क़िबला थे बेटा स्कवायर हो गया ॥२॥

तख़लिये में आज मैंने उनका बोसा ले लिया।
देखिये डिगरी जो हो दावा तो दायर हो गया ॥३॥

अब तो मुझको भी मुनासिब है कि पटवारी बनूं।
यार को शौक़े हिसाबे मालो सायिर हो गया ॥४॥

फ़िक्रे दुनिया ने भुलाया सब क़ुरानो हदीस।
मौलवी भी महवे क़ानूनो नज़ायर हो गया ॥५॥

शब्दार्थ-किबला-प्राचीन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित.
स्कवायर-नूतन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित.
दीदनी-दर्शनीय. इन्क़लाब-परिवर्तन. तखलिया-एकान्त
हदीस-मुसलमानों की धार्मिक पुस्तक। नजायर-मुक़दमों
के दृष्टान्त।

४. अकबर न थमा बुत खाने में,
ज़हमत भी हुई और ज़र भी गया।
कुछ नामे खुदा से उन्स भी था,
कुछ ज़ुल्मे बुतां से डर भी गया ॥१॥
परवाने का हाल इस महफ़िल में,
है क़ाबिले रश्क अय अहले नज़र।
एक शब ही में पैदा भी हुआ,
आशिक़ भी हुआ और मर भी गया ॥२॥
काबे से जो बुत निकले तो क्या,
काबा ही गया जब दिल से निकल।
अफ़सोस कि बुत भी हम से छुटे,
क़ब्ज़े से खुदा का घर भी गया ॥३॥
क्या गुज़री जो एक परदे के अदू,
रो रो के पुलिस से कहते थे।
इज़्ज़त भी गई दौलत भी गई,
बीबी भी गई ज़ेवर भी गया ॥४॥
अकबर के जो मर जाने की ख़बर,
साक़ी ने सुनी तो ख़ूब कहा।
मरना तो ज़रूरी था ही उसे,
रिन्दों के लिये कुछ कर भी गया ॥५॥

शब्दार्थ—ज़हमत-कष्ट. उन्स-प्रेम. अदू-दुश्मन।

५. सखुनशनास से मैं चाहता हूं दादे सखुन।
खुशी के वास्ते काफ़ी है मुझको वाह फ़क़त ॥१॥
सोसायटी नहीं मिलती कि जिससे दिल बहले।
जो कोई मूनिसो हमदम है अब तो आह फ़क़त ॥२॥

शब्दार्थ—सखुन शनास-काव्य मर्मज्ञ. दादे सखुन-काव्य की प्रशंसा.
मूनिस-आराम देने वाला।

६. शर्फ़ है जुब्बये वैरिस्ट्री से जिनको यहां।
मुक़द्मों ही की वे देखते हैं राह फ़क़त ॥३॥
बयाज़े शेर से मतलब नहीं किलर्कों को।
रजिस्ट्रों ही को करते हैं वे स्याह फ़क़त ॥४॥

शब्दार्थ—शर्फ़-मान, जुब्बये बेरिस्ट्री-बेरिस्ट्रों की पौशाक. बयाजे शेर-लिखने की कापी।

७. गुज़र की जब न हो सूरत गुज़र जाना ही बहतर है।
हुई जब ज़िन्दगी दुश्वार मर जाना ही बहतर है ॥१॥
रहे इस्लाह में गो तेज़गामी खूब है लेकिन।
क़दम को नाज़िशें जब हों ठहर जाना ही बहतर है ॥२॥
मवाक़े देख कर इज़हारे मरदी चाहिये अय दिल।
डरायें खेल में बच्चे तो डर जाना ही बहतर है ॥३॥
बिठाया है बुतों ने बज़्म में जब अपना ही सिक्का।
जो हैं अल्लाह वाले उनको उठ जाना ही बहतर है ॥४॥
बुलाता है मुझे बुतख़ाने से शेख़े हरम अकबर।
न जाना गोकि जा है मगर जाना ही बहतर है ॥५॥

शब्दार्थ—इस्लाह-सुधार. तेजगामी-तेज चाल. नाज़िशें-ठोकरें. मवाके-अवसर. जायज-ठीक।

८. ज़बाने संस्कृत इस वक़्त पण्डित जी से कहती है।
कि अच्छा है मेरी उल्फ़त तुम्हारे दिल में रहती है ॥१॥
मैं ख़ुश हूंगी बिलाशक तुम अगर मुझको जिलावोगे।
मगर व्हिसकी पिलावोगे कि गङ्गा जल पिलावोगे ॥२॥

जिऊंगी मैं कि फिर तुमको मिलाऊँ देवताओं से।
भिड़ावोगे मुझी को या कि दुनिया की बलाओं से ॥३॥
अगर शौक़े इबादत है तो मैं मौजूद हूं अब भी।
अगर दुनिया का सौदा है तो कब मैं इससे राज़ी थी ॥४॥

शब्दार्थ–इबादत-पूजना।

९. ज़न ज़मीं ज़र तो है फ़साद का घर।
लेकिन इतना कहूँगा अय अकबर ॥१॥
ज़न मनकूहा वो शरीफ़ो ग़रीब।
क्या अजब है जो करे अमन नसीब ॥२॥
हो जो बस आमदे ज़रे तनख़्वाह।
तो नहीं हाजिते वकीलो गवाह ॥३॥
हो जो थोड़ी सी बाग़ ही की ज़मीं।
तो कलक्टर का डर ज़ियादह नहीं ॥४॥

शब्दार्थ—ज़न-स्त्री, ज़मीं-भूमि, ज़र-द्रव्य,
फ़साद-झगड़ा, मनकूहा-विवाहिता।

१०. निगरानिये मराहिल कभी ऐसी तो न थी,
तुन्द मौज लबे साहिल कभी ऐसी तो न थी।
बदगुमानी तेरी क़ातिल कभी ऐसी तो न थी,
बात करनी मुझे मुशकिल कभी ऐसी तो न थी ॥
जैसी अब है तेरी महफ़िल कभी ऐसी तो न थी ॥१॥
करती है ख़ल्क़ को लैलाये लिबर्टी* मफ़तूं,
हिन्द के दिल को लुभा लेना है मिल॥ का ये फ़सूं।

* Liberty. ॥ Stuart Mill.

लाजपत भी हुवे शायद कि असीरो महजूं,
पाय कोबां कोई ज़िन्दां में नया है मजनूं ॥
आती आवाज़े सलासिल कभी ऐसी तो न थी ॥२॥

पेशतर इस से तवायअ के न थे ये पहलू,
कहीं स्नान की लहर कहीं मौजे वज़ू ।
अय मिसे सीमतन माहे जबीं वो गुलरू,
तेरी आंखों ने खुदा जाने क्या किया जादू ॥
कि तबियत मेरी मायल कभी ऐसी तो न थी ॥३॥

शब्दार्थ—निगरानी-देख रेख. मराहिल-मरहला (मञ्जिल) का बहु वचन. लबे सहिल-किनारे पर. खल्क़-संसार. लिबर्टी-स्वाधीनता. मफ़तू-मोहित. मिल-लिबर्टी आदि पुस्तकों के रचयिता इंगलैण्ड के प्रसिद्ध दार्शनिक स्टुअर्ट मिल. फसूँ-जादू. पाय कोबां-पांव पीटने वाला. सलासिल-जञ्जीर ।

११. गये बिरहमन के पास लेकर,
अपने झगड़े को शीया सुननी ।
बिगड़ के बोला कि जावो भागो,
मलेक्ष तुम भी मलेक्ष वो भी ॥१॥

बढ़ी जो तकरार तो वो लेकर,
उन्हें फ़िरङ्गी के पास पहुँचा ।
वो बोला बस दूर हो यहां से,
कि तुम भी नेटिव हो वो भी नेटिव ॥२॥

फ़लक ने आखिर हरेक की सुन कर,
कहा कि तुम सब हो मस्ते ग़फ़लत ।
समझलो इस को कि तुम भी फ़ानी हो,
वो भी फ़ानी है ये भी फ़ानी ॥३॥

१२. कालिज में हो चुका जब इम्तहां हमारा।
सीखा ज़बां ने कहना हिन्दोस्तां हमारा ॥१॥
रक़बे को कम समझ कर अकबर ये बोल उट्ठे।
हिन्दोस्तान कैसा सारा जहां हमारा ॥२॥
लेकिन ये सब ग़लत है कहना यही है लाज़िम।
जो कुछ है सब ख़ुदा का वहमो गुमां हमारा ॥३॥

१३. गुल फेंके है यूरुप की तरफ़ बल्कि समर भी।
अय नेचरो साइन्स भला कुछ तो इधर भी ॥१॥
अग़यार तो दुनिया हैं उठाये हुवे सर पर।
हम बैठे हैं इस तरह कि उठता नहीं सर भी ॥२॥
अग़यार तो रग रग से हमारी हुवे वाक़िफ़।
हम वो हैं कि पाते नहीं उस बुत की कमर भी ॥३॥

१४. सोचो कि आगे चल कर क़िस्मत में क्या लिखा है।
देखो घरों में क्या था और आज क्या रहा है ॥१॥
हुशियार रहके पढ़ना इस जाल में न पड़ना।
यूरुप ने ये किया है यूरुप ने वो किया है ॥२॥

१५. आनरो* दौलत में ख़ुद वाइज़ है ग़र्क़।
दूसरों पर नुकते चीनी की तो क्या ॥३॥
बज़्मे साक़ी की कहां वो मस्तियां।
छुप के अकबर ने अगर पी भी तो क्या ॥४॥

शब्दार्थ—आनर-मान, वाइज़-धर्मोपदेशक, ग़र्क़-डूबा हुआ,
नुकते चीनी-दोषान्वेषण।

* Honour.

१६. ग़लत फ़हमी है आलमे अलफ़ाज़ में अकबर।
बड़ी मायूसियों के साथ अक्सर काम चलता है॥
ये रोशन है कि परवाना है उसका आशिक़े सादिक़।
मगर कहते हैं ख़लक़त शमअ से परवाना जलता है॥

१७. जो हमको बुरा कहते हैं माजूर हैं अकबर।
हक़ ये है हम भी उन्हें अच्छा नहीं कहते॥१॥
हम हज़रते ईसा का अदब करते हैं बेहद।
लेकिन उन्हे अल्लाह का बेटा नहीं कहते॥२॥
शब्दार्थ-माजूर-मजबूर। हक़-वास्तविकता।

१८. या इमीटेशन* के सदक़े चाय, दूध और खांड ले।
या एजीटेशन|| के बदले तू चला जा मांडले॥१॥
या क़नाअत और ताअत में बसर कर ज़िन्दगी।
रिज़्क़ की किश्ती को खे पतवार ले और डांड ले॥२॥

१९. बुते सितमगर की कुछ न पूंछो,
हसीन भी है ज़हीन भी है।
नहीं है दिल ही पे सिर्फ़ आफ़त,
यहां तो ख़तरे में दीन भी है॥१॥
हमारे झगड़ों की कुछ न पूंछो,
तमाम दुनिया है और हम हैं।
कि जेब में ज़र है घर में ज़न है,
ख़िराज पर कुछ ज़मीन भी है॥२॥
शब्दार्थ—ज़र—रुपया। ज़न—स्त्री।

—*Imitation. ||Agitation.

२०. जिन्दगी को ज़रूर है एक शग़्ल।
ख़ैर बिलफ़ेल लीडरी ही सही ॥१॥
अब तो अकबर बसा है गङ्गा तीर।
न हो स्नान दिल्लगी ही सही ॥२॥

२१. मेरे तरज़े फ़ुग़ां की बुलहविस तक़लीद करते हैं।
ख़िजल होंगे असर की भी अगर उम्मीद करते हैं ॥१॥
जहां के इनक़लाबों के भी क्या क्या रङ्ग होते हैं।
बशर की क्या हक़ीक़त है फ़रिश्ते दङ्ग होते हैं ॥२॥

शब्दार्थ-तरजे फ़ुगा-रोने चिल्लाने का ढग. तकलीद-अनुगमन.
खिजल-लज्जित. इनक़लाब-परिवर्तन. बशर-मनुष्य।

२२. तआल्ली की नहीं लेते हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं।
मगर हम जितने हैं बेज़ार दुनिया से कम ऐसे हैं ॥१॥
मेरी हर वक़् की अफ़सुर्दगी है बार यारों पर।
मगर मैं क्या करूं इसको ख़ुदा शाहिद ग़म ऐसे हैं ॥२॥

शब्दार्थ—तआल्ली की लेना-बढा कर बात कहना.
बेज़ार-नाराज. अफसुर्दगी-आकुलता.
बार-बोझ. शाहिद-गवाह।

२३. यूरुप वाले जो चाहें दिल में भरदें।
जिसके सिर पर जो चाहें तोहमत धरदें ॥१॥
बचते रहो इनकी तेज़ियों से अकबर।
तुम क्या हो ख़ुदा के तीन टुकड़े करदें ॥२॥

२४ अगरचे आशिक़ बुतों का हूं मैं,
नजर खुदा से फिरी नहीं है।
जो आंख रखते हैं जानते हैं,
कि आशिक़ी काफ़िरी नहीं है ॥१॥
जमाले दिलकश का महू होना,
नहीं है हरगिज़ ख़िलाफ़े ताअत।
खुदा की कुदरत की क़द्र करना,
सवाब है काफ़िरी नहीं है ॥२॥

शब्दार्थ—जमाले दिलकश-चित्ताकर्षक सौन्दर्य. महव-तल्लीन.
ताअत-आज्ञा. सवाब-पुण्य।

२५ लुत्फ़ चाहो एक बुते नौख़ेज़ को राज़ी करो।
नौकरी चाहो किसी अंग्रेज़ को राज़ी करो ॥१॥
लीडरी चाहो तो लफ़्ज़े क़ौम है महमा नवाज।
नप नवीसों को और अहले मेज़ को राज़ी करो ॥२॥

२६. असबाते खुदा को मन्तिकी उठ न सका।
खाके हैरत से जहन ही उठ न सका ॥१॥
अल्लाह रे नज़ाकते वजूदे बारी।
साबित होने का बार भी उठ न सका ॥२॥

शब्दार्थ—असबाते खुदा-ईश्वर का अस्तित्व. मन्तिकी-तार्किक.
हैरत-आश्चर्य. वजूदे बारी-ईश्वर का अस्तित्व. बार-बोझ.

२७ अपनी हस्ती जो हिजाबे रुख़े जानां न रहे।
वां रहें हम कि जहां फिर कोई अरमां न रहे ॥१॥

सूरते यार जो सौ परदों में पिन्हां न रहे।
बहस फिर तुझ में ये अय गबरो मुसल्मां न रहे ॥२॥

***

२८. ज़माने हाल में अगले फ़साने अमरे माज़ी हैं।
जो तलवारें चलाते थे वो अब ठोकर पै राज़ी हैं ॥१॥

शराब उड़ती है पब्लिक में रवा है खून तक़वे का।
मज़ा है अब तो रिन्दों का न मुफ़्ती हैं न क़ाज़ी हैं ॥२॥

***

२९ हर शाख़ पे चन्द आंखे निगरां,
हर मोड़ पै एक लैसन्स तलब।
उस पार्क मे आखिर अय अकबर,
मैंने तो टहलना छोड़ दिया ॥१॥

उस हूरे लक़ा को घर लाये हो,
तुम को मुबारिक अय अकबर।
लेकिन ये क़यामत की तुम ने,
घर से जो निकलना छोड दिया ॥२॥

***

३०. अल्लाह रे इन्क़लाबे तर्ज़े मज़ाक़े मशरिक़।
हाफिज़ के शेर कैसे सब पढ़ रहे हैं रीडर* ॥१॥
लैली का नाज़ रुख़सत स्कूल मिस्टरस◇ हैं।
सौदाये क़ैस ग़ायब अब वो बने हैं लीडर⁕ ॥२॥

शब्दार्थ—इन्क़लाब-परिवर्तन सौदाये क़ैस-मजनूं का पागलपन.

***

३१ वो शरारत से मेरे घर सरे शाम आते हैं।
ये दिखाना है कि ग़ैरों के पयाम आते हैं ॥१॥

---

* Reader. ◇ School Mistress. ⁕ Leader.

वाज़ कालिज मे जो कह आते हैं अक्सर अकबर।
क्या ये गिरती हुई दीवार को थाम आते हैं ॥३१॥

३२. क़दम अंग्रेज़ कलकत्ते से दिल्ली में जो धरते हैं।
तिजारत लूच की अब देखें शाही कैसी करते हैं॥

३३ ताकीदे इबादत पै अब ये कहते हैं लड़के।
पीरो मे भी अकबर की ज़राफ़त नहीं जाती॥
शब्दार्थ—पीरी-बुढापा जराफत-हास्य।

३४. हरीफ़ों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अक़बर ज़िक्र करता है ख़ुदा का इस ज़माने में॥
शब्दार्थ-हरीफ-दुश्मन।

३५. दिल ही बाक़ी नहीं अय दोस्त मज़ामी कैसे।
आप मोती के तलबगार हैं दरया भी तो हो॥

३६. आशिक़ की तबअ लाखो ही मौजों में है रवां।
अल्फ़ाज़ कर न सकेंगे उनका मुहासरा॥
शब्दार्थ—रवा-बहती हुई. मुहासरा-घेरा।

३७ इन बुतो के बाब में इतनी ही मेरी अर्ज़ है।
कुफ़्र है इन की परस्तिश प्यार करना फ़र्ज़ है॥

३८. कब मै कहता हूं अलग हो सारा क़िस्सा छोड़ कर.
कर तलब दुनिया मगर साहब का हिस्सा छोड़ कर॥
शब्दार्थ—तलब-याचना।

३६. फ़िरङ्गी से कहा पेन्शन भी लेकर बस यहीं रहिये।
कहा कि जीने को आये हैं यहां मरने नहीं आये॥

४०. फ़ुरकते यार में जीने का सहारा क्या था।
ख़ूब थी मौत सिवा मौत के चारा क्या था॥

४१ जहां सुई घड़ी की होती थी वक्त़ उसको कहते थे।
गई चोरी तो हम समझे ज़माना इसको कहते हैं॥

४२. कभी लरज़ता हूं कुफ़्र से मैं कभी हूं क़ुरबान भोलेपन पर।
ख़ुदा के देता हूं वासते जब तो पूंछता है वो बुत ख़ुदा क्या॥

४३. मैंने कहा कि अपना समझिये मुझे ग़ुलाम।
बोला वो बुत ये हंसके फिरङ्गी नहीं हूं मैं॥

४४. गोशये मसजिद में कारे शेख अब बनता नहीं।
पेट गो तिस्कीन पाजाय मगर तनता नहीं॥

शब्दार्थ-गोशा-कोना, कार-काम, तिस्कीन-तसल्ली।

४५ सनद कैसी जमाल उनमे अगर है होगा ख़ुद ज़ाहिर।
कोई सर्टीफ़िकेट से ख़ूबसूरत हो नहीं सकता॥

शब्दार्थ-जमाल-सौन्दर्य।

४६. बुतों के नाज़ पर इस अहद में लाज़िम है ख़ामोशी।
बुरा कहते हैं हम उनको तो दस अच्छा भी कहते हैं॥

४७ खुला दीवां मेरा तो शोरे तहसीं बज़्म में उट्ठा।
मगर सब हो गये ख़ामोश जब मतबे का बिल आया॥

४८ हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं।
कि जिनको पढ़के लड़के बाप को ख़ब्ती समझते हैं॥

४६. दाद दे रफ़्तार की सुस्ती पै क्या है मोतरिज़।
आबला है पांव में और आबले में ज़ख़्म है॥

शब्दार्थ—मोतरिज-आक्षेप करने वाला।

५०. तुम से उस्तादों में मेरी शाइरी बेकार है।
साथ सारङ्गी का बुलबुल के लिये दुशवार है॥

५१. ग़रीब अकबर के गिर्द क्यूं हैं जनाबे वाइज़ से कोई कहदे।
उसे डराते हो मौत से क्या वो ज़िन्दगी ही से डर चुका है

शब्दार्थ—वाइज-उपदेशक।

५२. ये परचा जिसमें चन्द अशआर हैं इरसाले ख़िदमत है।
हमारे लख़्ते दिल हैं आपका माले तिजारत है॥

शब्दार्थ—लख्ते दिल-दिल के टुकड़े।

५३ बने बन्दर से हम इन्सां तरक़्क़ी इसको कहते हैं।
तरक़्क़ी पर भी नेटिव बदनसीबी इसको कहते हैं॥

५४. दावत भी बहुत ख़ूब है अहबाब की ख़ातिर।
लेकिन जो 'एडीटर' हो तो मज़मून है अच्छा॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण.

५५ मवर्रिख़ और सूफ़ी में यही है फ़र्क़ अय अकबर ।
कि वो मसरूफ़े माज़ी है और इसको हाल आता है ॥

शब्दार्थ-मवर्रिख़-इतिहास लेखक. माज़ी-भूत. हाल-वर्तमान.

ॐ ॐ ॐ ॐ

५६ गुनाहों से न बाज़ आयगी और बराती से भागेगी ।
जहन्नुम से सवा ताऊन से ये क़ौम डरती है ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

५७ वो कभी मुझको जतावे नामा लिखना ही नहीं ।
जब गिला करता हूं कह देता है पहुंचा ही नहीं ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

५८ उनके हुस्न अपना अक़्ल पे नज़र करते हैं ।
गो खुशामद है बुरी चीज़ मगर करते हैं ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

५९ जलवये रफ़्तारे जानां है नमूना हश्र का ।
हक़ बजानिब है जो है ज़ाहिद को धड़का हश्र का ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

६०. किस्मत का नाम लेकर अब भी गिला है जायज़ ।
लेकिन उसी को बी० ए०, एम० ए० जो हो चुका हो ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

६१. ये न पूछो मुझ से वे क्यों है और ऐसा क्यों नहीं ।
शेख़ ये सोचो तुम्हारे पास पैसा क्यों नहीं ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

६२. वो मनाने में भी बनाते है ।
कहते हैं मान जाओ मनसा राम ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ

६३ मैं बहुत अच्छा हूं जी हां क़द्रदानी आपकी।
ग़ैर पर फिर क्यूं है इतनो मेहरबानी आपकी॥

६४. अगर मजहब ख़लल अन्दाज़ है मुल्की मक़ासिद में।
तो शेख़ो बिरहमन पिन्हा रहें दैरो मसाजिद में॥

शब्दार्थ—मक़ासिद-उद्देश्य, पिन्हा=छिपे हुवे, दैर-मन्दिर, मसाजिद-मसजिद का बहु वचन।

६५ हम क्या कहें अहबाब क्या कारे नुमायां कर गये।
बी० ए० हुवे नौकर हुवे पेन्शन मिली फिर मर गये॥

शब्दार्थ-कारे नुमायां-उल्लेखनीय कार्य।

६६ काफ़ी अगरचे लेटने को एक पलङ्ग है।
उंगड़ाइयों को अर्ज़े दुनिया भी तङ्ग है॥

६७. क्यूंकर न शेरे अकबर आये पसन्द सब को।
ये रङ्ग ही नया है कूचा ही दूसरा है॥

परिशिष्ट ।

गान्धी नामा ।

दौरे[1] गर्दूं[2] में नया हर रोज़ एक हंगामा[3] है ।
शाहनामा[4] हो चुका अब दौरे गान्धी नामा है ॥

बहुत से मनुष्य असहयोग के सिद्धान्त पर चलने में अपनी असमर्थता दिखाते हुवे कहते हैं :—

जाहो[5] ज़र[6] के रहे इङ्खिश से हमेशा तालिब[7] ।
अहदे[8] पीरी[9] में बदल सकते हैं क्यूंकर क़ालिब[10] ॥
मुश्तहिर[11] करदें ये 'हमदम'[12] में जनाबे 'जालिब'[13] ।
उम्र भर दिल पै रहा इश्क मिसों का ग़ालिब ॥
आखिरी वक्त में क्या खाक मुसल्मां होंगे ॥१॥

१-चक्कर. २-आकाश. ३-झगडा. ४-फारसी की प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें फ़ारस के बादशाहों का वृतान्त है. ५-ऐश्वर्य. ६-धन. ७-इच्छुक. ८-समय. ९-बुढापा. १०-शरीर. ११-प्रकाशित. १२-उर्दू का एक साप्ताहिक पत्र. १३-हमदम के सम्पादक.

कूचये[1] सरविसे[2] इङ्गलिश में रहे हम साकिन[3] ।
जाहो ज़र ही की तमन्ना में कटे ज़ीस्त[4] के दिन ॥

वाज़े[5] गान्धी से बदल सकते हैं क्यूंकर बातिन[6] ।
उम्र सारी तो कटी इश्क़े बुतां मे 'मौमिन' ॥
आखिरी वक़्त में क्या खाक मुसल्मां होंगे ॥२॥

एक महाशय कहते हैं :—

ये दाल लते[7] मङ्ग कभी गल नहीं सकती ।
कल्लू के पटाखे से बला टल नहीं सकती ॥

कतिपय सज्जन महात्मा गान्धी के इस उपदेश पर हसते हैं :—

न साहब को मारो न साहब से भागो ।
मचाते रहो गुल पिटो और मांगो ॥

कोई कवि कहता है :—

तहमद और धोती बहुत तङ्ग आई थी पतलून से ।
लेकिन अब पतलून ढीली है इसी मज़मून से ॥

१-मौहल्ला. २-नौकरी. ३-रहने वाले. ४-[illegible] ५-उपदेश. ६-हृदय. ७-तर्द।

किन्तु सम्भव ये हैं :—

अंग्रेज़ क़वी[1] भी हैं सर अफ़राज़[2] भी हैं।
तदबीरो इल्मो फ़न में मुमताज़[3] भी हैं॥
बाबू को नचा दिया जो चाबी दे कर।
इस से ये खुला कि दिल्लगीबाज़ भी हैं॥

कुछ लोग असहयोग के सिद्धान्त को व्यर्थ समझते हैं:—

चश्मे[4] शाइर में बहुत दिलकश[5] है गो वो भी मगर।
आपकी आंखों के आगे ज़िक्रे नरगिस[6] क्या करें॥
जोरे बाज़ू जब नहीं है अब नहीं तेग़ो[7] तुफ़न्ग[8]।
सर नगूँ[9] ख़ामे[10] से फिर कागज़ पै घिस घिस क्या करें॥

आपने वापिस न किया क्यों ख़िताब।
बैठे हैं गोशे में क्यों मग़मूमो[11] सुस्त॥
कहने लगे इसका असर होगा क्या।
नाज़ बरांकुन कि ख़रीदारे[12] तुस्त॥

१-बलवान. २-सुविख्यात. ३-ऊँचे दर्जे पर. ४-आंख. ५-चित्ताकर्षक. ६-एक फूल का नाम. ७-तलवार. ८-बन्दूक़. ९-नीचा कीये हुवे. १०-लेखनी ११-दुखी. १२-नख़रा उस ही पर कर जो तेरा ख़रीदार हो॥

किन्तु सम्भव ये हैं :—

अंग्रेज़ क़वी[1] भी हैं सर अफ़राज़[2] भी हैं।
तदबीरो इल्मो फ़न में मुमताज़[3] भी हैं॥
बाबू को नचा दिया जो चाबी दे कर।
इस से ये खुला कि दिल्लगीबाज़ भी हैं॥

कुछ लोग असहयोग के सिद्धान्त को व्यर्थ समझते हैं :—

चश्मे[4] शाइर में बहुत दिलकश[5] है गो वो भी मगर।
आपकी आंखों के आगे ज़िक्रे नरगिस[6] क्या करें॥
जोरे बाज़ू जब नहीं है अब नहीं तेग़ो[7] तुफ़न्ग[8]।
सर नगूँ[9] खामे[10] से फिर कागज़ पै घिस घिस क्या करें॥

आपने वापिस न किया क्यों ख़िताब।
बैठे हैं गोशे में क्यों मग़मूमो[11] सुस्त॥
कहने लगे इसका असर होगा क्या।
नाज़ बरांकुन कि खरीदारे[12] तुस्त॥

१-बलवान. २-सुविख्यात. ३-ऊँचे दर्जे पर. ४-आंख.
५-चित्ताकर्षक. ६-एक फूल का नाम. ७-तलवार.
८-बन्दूक़. ९-नीचा कीये हुवे. १०-लेखनी ११-दुखी.
१२-नखरा उस ही पर कर जो तेरा खरीदार हो॥

३—टालस्टाय की आत्म-कहानी

जगत्-प्रसिद्ध रशियन महर्षि टालस्टाय को कौन नहीं
टालस्टाय का जन्म एक उच्च घराने में हुवा था। उस
उच्च-कुलोत्पन्न नव-युवकों के समान टालस्टाय का
काल भी अनेक घृणित कामों में बीता। दुराचार, मिथ्या
लूटमार, मद्यपान, निर्दयता आदि सब ही दुष्कर्म उसने
किन्तु अन्त को उसके जीवन ने ऐसा पलटा खाया कि
और ऋषि के नाम से पुकारा जाने लगा। यदि आप
चाहते हैं कि टालस्टाय के जीवन मे ऐसा बड़ा परिवर्तन
प्रकार होगया तो आप यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। यह
टालस्टाय की "My Confession" नामक पुस्तक का
तथा सरल हिन्दी मे अनुवाद है। योरोपीय भाषाओं
पुस्तक के सैंकड़ों संस्करण निकल चुके हैं। पुस्तक के
भूमिका के अतिरिक्त टालस्टाय का चित्र और जीवन-चरि
है। पृष्ठ सख्या १२० के लगभग। मूल्य केवल ।|=)

प्रताप—यह महर्षि टल्सटाय की आत्म-कहानी है। जिज्ञासुओं
पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। महात्माओं की विचार-धारा में निमग्न
से चित्त को शान्ति मिलती है। विशेषतः हिन्दी के पाठकों को असहयोग
युग में टाल्सटाय के विचार अवश्य जानना चाहियें। पुस्तक की भाषा

ज्योति—महात्माओं के जीवन-चरित्र का पाठ सदैव लाभदायक
और फिर टाल्सटाय जैसे महात्मा का जीवन जिसने अन्धकार से
कुमार्ग से सत्मार्ग में-प्रवेश किया हो तो अवश्य ही शिक्षा-प्रद है। आर
२५ पृष्ठ में कारुणिक जी ने टाल्सटाय का जीवन-चरित्र देकर
उपयोगिता को और बढ़ा दिया है॥

३—मुग़लों के अन्तिम दिन ।

उर्दू के प्रसिद्ध लेखक मुसव्विरे फ़ित्रत श्रीयुत ख़्वाजा हसन निज़ामी के अन्तिम मुग़ल राजकुमार तथा राजकुमारियों से सम्बन्ध रखने वाले लेखों का सरल तथा सरस हिन्दी में रूपान्तर। बहादुरशाह बादशाह और उनके बीवी बच्चों की आप बीती दुःख भरी सच्ची कहानियां।

पुस्तक को पढ़ने से पाठकों को मालूम होगा कि जिन मुगल सम्राटों के सामने एक दिन सारा भारतवर्ष सर झुकाता था उन्हीं के वंशज आज पेट भर रोटी को तरसते हैं। कोई चपरासी का काम कर रहा है और कोई ठेला चला रहा है। कोई भीख मांग कर ही जिन्दगी के दिन पूरे कर रहा है। पुस्तक पढ़ते पढ़ते आंखों से आंसू निकलने लगते हैं और संसार की असारता का दृश्य आंखों के सन्मुख आ जाता है। पुस्तक ऐतिहासिक होने के साथ ही साथ मनोरञ्जकता की दृष्टि से अच्छे २ उपन्यासों को मात करती है। एक बार आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी नहीं चाहता।

पुस्तक के आरम्भ में एक सारगर्भित भूमिका है जिसमें मुग़ल साम्राज्य का संक्षिप्त इतिहास है।

पुस्तक सचित्र और बहुत अच्छे काग़ज़ पर रङ्गीन स्याही में छपी है। कुल मिला कर १६२ पृष्ठ हैं। तिस पर भी सर्व साधारण के सुभीते के लिये मूल्य लागत मात्र केवल ॥=) रक्खा गया है।

प्रथम संस्करण की थोड़ी सी प्रतियां ही शेष बची हैं। इस कारण पुस्तक मंगाने में शीघ्रता करनी चाहिये। अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।